● वर्ष-5
● अंक-214
रायपुर, शुक्रवार
24 अप्रैल 2026
● पृष्ठ-8
● मूल्य-3 रु.

।। संगछध्वम् संवदध्वम् ।।

समाचार पचीसा

राजनीति का जनपक्षकार

पेज-8› आईएएस रानू साहू के रिश्तेदारों ...

54 अफ्रीकी देशों के नेता पीएम मोदी के साथ मंथन करने दिल्ली आएंगे

■ विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर बोले- हम वैश्विक शासन को दिशा देंगे

नईदिल्ली। दुनिया एक ओर संघर्षों में उलझी हुई है लेकिन भारत वैश्विक चुनौतियों और विकासशील देशों की चिंताओं का समाधान निकालने की दिशा में बड़ी पहल करने जा रहा है। इसी कड़ी में दिल्ली में अफ्रीकी देशों के शीर्ष नेता जुटने वाले हैं, जहां चौथा भारत अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन 28 मई से 31 मई 2026 तक आयोजित होगा। इस सम्मेलन में अफ्रीकी महाद्वीप के विभिन्न देशों के राष्ट्राध्यक्ष, अफ्रीकी संघ आयोग और क्षेत्रीय संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेंगे, जिसका उद्देश्य भारत और अफ्रीका के बीच बहुआयामी साझेदारी को और मजबूत करना तथा भविष्य के सहयोग के लिए एक स्पष्ट और ठोस रूपरेखा तैयार करना है।

विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने आज नई दिल्ली में इस सम्मेलन का प्रतीक चिन्ह, विषय और वेबसाइट का अनावरण किया। इस बार सम्मेलन का विषय है %भारत अफ्रीका रणनीतिक साझेदारी नवाचार लचीलापन और समावेशी परिवर्तन%, जो इस रिश्ते की व्यापकता और गहराई को दर्शाता है। हम आपको यह भी बता दें कि सम्मेलन से पहले 28 मई को वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक और 29 मई को विदेश मंत्रियों की बैठक आयोजित की जाएगी, जिनमें दोनों पक्षों के बीच सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों पर विस्तार से चर्चा होगी।

भारत अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन एक महत्वपूर्ण मंच है, जो आपसी संवाद को मजबूत करने और परस्पर लाभकारी सहयोग को आगे बढ़ाने का अवसर देता है। यह साझेदारी समानता, परस्पर सम्मान, एकजुटता और साझा समृद्धि के सिद्धांतों पर आधारित है। पिछले सम्मेलनों के परिणामस्वरूप अफ्रीका में भारत की विकास सहायता और क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का उल्लेखनीय विस्तार हुआ है, जिसने दोनों पक्षों के संबंधों को और सुदृढ़ किया है।

रणनीतिक दृष्टि से यह सम्मेलन ऐसे समय में हो रहा है जब विश्व जटिल भू राजनीतिक चुनौतियों से गुजर रहा है। इस संदर्भ में अफ्रीका का महत्व लगातार बढ़ रहा है और भारत ने भी अपनी विदेश नीति में अफ्रीका को केंद्रीय स्थान दिया है। भारत ने अफ्रीका में अपने राजनयिक संबंधों का विस्तार किया है और आज वह अफ्रीका के प्रमुख व्यापारिक भागीदारों तथा निवेशकों में शामिल है। यह दर्शाता है कि भारत का अफ्रीका के साथ जुड़ाव दीर्घकालिक और स्थायी है।

इस साझेदारी की जड़ें ऐतिहासिक और सभ्यतागत संबंधों में निहित हैं। सदियों से सांस्कृतिक आदान प्रदान और मानवीय संपर्कों

ने इस रिश्ते को मजबूत किया है। इसके अतिरिक्त उपनिवेशवाद के विरुद्ध संघर्ष के दौरान भारत ने अफ्रीकी देशों के साथ एकजुटता दिखाई, जिससे यह संबंध और गहरा हुआ। दोनों क्षेत्रों का साझा इतिहास संघर्ष, आत्मबल और विकास की आकांक्षाओं से जुड़ा रहा है, जो आज भी इस साझेदारी को दिशा देता है।

सामरिक महत्व के दृष्टिकोण से यह सम्मेलन कई स्तरों पर महत्वपूर्ण है। एक तो यह ग्लोबल साउथ की आवाज को मजबूत करने का माध्यम है। भारत ने लगातार अफ्रीका को वैश्विक शासन व्यवस्था में उचित स्थान दिलाने का समर्थन किया है। वर्ष 2023 में जी-20 में अफ्रीकी संघ को शामिल करना इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था, जिससे वैश्विक निर्णय प्रक्रिया में अफ्रीका की भागीदारी सुनिश्चित हुई। इसके अलावा, यह सम्मेलन आर्थिक और व्यापारिक सहयोग को नई गति देगा। ऊर्जा, आधारभूत संरचना, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में साझेदारी को और विस्तार मिलने की संभावना है। भारत की तकनीकी क्षमता और अफ्रीका की संसाधन संपन्नता मिलकर दोनों के लिए विकास के नए अवसर पैदा कर सकती है। साथ ही यह सम्मेलन सुरक्षा और स्थिरता के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण है। हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद के विरुद्ध सहयोग और आपदा प्रबंधन जैसे मुद्दों पर समन्वय दोनों पक्षों के लिए आवश्यक है। इस मंच के माध्यम से इन विषयों पर साझा रणनीति विकसित की जा सकती है। इसके अलावा, यह सम्मेलन भारत के विकसित भारत 2047 के लक्ष्य और अफ्रीका के एजेंडा 2063 के बीच सामंजस्य स्थापित करने का अवसर प्रदान करता है। दोनों ही पहल सतत विकास, समावेशी वृद्धि और सामाजिक न्याय पर आधारित हैं, जिससे सहयोग के नए आयाम खुलते हैं।

आगामी शिखर सम्मेलन को एक ऐतिहासिक अवसर के रूप में देखा जा रहा है, जो भारत और अफ्रीका के बीच मित्रता और सहयोग के संबंधों को और मजबूत करेगा। यह विकासशील देशों के बीच साझेदारी का एक प्रभावी उदाहरण प्रस्तुत करेगा। साथ ही यह सम्मेलन भारत की सुशासन और समावेशी विकास की उपलब्धियों को प्रदर्शित करने का भी मंच बनेगा। समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि चौथा भारत अफ्रीका मंच शिखर सम्मेलन न केवल द्विपक्षीय संबंधों को नई ऊंचाई देगा, बल्कि बदलते वैश्विक परिदृश्य में एक संतुलित और न्यायपूर्ण विश्व व्यवस्था के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

जहां तक आज के कार्यक्रम में विदेश मंत्री के संबोधन की बात है तो आपको बता दें कि डॉ. एस जयशंकर ने कहा है कि आज भारत की विदेश नीति में अफ्रीका का अहम स्थान है और नयी दिल्ली का अफ्रीका के साथ संबंध समानता, परस्पर सम्मान और साझा प्रगति के सिद्धांतों पर आधारित एक स्पष्ट दृष्टिकोण से निर्देशित है। उन्होंने कहा, ''हम यहां भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन ढांचे के माध्यम से भारत और अफ्रीका के बीच स्थायी साझेदारी में एक नया अध्याय शुरू करने के लिए एकत्रित हुए हैं।'' विदेश मंत्री ने कहा कि भारत-अफ्रीका संबंध हमारे सभ्यतागत संबंधों पर आधारित हैं, जो सदियों से सांस्कृतिक आदान-प्रदान और लोगों के बीच संबंध के माध्यम से विकसित हुए हैं। उन्होंने कहा, ''उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष में भारत ने अफ्रीकी देशों के प्रति एकजुटता दिखाई थी और इससे हमारे संबंध और भी मजबूत हुए।''

विदेश मंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम की कहानी अफ्रीका से भी गहराई से जुड़ी हुई है। उन्होंने कहा, ''संघर्ष, एकजुटता, लचीलेपन और आकांक्षाओं का हमारा साझा इतिहास हमारी साझेदारी को आकार देता है।'' जयशंकर ने कहा कि आज अफ्रीका भारत की विदेश नीति में अहम स्थान रखता है। मंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि विकसित भारत 2047 की परिकल्पना और अफ्रीका का 'एजेंडा 2063' सतत विकास और समावेशी विकास के माध्यम से समृद्धि और प्रगति की दिशा में पूरक रोडमैप हैं। जयशंकर ने यह भी कहा कि कई उच्च स्तरीय राजनीतिक वार्ताओं के साथ भारत और अफ्रीका के बीच प्रमुख स्तंभों पर संबंध मजबूत हुए हैं, और भारत वैश्विक व्यवस्था में अफ्रीका के उचित स्थान का लगातार समर्थन कर रहा है। मंत्री ने कहा कि इस दिशा में एक 卐महत्वपूर्ण कदम卐 2023 में भारत की जी20 की अध्यक्षता के दौरान अफ्रीकी संघ को समूह में शामिल करना था। उन्होंने कहा, यह हमारे इस दृढ़ विश्वास को दर्शाता है कि आने वाले समय में वैश्विक शासन को दिशा देने में ग्लोबल साउथ की आवाज़ों का विशेष महत्व होगा।

भाजपा महिला मोर्चा ने महिला आरक्षण पर विपक्ष को घेरा

शिमला। भारतीय जनता पार्टी की महिला नेताओं ने गुरुवार को शिमला में जन आक्रोश महिला पदयात्रा निकाली। उन्होंने कहा कि यह यात्रा महिलाओं के लिए आरक्षण के समर्थन में है और इस मुद्दे पर विपक्षी पार्टियां बेनकाब हो गई हैं। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु की महिलाएं यह दिखाएंगी कि असल में उनका समर्थन कौन करता है। यह पदयात्रा चौरा मैदान में आयोजित की गई थी, जहाँ हिमाचल प्रदेश के अलग-अलग ज़िलों से बड़ी संख्या में महिलाएं इकट्ठा हुईं। उन्होंने कांग्रेस समेत विपक्षी पार्टियों के खिलाफ नारे लगाए और बैनर लहराए, और उन पर महिलाओं के लिए आरक्षण का विरोध करने का आरोप लगाया।

मीडिया से बात करते हुए, बीजेपी महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष डेज़ी ठाकुर ने कहा कि इस पदयात्रा का मकसद महिलाओं के अधिकारों को सुरक्षित करना और राजनीति में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना है। उन्होंने

कहा कि यह पदयात्रा महिलाओं के अधिकारों के लिए एक आंदोलन है। अलग-अलग ज़िलों से महिलाएं पूरे उत्साह के साथ यहाँ इकट्ठा हुई हैं। महिला आरक्षण बिल का मकसद महिलाओं को उनके वे अधिकार देना है जिनका वे लंबे समय से इंतज़ार कर रही थीं। देश भर में करोड़ों महिलाएं दशकों से इस पल का इंतज़ार कर रही हैं। ठाकुर ने आरोप लगाया कि विपक्षी पार्टियों ने राजनीतिक कारणों से बिल को लागू होने से रोकने की कोशिश की।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यह सुनिश्चित करने के लिए पूरी ईमानदारी से प्रयास किए हैं कि महिलाओं को विधायिकाओं में एक-तिहाई प्रतिनिधित्व मिले। जो लोग इसका विरोध कर रहे हैं, उन्हें आने वाले चुनावों में इसके परिणाम भुगतने पड़ेंगे। बीजेपी हिमाचल प्रदेश की महासचिव पायल वैद्य ने भी विपक्षी पार्टियों की आलोचना की और कहा कि महिला मतदाता इसका कड़ा जवाब देंगी। महिलाओं के साथ हुए अन्याय का जल्द ही जवाब दिया जाएगा। स्थानीय निकाय चुनाव चल रहे हैं, ऐसे में महिलाओं की शक्ति उन लोगों को एक स्पष्ट संदेश देगी जिन्होंने उनके अधिकार छीन लिए हैं। बीजेपी विधायक रीना कश्यप ने कहा कि यह रैली महिलाओं के अधिकारों से कथित तौर पर वंचित किए जाने के मुद्दे को उजागर करने के लिए आयोजित की गई थी। महिलाओं के अधिकारों का उल्लंघन किया गया है और उन्हें छीन लिया गया है। यह रैली उन लोगों को बेनकाब करने के लिए है जिन्होंने इस बिल का विरोध किया था। अगर महिलाओं का सम्मान नहीं किया गया, तो ऐसे नेताओं के लिए चुनावों में सफल होना मुश्किल हो जाएगा।

परिसीमन के नाटक से ध्यान भटका रही भाजपा : खरगे

■ ईंधन और उर्वरक संकट पर कांग्रेस अध्यक्ष ने केंद्र सरकार को घेरा

नईदिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भारतीय सरकार पर देश के ईंधन और उर्वरक आपूर्ति को सुरक्षित करने में विफल रहने और परिसीमन के नाटक के माध्यम से ध्यान भटकाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि भारत का ईंधन उत्पादन कम हो गया है, आयात विविधीकरण लड़खड़ा गया है, और होर्मुज जलडमरूमध्य में भारतीय ध्वज वाले 14 जहाज फंसे हुए हैं। खरगे ने एक्स पर लिखा कि प्रधानमंत्री मोदी सरकार ने परिसीमन के हथकंडों के जरिए अपनी विफलताओं और एपस्टीन फाइल के गंभीर आरोपों से ध्यान हटाने की कोशिश की, लेकिन भारत ने इस दिखावे को भांप लिया। भाजपा देश के लिए ईंधन और उर्वरक सुरक्षा सुनिश्चित करने में बुरी तरह विफल रही है।

खरगे ने आगे कहा कि उत्पादन में गिरावट

आई है, आयात विविधीकरण विफल रहा है, होर्मुज जलडमरूमध्य में हमारे जहाजों को सुरक्षित मार्ग नहीं मिल पा रहा है। भारतीय ध्वज वाले 14 जहाज 54 दिनों से वहां फंसे हुए हैं। मोदी सरकार की वजह से भारत का कच्चा तेल उत्पादन 2025-26 में लगातार 11वें वर्ष गिर रहा है। कुल कच्चे तेल उत्पादन में 2014-15 से लगभग 22ब की गिरावट आई है। खरगे ने आगे बताया कि गैस उत्पादन में लगभग 40ब की गिरावट आई है, जो 2011-12 में 47,555 मिलियन माइक्रोमीटर सेमी से गिरकर 2020-21 में 28,672 मिलियन माइक्रोमीटर सेमी हो गया है।

उर्वरक भंडार के बारे में उन्होंने कहा कि भू-राजनीतिक उथल-पुथल से पहले भी, कई मौसमों में उर्वरक की कमी की खबरें आ रही थीं। भाजपा की उदासीनता के दुष्परिणामों से भारतीय किसान बुरी तरह पीड़ित हैं! उन्होंने आगे कहा कि मार्च 2026 में उर्वरक उत्पादन पांच साल के निचले स्तर पर आ गया, जिसमें पिछले वर्ष की तुलना में 24.6ब की गिरावट दर्ज की गई। उन्होंने कहा कि चीन ने जुलाई 2025 में ही विशेष उर्वरकों पर प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन मोदी सरकार ने आयात में विविधता लाने की जहमत नहीं उठाई। रूस ने भी अब उर्वरक निर्यात रोक दिया है।

खरगे ने मार्दर्शक मंडल के सदस्य श्री मुरली मनोहर जोशी का हवाला देते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की परोक्ष रूप से आलोचना की, जिन्होंने हाल ही में सुझाव दिया था कि भारत को विश्वगुरु की बयानबाजी बंद कर देनी चाहिए।

प्रमुख समाचार

अरविंद केजरीवाल को दिल्ली हाई कोर्ट ने भेजा सख्त नोटिस

नईदिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने सोशल मीडिया पर अदालती कार्यवाही का वीडियो प्रसारित करने के संबंध में अरविंद केजरीवाल को नोटिस जारी किया है। अदालत ने फेसबुक, गूगल और एक्स सहित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और सर्च इंजनों को न्यायमूर्ति स्वर्ण कांता शर्मा की अदालत में हुई सुनवाई से संबंधित सभी वीडियो

हटाने का निर्देश दिया है। यह मामला आबकारी नीति से संबंधित है, जिसमें केजरीवाल स्वयं अदालत में पेश हुए थे और उन्होंने अपने तर्क प्रस्तुत किए थे। अदालत ने कहा कि न्यायिक कार्यवाही के वीडियो प्रसारित करने से न्यायिक प्रक्रिया की गरिमा को ठेस पहुंच सकती है, इसलिए ऐसी सामग्री को तत्काल हटा दिया जाना चाहिए। आबकारी मामले में न्यायाधीश परिवर्तन की मांग वाली केजरीवाल की याचिका की सुनवाई के दौरान, उच्च न्यायालय ने केजरीवाल के बयान और अदालत की कार्यवाही को रिकॉर्ड करने वाले वीडियो को हटाने का आदेश दिया। यह आदेश न्यायमूर्ति वी. कामेश्वर राव और न्यायमूर्ति मनमीत अरोरा की खंडपीठ ने पारित किया।

उपमुख्यमंत्री बिजेंद्र यादव ने तेजस्वी पर किया पलटवार

पटना। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव के बयान पर उप मुख्यमंत्री बिजेंद्र यादव ने पलटवार किया है। उन्होंने नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव पर बहुत ही तीखा प्रहार किया है। उप मुख्यमंत्री बिजेंद्र यादव ने कहा कि वह खुद क्या हैं? उप मुख्यमंत्री बिजेंद्र यादव ने नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव पर हमला

करते हुए कहा कि तेजस्वी यादव खुद ही बताएं कि वह क्या हैं? पहले उनसे यह पूछा जाए। दरअसल नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने लॉ एंड ऑर्डर पर एक बयान दिया था, जिसमें उन्होंने बिहार के बिगड़ते लॉ एंड ऑर्डर पर सवाल उठाया था। बिहार में हो रहे अपराधिक घटनाओं पर उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा था कि अपराधी अब सम्राट हो गए हैं। तेजस्वी यादव के इसी बयान पर उपमुख्यमंत्री बिजेंद्र यादव ने न सिर्फ पलटवार किया बल्कि काफी सख्त शब्दों में आक्रामक प्रहार भी किया। उप मुख्यमंत्री बिजेंद्र यादव ने कहा कि तेजस्वी यादव से ही पहले यह पूछा जाए कि वह क्या हैं? उन्होंने कहा कि हमलोग बिहार में बदलाव चाहते हैं ताकि बिहार में विकास आगे बढ़े। बिहार में शांति की स्थापना हो सके।

बंगाल के कुमारगंज में भाजपा प्रत्याशी पर भीड़ का हमला

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में जारी चुनावी घमासान के बीच कुमारगंज से एक बेहद तनावपूर्ण और हिंसक घटना सामने आई है, जिसने पूरे सियासी माहौल को और भड़का दिया है। भाजपा उम्मीदवार सुवेंदु सरकार पर भीड़ द्वारा कथित हमला किए जाने का वीडियो सामने आया है, जिसमें उनके साथ

धक्का-मुक्की और हाथापाई होती दिख रही है। इस हमले में उनके कान से खून निकलता भी नजर आया, जिसके बाद उन्हें अपनी जान बचाकर बॉडीगार्ड के साथ मौके से निकलना पड़ा। इस घटना के बाद भाजपा नेता ने सत्ताधारी टीएमसी सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए इसे सियासी साजिश करार दिया है। घटना के बाद पत्रकारों से बातचीत में उन्होंने बताया कि उनके पोलिंग एजेंट्स को 8-10 बूथों से जबरन बाहर निकाल दिया गया था, लेकिन उन्होंने खुद हस्तक्षेप कर उन्हें वापस अंदर जाने दिलाया। उन्होंने आरोप लगाया कि जब वह बूथ नंबर 24 पर स्थिति देखने पहुंचे, तो उन पर और उनकी टीम पर हमला किया गया, ताकि डर का माहौल बनाया जा सके। उन्होंने यह भी कहा कि केंद्रीय सुरक्षा बल मौजूद थे, लेकिन उस समय उनके साथ सिर्फ उनका बॉडीगार्ड था।

कपिल सिब्बल का चुनाव आयोग पर हमला

नई दिल्ली। पूर्व कानून मंत्री और राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने चुनाव आयोग पर बड़ा हमला बोला है। उन्होंने आयोग पर पश्चिम बंगाल में लोगों के वोट देने का अधिकार छीनने का आरोप लगाया। सिब्बल ने तंज कसते हुए पूछा कि अगर ऐसा ही करना है तो चुनाव कराने की जरूरत ही

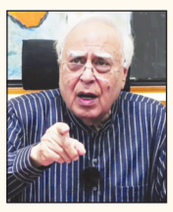

क्या है? सिब्बल ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार पर निशाना साधते हुए कहा कि उन्हें पद्म भूषण मिलना चाहिए। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा कि चुनाव आयोग बंगाल में लोगों को मताधिकार से वंचित करने का प्रयोग कर रहा है। इससे पहले बुधवार को सिब्बल ने आरोप लगाया था कि मुख्य चुनाव आयुक्त भाजपा को जिताने के लिए उनके साथ मिलकर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा था कि ज्ञानेश कुमार राष्ट्रीय शर्म हैं और यह सुनिश्चित करना उनका पेशेगत धर्म है कि भाजपा ही विजयी हो। सिब्बल ने बंगाल में भारी संख्या में सुरक्षा बलों की तैनाती पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र और हरियाणा के चुनावों में ऐसे नियम नहीं अपनाए गए, जो बंगाल में लागू किए जा रहे हैं।

दूसरे चरण से पहले कोलकाता में अमित शाह की बड़ी बैठक

कोलकाता। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गुरुवार को पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों के दूसरे चरण से पहले, कोलकाता में पार्टी दफ़्तर में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के नेताओं के साथ एक बैठक की। इससे पहले गुरुवार को, बीजेपी के राशबिहारी उम्मीदवार स्वपन दासगुप्ता

ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के कालीघाट मंदिर के तय दौरे का ज़िक्र करते हुए कहा कि गृह मंत्री अमित शाह कालीघाट मंदिर आ रहे हैं, जो सभी हिंदुओं के लिए एक बहुत ही पवित्र जगह है। यह उसी विधानसभा क्षेत्र में पड़ता है, जहाँ से मैं चुनाव लड़ रहा हूँ। उन्होंने टीएमसी सरकार के तहत इस इलाके में हुए विकास को लेकर चिंता ज़ाहिर की और कहा कि मुझे उम्मीद है कि जब वे यहाँ आएँगे, तो मैं उन्हें यह भी बता पाऊँगा कि टीएमसी के 15 साल के शासन के बाद इस इलाके की कितनी अनदेखी हुई है और सुविधाओं के मामले में इस इलाके को किस तरह के सुधार की ज़रूरत है। कोलकाता की सभी 11 सीटें पिछले चुनावों में जीत के बाद फ़िलहाल टीएमसी के कब्ज़े में हैं, और इन पर दूसरे चरण में 29 अप्रैल को वोट डाले जाएँगे।

लोकतंत्र को साहसी और जीवंत संसद चाहिए

प्रभु चावला

लोकतंत्र एक पवित्र सामाजिक समझौता है, जो सहमति, परामर्श और निरंतर जवाबदेही की अपेक्षा करता है। भारत में, इसे सुविधा के एक बंद घेरे वाले क्लब में बदल दिया गया है, जहां संविधान के संरक्षक आराम के तलबगार, मुआवजे के पारखी और सुख-सुविधाओं के समर्थक बन गये हैं। जब कोई विधायिका अपनी सीटें, अपने भत्ते और अपने पदों की संख्या बढ़ाने के लिए अचानक सत्र बुलाती है, तो यह व्यवस्था को मजबूत नहीं करती। यह इसे सीट-दर-सीट, सब्सिडी-दर-सब्सिडी, नागरिक-दर-नागरिक बेचती है।

जब कोई विधायिका तीन दिवसीय संक्षिप्त सत्र की आड़ में अपने पारिस्थितिकी तंत्र का विस्तार करने, अपने अधिकारों को समृद्ध करने और अपनी ज्यादतियों को स्थापित करने के लिए मतदान करती है, तो यह लोकतंत्र को गहरा नहीं करती। यह उसका मुद्रीकरण करती है। लोकतांत्रिक वैधता एक नाजुक ढांचे पर टिकी है, जो शासितों और शासन करने वालों के बीच एक विश्वसनीय विश्वास है। यह ढांचा निरंतर तर्क, कठोर जिम्मेदारी और पूर्ण पारदर्शिता की मांग करता है। यदि संविधान (131वां संशोधन) और परिसीमन विधेयक पारित हो जाता, तो सामान्य करदाता के लिए उसके वित्तीय परिणाम चौंकाने वाले और स्थायी होते।

विशेष सत्र में पेश किया गया संविधान संशोधन विधेयक लोकसभा को 543 सीटों (अधिकतम 550 की अनुमति) से बढ़ाकर 816 (अधिकतम 850) करने के लिए था, यानी इसमें लगभग आधी बढ़ोतरी की जानी थी। हर राज्य की विधानसभा को भी लगभग 50 प्रतिशत तक बढ़ाया जाना था, जिससे 2,000 से अधिक अतिरिक्त विधायक बनते। व्यावहारिक रूप से यह करदाताओं द्वारा वित्त पोषित एक स्थायी, संरक्षित और निरंतर भुगतान योग्य राजनीतिक विस्तार होता। इस विस्तार का गणित परेशान करने वाला है। आज प्रत्येक सांसद पर खजाने का

खर्च लगभग 4 l29 करोड़ रुपये सालाना आता है, जिसमें वेतन, भत्ते, निर्वाचन क्षेत्र विकास निधि, सचिवालय स्थापना, बिना किराये का महानगरीय आवास, सांसद और उनके परिवार के लिए असीमित हवाई और रेल यात्रा, व्यापक चिकित्सा कवरेज और संसदीय अधिकारों की काफी बड़ी अदृश्य मशीनरी शामिल है।

ऐसे में, अतिरिक्त 273 सांसद 1,171 करोड़ रुपये का अतिरिक्त आवर्ती वार्षिक बोझ डालेंगे। यह कोई एकमुश्त पूंजीगत व्यय नहीं है, बल्कि एक स्थायी संवैधानिक दायित्व है, जो साल-दर-साल, पीढ़ी-दर-पीढ़ी, गणराज्य के अस्तित्व तक बढ़ता रहेगा। केवल पांच साल के संसदीय कार्यकाल में ही नये सदस्यों की प्रत्यक्ष लागत 5,855 करोड़ रुपये तक पहुंच जाती है, जिसमें राज्यसभा, संसदीय बुनियादी ढांचे का विस्तार, सुरक्षा तंत्र को बढ़ाना और संबंधित नौकरशाही का गठन शामिल नहीं है। इसके अलावा, 'सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना' है। प्रत्येक सांसद को सालाना पांच करोड़ रुपये मिलते हैं, कुल 816 सांसदों के साथ यह राशि 4,080 करोड़ रुपये सालाना हो जाती है।

राज्य विधानसभाएं इस बोझ को नाटकीय रूप से बढ़ा देती हैं। यह निरंतर लागत के लिए एक संवैधानिक प्रतिबद्धता है। रूढ़िवादी गणनाओं के अनुसार राज्य विधानसभा विस्तार की वार्षिक लागत 5,000-8,000 करोड़ रुपये है-एक ऐसा आंकड़ा जो आजीवन पेंशन के आसन्न दायित्व को जानबूझकर नजरअंदाज करता है, जहां पांच साल के कार्यकाल की कुल लागत 40,000-50,000 करोड़ रुपये तक पहुंच जाती है, जिसके वित्तीय परिणाम कहीं अधिक गंभीर और भयानक हैं। विस्तार इस पुरानी अराजकता को ठीक नहीं करता, यह इसे और जटिल बनाता है, इसकी नकल करता है और सुविधापूर्वक इसे छिपा देता है। और फिर भी, सबसे मौलिक प्रश्न बना हुआ है : यह अचानक वृद्धि क्यों, यह विधायी लालसा क्यों, जबकि भारत का भूगोल स्थिर और सीमित है?

सदनों में सांसदों के प्रदर्शन का रिकॉर्ड इस विस्तार को न केवल अनावश्यक, बल्कि लगभग निरर्थक बना देता है। दस प्रतिशत से भी कम सांसद बोलते हैं। लोकसभा साल में सौ दिनों से भी कम बैठती है, विधानसभाएं अक्सर 50 दिनों से कम समय के लिए बुलायी जाती हैं।

हाईकोर्ट से याचिकाकर्ता को राहत, प्री-डिपॉजिट और अंडरटेकिंग पर वसूली कार्रवाई पर रोक

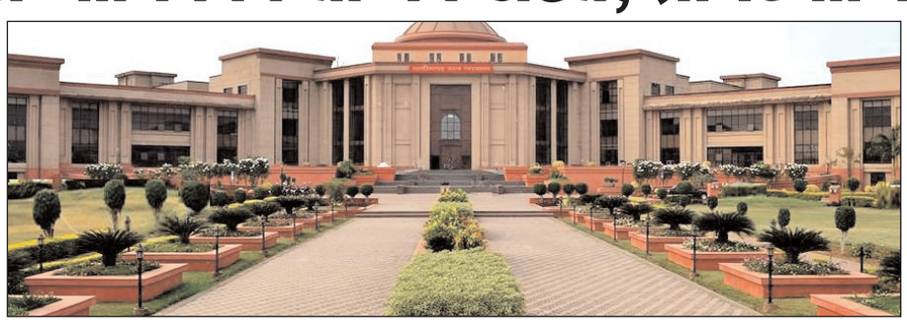

बिलासपुर। जीएसटी बकाया वसूली से जुड़े एक मामले में हाईकोर्ट ने याचिकाकर्ता को राहत देते हुए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। मामला मां काली इंडस्ट्रीज की ओर से दायर रिट याचिका से संबंधित है, जिसमें राज्य कर विभाग द्वारा पारित आदेशों और वसूली कार्रवाई को चुनौती दी गई थी।

याचिकाकर्ता ने 4 नवंबर 2022 और 28 मार्च 2024 के आदेशों के साथ-साथ 16 जनवरी 2026 की अटैचमेंट नोटिस को चुनौती दी थी। इन आदेशों के तहत जीएसटी बकाया की वसूली की कार्रवाई की जा रही थी। मामले की सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता के वकील ने केंद्र सरकार के वित्त मंत्रालय द्वारा 11 जुलाई 2024 को जारी सर्कुलर का हवाला दिया।

इस सर्कुलर में स्पष्ट किया गया है कि जब तक जीएसटी अपीलेट ट्रिब्यूनल का गठन नहीं होता, तब तक अपील करने वाले करदाताओं को राहत दी जा सकती है, बशर्ते वे निर्धारित प्री-डिपॉजिट जमा करें और एक अंडरटेकिंग दें। साथ ही 17 सितंबर 2025 की अधिसूचना का भी उल्लेख किया गया, जिसमें अपील दायर करने की समय-सीमा 30 जून 2026 तक बढ़ाई गई है। जस्टिस राकेश मोहन पांडे की एकलपीठ ने कहा कि इस मामले में अब आगे किसी न्यायिक निर्णय की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि केंद्र सरकार द्वारा पहले ही स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किए जा चुके हैं।

कोर्ट ने याचिकाकर्ता को यह स्वतंत्रता दी कि वह संबंधित अधिकारी के समक्ष अंडरटेकिंग/घोषणा प्रस्तुत करे कि ट्रिब्यूनल बनने पर अपील करेगा। जीएसटी कानून के तहत निर्धारित प्री-डिपॉजिट राशि 15 दिनों के भीतर जमा करे। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि यदि याचिकाकर्ता तय समय में प्री-डिपॉजिट जमा कर देता है और अंडरटेकिंग देता है, तो शेष बकाया राशि की वसूली पर रोक लग जाएगी।

हाईकोर्ट : रेरा में शिकायत पर समय सीमा की कोई पाबंदी नहीं

बिलासपुर। हाईकोर्ट ने एक फैसले में कहा है कि रेरा यानी रियल एस्टेट रेगुलेटरी अथॉरिटी एक विशेष नियामक संस्था है, जिसे कोर्ट की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। कोर्ट ने मकान खरीदने वालों के अधिकार को लेकर कहा कि रेरा में शिकायत दर्ज कराने के लिए समय सीमा की कोई पाबंदी नहीं है। लिहाजा देरी के आधार पर शिकायतों को खारिज नहीं कर सकता। यह फैसला जस्टिस बीडी गुरु की सिंगल बैंच ने सुनाया। दरअसल, जगदलपुर निवासी निधि साव ने रायपुर की सीमा से लगे दुर्ग जिले के अमलेश्वर स्थित ग्रीन अर्थ सिटी में एक फ्लैट बुक किया था। बिल्डर पर समय पर कब्जा नहीं देने और घटिया निर्माण का आरोप लगा। उन्होंने इस मामले की शिकायत स्थानीय प्रशासन से की, लेकिन जिम्मेदार अधिकारियों ने उनकी शिकायत को नजरअंदाज कर दिया। आखिरकार, परेशान होकर उन्होंने रेरा में शिकायत की थी।

रेरा ने बिल्डर को दो महीने में काम पूरा कर कब्जा देने का आदेश दिया। इसके साथ ही याचिकाकर्ता खरीददार को भी बकाया राशि जमा करने को कहा। इस आदेश के खिलाफ खरीददार ने रेरा अपीलीय ट्रिब्यूनल में अपील की। ट्रिब्यूनल ने सुनवाई करने के बजाय यह कहते हुए मामला खारिज कर दिया कि शिकायत दर्ज करने में बहुत देरी हुई है। निधि साव ने इस फैसले को हाईकोर्ट में चुनौती दी। हाईकोर्ट ने इस मामले की सुनवाई के बाद ट्रिब्यूनल के आदेश को रद्द कर दिया है। मामले को वापस ट्रिब्यूनल भेजते हुए निर्देश दिया है कि अब इस मामले की सुनवाई गुण-दोष के आधार पर नए सिरे से की जाए, न कि समय सीमा के तकनीकी आधार पर। बता दें कि रेरा एक्ट की धारा 31 के तहत शिकायत करने के लिए कोई निश्चित समय सीमा तय नहीं की गई है।

प्रशासन ने रुकवाए 3 बाल विवाह

■ **परिवारों को दी समझाइश, लड़के का 21 और लड़की का उम्र 18 साल होना अनिवार्य**

एमसीबी। जिले में बाल विवाह जैसी कुप्रथा के खिलाफ प्रशासन ने एक बार फिर त्वरित कार्रवाई करते हुए बड़ी सफलता हासिल की है। चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 पर प्राप्त सूचना के आधार पर ग्राम कोडांगी (थाना खड़गवां), ग्राम पंचायत केलुआ एवं ग्राम पंचायत दुगला थाना केल्हारी में होने वाले बाल विवाह को समय रहते रोका गया।

सूचना मिलते ही कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देश एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी आदित्य शर्मा के मार्गदर्शन में जिला बाल संरक्षण अधिकारी ने तत्काल संयुक्त टीम का गठन किया।

ब्लॉक परियोजना अधिकारी के नेतृत्व में गठित इस टीम में सेक्टर सुपरवाइजर, जिला बाल संरक्षण इकाई, चाइल्ड हेल्पलाइन, थाना केल्हारी एवं थाना खड़गवां का पुलिस बल, विधिक सेवा प्राधिकरण बैकुंठपुर के सदस्य, सरपंच और आंगनवाड़ी कार्यकर्ता शामिल रहे। टीम ने तीनों स्थानों पर पहुंचकर बाल विवाह की प्रक्रिया को रुकवाया और संबंधित परिवारों को समझाइश दी। अधिकारियों ने मौके पर ही बाल विवाह के दुष्परिणामों और इसके कानूनी पहलुओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने स्पष्ट किया कि बाल विवाह एक गंभीर सामाजिक और कानूनी अपराध है, जिसे किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं किया जा सकता।

चलती कार में लगी आग, चालक ने कूदकर बचाई जान

महासमुंद। जिले के सरायपाली क्षेत्र में गुरुवार को एक बड़ा हादसा होते-होते टल गया, जब पदमपुर रोड स्थित गुरु नानक चौक के पास अचानक एक चलती कार में आग लग गई। देखते ही देखते कार धू-धू कर जलने लगी, जिससे मौके पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया। जानकारी के अनुसार, कार में आग लगते ही चालक ने सूझबूझ दिखाते हुए तुरंत वाहन से कूदकर अपनी जान बचाई। प्रारंभिक अंदेशा शॉर्ट सर्किट के कारण आग लगने का जताया जा रहा है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची। वहीं नगर पालिका की दमकल वाहन ने समय रहते आग पर काबू पा लिया, हालांकि तब तक कार पूरी तरह जलकर खाक हो चुकी थी। इस घटना से आसपास के दुकानदारों और राहगीरों में दहशत फैल गई और कुछ समय के लिए इलाके में अफरा-तफरी का माहौल रहा। बताया जा रहा है कि कार सवार खेम लाल साहू (पिता अंगार साहू) ग्राम दुलारपाली, सरायपाली का रहने वाला है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। रायगढ़ में भी उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब एक खड़ी बाइक में अचानक आग लग गई। देखते ही देखते आग ने पूरी बाइक को अपनी चपेट में ले लिया और कुछ ही मिनटों में पूरी तरह जलकर राख हो गई। प्रारंभिक तौर पर आग लगने की वजह पेट्रोल लीक या इंजन में तकनीकी खराबी मानी जा रही है। जानकारी के अनुसार, मंगलवार की दोपहर शहर के कार्मेल स्कूल के पास स्थित आदित्य बिजनेस पार्क कॉम्पलेक्स के सामने खड़ी बाइक में अचानक आग लग गई और बाइक पूरी तरह जलकर खाक हो गई। बताया जा रहा है कि मोटरसाइकिल श्रीराम फाइनेंस में काम करने वाले किसी एजेंट की है।

क्लीनिक से चला रहा था ऑनलाइन सट्टे का नेटवर्क, आरोपी गिरफ्तार

कवर्धा। कबीरधाम पुलिस ने आईपीएल क्रिकेट मैचों में ऑनलाइन सट्टा संचालित करने वाले एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के पास से मोबाइल फोन और डिजिटल साक्ष्य भी बरामद किए गए हैं। पुलिस के अनुसार थाना कवर्धा की टीम क्षेत्र में गश्त कर रही थी। इसी दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि बस स्टैंड स्थित एक क्लीनिक में एक व्यक्ति आईपीएल मैचों पर ऑनलाइन सट्टा चला रहा है। सूचना के आधार पर पुलिस टीम ने वीरस्तंभ चौक से गवाहों को साथ लेकर बताए गए स्थान पर दबिश दी।

मौके पर एक व्यक्ति मिला, जिसने पूछताछ में अपना नाम नीलकमल अधिकारी (43 वर्ष), निवासी मुर्शीदाबाद (पश्चिम बंगाल) हाल मुकाम प्रोफेसर कॉलोनी कवर्धा बताया। संदेह के आधार पर उसकी तलाशी ली गई, जिसमें उसके पास से एक मोबाइल फोन बरामद हुआ। मोबाइल की जांच करने पर पाया गया कि आरोपी विभिन्न आईडी के माध्यम से आईपीएल मैचों में हार-जीत और प्रत्येक ओवर पर दांव लगाते हुए ऑनलाइन सट्टा संचालित कर रहा था। पुलिस ने मोबाइल से संबंधित स्क्रीनशॉट साक्ष्य के रूप में सुरक्षित किए हैं। आरोपी के खिलाफ छत्तीसगढ़ जुआ प्रतिषेध अधिनियम 2022 की धारा 6 एवं 7 के तहत अपराध दर्ज कर उसे गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया। पुलिस ने आम नागरिकों से अपील की है कि वे किसी भी प्रकार के अवैध जुआ और सट्टेबाजी से दूर रहें। इस तरह की गतिविधियों की जानकारी तुरंत पुलिस को दें। अवैध गतिविधियों के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी। रायगढ़ पुलिस ने भी हाई-टेक तरीके से संचालित हो रहे एक बड़े क्रिकेट सट्टा नेटवर्क का पर्दाफाश किया है। मामले में पुलिस ने मुख्य सरगना देव बंसल को रायपुर से गिरफ्तार किया।

जांच में खुलासा हुआ है कि सट्टे का यह पूरा कारोबार बिना किसी भौतिक सेटअप के पूरी तरह डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सिमट चुका था। इस कार्रवाई की नींव 16 फरवरी को पड़ी, जब चक्रधर नगर पुलिस ने बोईरदादर स्थित एक उद्योग में दबिश देकर विकास अग्रवाल और विनय अग्रवाल को रंगे हाथों पकड़ा था। इन आरोपियों से कड़ाई से पूछताछ की गई, जिसमें खरसिया के गगन अग्रवाल का नाम सामने आया। गगन की गिरफ्तारी के बाद जब तकनीकी जांच शुरू हुई, तब पुलिस के हाथ इस नेटवर्क के मुख्य संचालक देव बंसल तक पहुंचे।

फेडरेशन के तत्वाधान में श्रमिक दिवस का भव्य आयोजन होगा भारद्वाज

सक्ती। छत्तीसगढ़ कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन जिला इकाई शक्ति के तत्वाधान में 1 मई 2026 को जिला स्तरीय श्रमिक दिवस कार्यक्रम का भव्य आयोजन होगा इसकी तैयारी के लिए 22 अप्रैल 2026 को समय 5ः00 बजे स्थान रेस्ट हाउस सक्ती मैं प्रमुख संरक्षक रमेश तिवारी की अध्यक्षता में बैठक की गई, जिला संयोजक राधेलाल भारद्वाज ने कार्यक्रम के संबंध में विस्तार से चर्चा करते हुए बताया की नवगठित जिला शक्ति में दुर्भाग्य जनक ढंग से इस वर्ष तहसील डबरा के ग्राम सिंघी

तराई में 14 अप्रैल 2026 को वेदांता पावर प्लांट में 23 मजदूरों की घटित घटना में निधन हो गया और कई लोग गंभीर रूप से घायल हो गए इस घटना से छत्तीसगढ़ ही नहीं बल्कि देश के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी श्रद्धांजलि प्रकट करते हुए राहत राशि की घोषणा किए रहे ऐसी हालत में जिले के प्रबुद्ध वर्ग का जवाबदारी बनता है की अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस कार्यक्रम 1 म ई 2026 को भव्य मनाया।

प्रमुख संरक्षक रमेश तिवारी जी ने कहा की हर वह व्यक्ति मजदूर है जो अपने काम के बदले पैसा लेता है चाहे वह शारीरिक श्रम हो या मानसिक श्रम, कर्मचारी नेता मनोज राठौर ,विकास चौबे ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस कार्यक्रम मैं कारपेंटर, बढाई ,राजमिस्त्री, पेंटर, वेल्डर, मोची ,कुम्हार ,लोहार, स्वच्छता दीदी ,ऑटो चालक ,रिक्शा चालक, ठेला वाला, रसोईया और घर में बर्तन पोछा लगाने वाले लोगों को सम्मानित किया जाए।

जिसका सभी ने ताली बजाकर स्वागत किया बैठक में जिला संयोजक राधेलाल भारद्वाज, प्रमुख संरक्षक रमेश तिवारी, राजपत्रित अधिकारी संघ जिला अध्यक्ष एवं जिला शिक्षा अधिकारी डाक्टर कुमुदिनी द्विवेदी ,कार्यकारी जिला संयोजक राधेश्याम साहू, विद्युत विभाग बीएमस नेतृत्व मेला राम निर्मलकर, संरक्षक विजय बहादुर सिंह ,खगेश कुमार पटेल, फेडरेशन के पेंशनर प्रकोष्ठ गुरु प्रसाद जायसवाल, रघुनंदन राठौर, रिटायर्ड तहसीलदार राम सिंह सिदार ,फेडरेशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष संतोष सोनी ,जिला सहसंयोजक विकास चौबे ,जिला उपाध्यक्ष रमेश देवांगन ,कर्मचारी अधिकारी फेडरेशन तहसील शक्ति संयोजक मनोज कुमार राठौर, जिला अध्यक्ष हैंड पंप टेक्नीशियन संघ श्याम कुमार सोने, ऑटो सॉन्ग के पूर्व अध्यक्ष भगवान दास धिरहे ,चंद्रिका प्रसाद डनसेना ,लिपिक वर्ग कर्मचारी संघ आर के रजक, छत्तीसगढ़ छत्तीसगढ़ प्रदेश तृतीय वर्ग शासकीय कर्मचारी संघ तहसील शक्ति अध्यक्ष अशोक कुमार राठौर ,आदि संगठन के लोग उपस्थित रहे।

छत्तीसगढ़ प्रमुख समाचार

आवारा कुत्तों का आतंक, एक ही दिन में कई लोगों पर किया हमला

तखतपुर। तखतपुर क्षेत्र में गुरुवार सुबह आवारा और संदिग्ध रूप से पागल कुत्तों ने जमकर आतंक मचाया। कुत्तों ने एक के बाद एक कई लोगों को काटकर घायल कर दिया, जिससे पूरे इलाके में दहशत का माहौल बन गया। जानकारी के अनुसार, कुत्तों ने नगर क्षेत्र के साथ-साथ आस-पास के ग्रामीण इलाकों भथरी और पचबहरा में भी लोगों पर हमला कर रहे थे। हमलों के बाद अब तक बच्चों समेत 16 घायल लोग तखतपुर से लगभग 7 किलोमीटर दूर स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे, जहां उनका इलाज किया। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के अनुसार गुरुवार को कुल 16 लोग कुत्तों के काटने की शिकायत लेकर पहुंचे। सभी को एंटी-रेबीज इंजेक्शन लगाया। वहीं जिन मरीजों के घाव गंभीर थे, उन्हें सीरम देने की आवश्यकता थी, लेकिन अस्पताल में सीरम उपलब्ध नहीं होने के कारण केवल इंजेक्शन लगाकर उन्हें भेज दिया। प्राप्त जानकारी के मुताबिक अभी तक हमलावर कुत्तों को काबू में नहीं किया जा सका है। यह भी आशंका जताई जा रही है।

किशोरी को बहलाकर भगाने वाले आरोपी पर कार्रवाई

रायगढ़। एसएसपी शशि मोहन सिंह के दिशा निर्देशन पर गुम बालिका की खोज के लिए चलाये जा रहे ऑपरेशन मुस्कान के तहत रायगढ़ पुलिस द्वारा एक और गुम बालिका को दस्तयाब किया गया है । जूटमिल थाना पुलिस ने नाबालिग बालिका के लापता होने की रिपोर्ट पर त्वरित और प्रभावी कार्रवाई करते हुए बालिका को सकुशल बरामद कर लिया है तथा उसे बहला-फुसलाकर ले जाकर शारीरिक शोषण करने वाले आरोपी विकास यादव पिता अरुण यादव उम्र 27 वर्ष निवासी वार्ड क्रमांक 1 चंद्रपुर थाना चंद्रपुर जिला सक्ती को गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेज दिया है। घटना के संबंध में 18 अप्रैल 2026 को बालिका के परिजनों ने थाना जूटमिल में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि 17 अप्रैल की रात परिवार के सभी सदस्य भोजन के बाद अपने-अपने कमरों में सो गए थे, लेकिन अगली सुबह बालिका अपने कमरे में नहीं मिली। परिजनों द्वारा आसपास, रिश्तेदारों और मोहल्ले में खोजबीन के बावजूद उसका कोई पता नहीं चला तथा मोबाइल फोन भी बंद पाया गया।

शादी समारोह से लौट रही महिला पार्षद के घरवालों से मारपीट

रायगढ़। ननि क्षेत्र के वार्ड 31 की महिला पार्षद त्रिनिशा चौहान और उसके परिवार के साथ मारपीट की है। महिला पार्षद देर रात शादी समारोह से वापस लौट रही थी, इस दौरान साईड देने की बात को लेकर कुछ युवकों के साथ उनका विवाद हो गया। मामला इतना बढ़ गया की मारपीट तक की स्थिति निर्मित हो गई। मामले में घायल युवक चाहत जैन ने सिटी कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कराई है। हालांकि पुलिस ने रात में ही कुछ युवकों को गिरफ्तार कर लिया था, लेकिन पुलिस कार्रवाई से असंतुष्ट होकर सभी आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर महापौर जीवर्धन चौहान सभापति डिग्री लाल साहू सहित भाजपा पार्षदों ने सिटी कोतवाली के सामने धरना देते हुए पुलिस प्रशासन के विरूद्ध नारेबाजी की। वहीं मेयर सहित पार्षदों द्वारा किये जा रहे प्रदर्शन की सूचना मिलते ही अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनिल सोनी मौके पर पहुंचे और उनसे चर्चा करते हुए सभी आरोपियों को शीघ्र गिरफ्तार करने व मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर धाराएं बढ़ाये जाने के लिए आश्वस्त किया।

गले से सिक्का निकाल डॉक्टरों ने बच्चे की जान बचाई

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ आयुर्विज्ञान संस्थान, सिम्स में एक बार फिर डॉक्टरों की तत्परता और आधुनिक चिकित्सा तकनीक का उदाहरण देखने को मिला। पांच वर्षीय बच्चे नितिन सिंह की जान समय रहते बचा ली गई, जब उसके गले में फंसा 5 रुपये का सिक्का एंडोस्कोपिक तकनीक से सुरक्षित बाहर निकाला गया। चिरमिरी जिले के धवलपुर निवासी नितिन सोमवार शाम करीब 7 बजे खेलते समय गलती से 5 रुपये का सिक्का निगल गया। सिक्का गले में फंसते ही बच्चे को सांस लेने में गंभीर परेशानी होने लगी और उसकी हालत तेजी से बिगड़ने लगी। परिजन तुरंत उसे सिम्स लेकर पहुंचे, जहां बिना देरी इलाज शुरू किया गया। मामले की गंभीरता को देखते हुए परिजनों ने राज्य के स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल को जानकारी दी। मंत्री ने तत्काल सिम्स के डीन रमणेश मूर्ति को फोन कर बच्चे के इलाज को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। डीन के मार्गदर्शन में ईएनटी विभाग की प्रमुख डॉ. आरती पांडे के नेतृत्व में विशेषज्ञ टीम बनाई गई।

राखड़ डैम रिसाव से एचटीपीपी की दो इकाइयां बंद

कोरब। प्रदेश में भीषण गर्मी के चलते बिजली की मांग लगातार बढ़ रही है। इसी बीच कोरबा पश्चिम स्थित हसदेव ताप विद्युत संयंत्र के झाबू नवागांव राखड़ डैम में रिसाव की समस्या सामने आने से बिजली उत्पादन पर असर पड़ा है। स्थिति को देखते हुए संयंत्र प्रबंधन ने एहतियातन 210-210 मेगावाट क्षमता वाली यूनिट 3 और 4 को बंद कर दिया है, जिससे करीब 420 मेगावाट उत्पादन प्रभावित हुआ है। जानकारी के अनुसार, बढ़ती गर्मी के कारण प्रदेश में बिजली की खपत 6800 मेगावाट के पार पहुंच गई है। ऐसे समय में उत्पादन में आई कमी ने बिजली आपूर्ति व्यवस्था पर अतिरिक्त दबाव बना दिया है। राज्य के तापीय संयंत्रों की उपलब्ध क्षमता करीब 2840 मेगावाट ही रह गई है, जिसके चलते कमी को पूरा करने के लिए सेंट्रल सेक्टर से 4400 मेगावाट से अधिक बिजली ली जा रही है। संयंत्र प्रबंधन के मुताबिक, राखड़ डैम में हाल ही में दोबारा रिसाव की स्थिति बनी थी। संभावित खतरे को देखते हुए डैम की मरम्मत का कार्य युद्धस्तर पर शुरू किया गया है।

भाजपा चिकित्सा प्रकोष्ठ की जिला कार्यकारिणी घोषित

एमसीबी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) चिकित्सा प्रकोष्ठ की जिला कार्यकारिणी की घोषणा कर दी गई है।उक्ताशय की जानकारी देते हुये भाजपा जिला मीडिया प्रभारी रामचरित द्विवेदी ने बताया कि यह सूची प्रदेश संयोजक डॉ. देवेंद्र कश्यप के निर्देशन एवं भाजपा जिला अध्यक्ष चंपा देवी पावले की अनुमति से, जिला संयोजक डॉ. अंशुमान चौधरी द्वारा जारी की गई है। नई कार्यकारिणी में संगठन को सशक्त बनाने और स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से जनसेवा को विस्तार देने पर विशेष जोर दिया गया है।इस मौके पर जिला महामंत्री आशीष मजूमदार एवं कार्यालय प्रभारी रमेश यादव भी मौजूद रहे.जारी सूची के अनुसार डॉ. अंशुमान चौधरी को जिला संयोजक नियुक्त किया गया है। वहीं डॉ. सौरभ सिंह एवं श्री अनुप उपाध्याय को जिला सह संयोजक की जिम्मेदारी सौंपी गई है। कार्यकारिणी में डॉ. निशांत श्रीवास्तव को कोषाध्यक्ष और डॉ. श्याम सुंदर तिवारी को सह कोषाध्यक्ष बनाया गया है। इसके अलावा डॉ. राम अयोध्या सिंह को कार्यालय प्रभारी तथा डॉ. शंकर कुमार विश्वास को सह कार्यालय प्रभारी नियुक्त किया गया है।

सोशल मीडिया की जिम्मेदारी डॉ. दीक्षा सिंह को प्रभारी एवं श्रीमती नीलम गुप्ता को सह प्रभारी के रूप में दी गई है। वहीं अन्य सदस्यों के रूप में डॉ. आर.के. बोस, डॉ. आर.एस. ओझा, डॉ. मंतु दास, डॉ. परशराम दास, डॉ. विदेही विशाल, डॉ. मनीष गुप्ता, डॉ. मनीष करोलिया , श्री गौरव कुमार शाह एवं श्री रवि चक्रवर्ती को शामिल किया गया है। इस अवसर पर जिला संयोजक डॉ. अंशुमान चौधरी ने नवनियुक्त पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि सभी सदस्यों का संगठन में स्वागत, वंदन एवं अभिनंदन है। उन्होंने आशा जताई कि सभी मिलकर संगठन को मजबूती प्रदान करेंगे और चिकित्सा प्रकोष्ठ के माध्यम से अंत्योदय की भावना के साथ कार्य करेंगे, ताकि कोई भी व्यक्ति शासन-प्रशासन की योजनाओं से वंचित न रहे। उन्होंने कहा कि समय कम है और कार्य अधिक, इसलिए सभी पदाधिकारी तत्काल अपने स्तर पर कार्य प्रारंभ करें तथा संगठनात्मक कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें। डॉ. चौधरी ने कार्यकर्ताओं से घर-घर भाजपा की नीतियों को पहुंचाने, अधिक से अधिक बैठकें आयोजित करने और ग्रामीण क्षेत्रों का निरंतर भ्रमण कर आमजन की समस्याओं के समाधान की दिशा में कार्य करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जनसेवा ही संगठन का मूल उद्देश्य है और चिकित्सा प्रकोष्ठ इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। अंत में संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने सभी नवनियुक्त सदस्यों को बधाई देते हुए उनके सफल एवं सक्रिय कार्यकाल की कामना की।

कोरिया में ह्यूमन पैपिलोमा वायरस का मुफ्त वैक्सीनेशन, लड़कियों को सर्वाइकल कैंसर से बचाने की पहल

कोरिया। छत्तीसगढ़ में लड़कियों को सर्वाइकल कैंसर से बचाने के लिए एचपीवी वैक्सीनेशन अभियान की शुरुआत की गई है। इस पहल के तहत कोरिया में 14 से 15 साल की लड़कियों को एचपीवी वैक्सीन मुफ्त में दी जा रही है। कोरिया जिला प्रशासन की तरफ से जिले के सभी सरकारी अस्पताल में एचपीवी वैक्सीन मुफ्त में मुहैया कराई गई है। सर्वाइकल कैंसर महिलाओं में होने वाले सबसे गंभीर कैंसरों में से एक है। भारत में यह महिलाओं की मृत्यु के प्रमुख कारणों में शामिल है।

मेडिकल एक्सपर्ट के मुताबिक एचपीवी संक्रमण इस कैंसर का मुख्य कारण होता है, जिसे समय रहते वैक्सीनेशन के जरिए काफी हद तक रोका जा सकता है। ऐसे में यह अभियान किशोरियों के भविष्य को सुरक्षित करने की दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है। कोरिया कलेक्टर चंदन त्रिपाठी ने जिले के अभिभावकों और किशोरियों से इस अभियान में सक्रिय भागीदारी की अपील की है। उन्होंने कहा कि 14 से 15 वर्ष आयु वर्ग की सभी बालिकाओं को यह टीका अनिवार्य रूप से लगवाना चाहिए, ताकि वे भविष्य में इस गंभीर बीमारी से सुरक्षित रह सकें।कलेक्टर ने यह भी स्पष्ट किया कि एचपीवी वैक्सीन पूरी तरह सुरक्षित और प्रभावी है। उन्होंने लोगों से अपील की कि टीके को लेकर किसी भी प्रकार की भ्रामक जानकारी या अफवाहों पर ध्यान न दें और वैज्ञानिक तथ्यों पर भरोसा करें। अभिभावकों और किशोरियों से इस अभियान में सक्रिय भागीदारी की अपील है। 14 से 15 वर्ष आयु वर्ग की सभी लड़कियों को यह टीका अनिवार्य रूप से लगवाना चाहिए, ताकि वे भविष्य में इस गंभीर बीमारी से सुरक्षित रह सकें। एचपीवी वैक्सीन पूरी तरह सुरक्षित और प्रभावी है।

संक्षिप्त समाचार

अंबुजा सिटी सेंटर मॉल में पार्किंग शुल्क वसूली अवैध, जिला उपभोक्ता आयोग ने दिया बड़ा आदेश

रायपुर। जिला उपभोक्ता आयोग ने अंबुजा सिटी सेंटर मॉल को वाहनों से पार्किंग शुल्क वसूली को अवैध घोषित करते हुए निशुल्क पार्किंग की व्यवस्था सुनिश्चित करने का आदेश दिया है। आयोग के इस फैसले से पार्किंग शुल्क के नाम पर लोगों से की जा रही वसूली पर रोक लगने की उम्मीद है। अंजिनेश अंजय शुक्ला ने आयोग के समक्ष दायर याचिका में बताया कि 15 जून 2025 को अपनी कार से अंबुजा मॉल गए थे, जहां उससे 30 रुपए पार्किंग शुल्क लिए गए। इसका विरोध करते हुए उन्होंने कहा कि पार्किंग स्थल का उपयोग नहीं करना है, केवल अपनी माता को छोड़ कर निकल जाना है। परन्तु मॉल प्रबंधन ने जानकारी दी कि अंबुजा मॉल में फ्री पिक अप ड्राप जैसी कोई सुविधा नहीं है। इस कथन से आहत होकर अधिवक्ता शुक्ला ने आयोग में अंबुजा मॉल के विरुद्ध पार्किंग शुल्क वसूली को अवैध घोषित करने की मांग करते हुए एक परिवाद प्रस्तुत किया था। प्रकरण की सुनवाई के दौरान अधिवक्ता शुक्ला ने गुजरात उच्च न्यायालय तथा विभिन्न उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग के प्रासंगिक निर्णयों का उल्लेख करते हुए न्यायालय के समक्ष यह तर्क प्रस्तुत किया कि मॉल के द्वारा वसूली जा रही पार्किंग शुल्क राशि अवैध है, एवं मानसिक क्षति के रूप में 50,000 रुपए की मांग भी की। न्यायालय ने प्रस्तुत तर्कों और विधिक दृष्टांतों का संज्ञान लेते हुए उन्हें विधिसम्मत माना और मॉल को वाहनों से पार्किंग शुल्क वसूली को अवैध घोषित करते हुए निशुल्क पार्किंग की व्यवस्था सुनिश्चित करने को निर्देशित किया है।

महिला आरक्षण बिल भूपेश बोले- तो कौशल्या भाभी को सीएम बना दीजिये, विशेष सत्र की तैयारी

रायपुर। महिला आरक्षण बिल पर छत्तीसगढ़ की राजनीति गरमाई हुई है। इस मामले में पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने भाजपा सरकार पर तीखा तंज कसते हुए कहा कि अगर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय को किसी तरह की परेशानी है, तो वे कौशल्या भाभी को ही मुख्यमंत्री बना दें। उन्होंने आरोप लगाया कि जनसंघ, आरएसएस, विहिप और भाजपा ने कभी भी महिलाओं को शीर्ष नेतृत्व में पर्याप्त अवसर नहीं दिया। उन्होंने अपने निवास पर आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि महिलाओं को आरक्षण देने की पहल सबसे पहले राजीव गांधी ने की थी, लेकिन उस समय भाजपा ने इसका विरोध किया। अगर उस वक्त अड़ंगा नहीं लगाया गया होता तो यह कानून 1989 में ही लागू हो जाता। उन्होंने पंचायत राज व्यवस्था का जिक्र करते हुए बताया कि मध्य प्रदेश में इसे लागू किया गया था और 1995 में इसके तहत पहला चुनाव हुआ, जिससे लाखों महिलाएं राजनीति में आईं और आज वे नेतृत्व की भूमिका निभा रही हैं।

केलो परियोजना की वितरक नहर के लिए 3.56 करोड़ रुपये स्वीकृत

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन जल संसाधन विभाग द्वारा, रायगढ़ जिले के अंतर्गत केलो परियोजना की शरदा वितरक नहर के आर.डी. 0 मी. से 5000 मी. तक सीमेंट कांक्रीट लाईनिंग कार्य के लिए 3 करोड़ 56 लाख 72 हजार रुपये स्वीकृत किये गये हैं। योजना के प्रस्तावित कार्यों के पूर्ण हो जाने पर योजना की रूपांकित सिंचाई क्षेत्र 1113.92 हेक्टेयर में 740.92 हेक्टेयर की हो रही कमी पूर्ति सहित पूर्ण रूपांकित क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध होगी। मुख्य अभियंता मिनीमाता (हसदेव) बांगो परियोजना जल संसाधन विभाग बिलासपुर को प्रशासकीय स्वीकृति दी गई है।

शासकीय सेवक अवकाश स्वीकृत होने पर ही प्रस्थान करेंगे

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा सुशासन तिहार एवं जनगणना जैसे महत्वपूर्ण कार्य को दृष्टिगत रखते हुए परिपत्र जारी कर निर्देशित किया गया है कि कोई भी शासकीय सेवक सक्षम प्राधिकारी द्वारा अवकाश स्वीकृत किए जाने से पूर्व अवकाश पर प्रस्थान नहीं करेगा। बिना पूर्व स्वीकृति के कार्यालय से अनुपस्थित रहना स्वैच्छिक अनुपस्थिति मानी जाएगी और इसे सेवा नियमों के तहत ब्रेक इन सर्विस (सेवा में व्यवधान) के रूप में देखा जा सकता है। सभी शासकीय सेवक को आकस्मिक अवकाश की स्थिति में भी यथासंभव दूरभाष या डिजिटल माध्यम से पूर्ण सूचना देना अनिवाय होगा, जिसकी लिखित पुष्टि कार्यालय आगमन के तत्काल बाद करनी होगी। अवकाश परिस्थिति में लंबे अवकाश पर जाने से पूर्व संबंधित शासकीय सेवक को अपने कार्यों का प्रभार अन्य अधिकारी कर्मचारी को विधिवत सौंपना अनिवार्य होगा। शासन के समस्त विभागों, अध्यक्ष राजस्व मण्डल छत्तीसगढ़ बिलासपुर, समस्त विभागाध्यक्ष, समस्त संभागायुक्त एवं सभी जिलों के कलेक्टरों को इस आशय का पत्र जारी किया गया है।

साकेत भवन में कर्मचारी राज्य बीमा औषधालय ने लगाया विशेष स्वास्थ्य जागरूकता व जांच शिविर

- श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन महापौर श्रीमती संजूदेवी राजपूत ने किया शिविर का समापन, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय व श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन के प्रति जताया आभार
- अधिकारी कर्मचारियों का किया गया स्वास्थ्य परीक्षण, विभिन्न बीमारियों की दी आवश्यकतानुसार दवाईयॉं, दिया गया चिकित्सकीय परामर्श व सुझाव

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय एवं श्रम मंत्री लखनलाल देवांगन के निर्देशानुसार प्रदेश के असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों एवं उनके परिवारजनों के स्वास्थ्य की जांच व स्वास्थ्य जागरूकता हेतु आयोजित किये जा रहे शिविरों की कड़ी में कल बुधवार को कर्मचारी राज्य बीमा औषधालय कोरबा द्वारा निगम कार्यालय साकेत में विशेष स्वास्थ्य जागरूकता व जांच शिविर लगाया गया। महापौर श्रीमती संजूदेवी राजपूत ने शिविर का समापन किया तथा मुख्यमंत्री सायं व श्रम मंत्री श्री देवांगन के प्रति आभार व्यक्त करते हुये कर्मचारी राज्य बीमा औषधालय के कार्यो की सराहना की। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के मार्गदर्शन एवं प्रदेश के श्रम मंत्री श्री लखनलाल देवांगन के दिशा निर्देशों के अनुरूप कर्मचारी राज्य बीमा सेवाएं के द्वारा सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ के असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों एवं उनके परिवारजनों के स्वास्थ्य जांच व स्वास्थ्य जागरूकता के संबंध में स्वास्थ्य व जांच शिविर लगाये जा रहे हैं। इसी कड़ी में नगर पालिक निगम कोरबा के मुख्य प्रशासनिक भवन साकेत में बुधवार को प्रात: 11 बजे से शाम 05 बजे तक विशेष स्वास्थ्य जागरूकता व जांच शिविर का आयोजन किया गया, कर्मचारी राज्य बीमा औषधालय के द्वारा आयोजित उक्त महत्वपूर्ण शिविर में निगम के 500 से अधिक अधिकारी कर्मचारियों ने अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराया। इस दौरान ब्लड प्रेशर, शुगर, जोड़ो का दर्द, सरदर्द, अनिद्रा, हाईपरटेंशन, फीवर, एलर्जी, लीवर, किडनी व हृदय से जुड़ी समस्याओं सहित विविध रोगों की जांच विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा की गई, शिविर में विभिन्न बीमारियों की दवाओं का पर्याप्त स्टाक रखा गया था, अधिकारी कर्मचारियों को चिकित्सकों ने आवश्यकतानुसार दवाईयॉं भी प्रदान की तथा विभिन्न चिकित्सकीय परामर्श व सुझाव दिया।

महापौर श्रीमती संजूदेवी राजपूत ने उक्त विशेष स्वास्थ्य जागरूकता व जांच शिविर का समापन किया तथा कर्मचारी राज्य बीमा औषधालय कोरबा के चिकित्सकों व अन्य अधिकारी कर्मचारियों के कार्यो की सराहना करते हुये प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय व उद्योग मंत्री श्री लखनलाल देवांगन के प्रति आभार व्यक्त किया। शिविर में नोडल अधिकारी डॉ. दिग्विजय बहादुर सिंह, डॉ.नीरज तिवारी, डॉ.ओमदत्त तिवारी, स्टाफ नर्स मेरी संगीता, अरूणा राय सोने, फार्मासिष्ट उमेश कुमार मनहर, अंजू पटेल व अनिल ध्रुव, सहायक ग्रेड-3 ईश्वर प्रसाद सोनी, वार्ड ब्वाय खगेश्वर बेंद्रे, डिगेश कुमार एवं शुभम कर्ष ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

शिविर के समापन के दौरान निगम की मेयर इन काउंसिल के सदस्य अजय कुमार चन्द्रा, ममता यादव, फिरत राम साहू, योगेश मिश्रा, पूर्व पार्षद दीपक यादव, रामशंकर साहू, अधीक्षण अभियंता सुरेश बरूआ, लेखाधिकारी भवकांत नायक, स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.संजय तिवारी, अरूण मिश्रा, आनंद दुबे आदि के साथ निगम के अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित थे।

स्व-सहायता समूह से जुड़कर बदली जिंदगी की तस्वीर

- स्वरोजगार अपनाकर लखपति दीदी बनीं सम्पत्ति प्रजापति
- मासिक आय 10 हजार रुपये से बढ़कर हुई 25 हजार रुपये तक

रायपुर। जनपद पंचायत लोरमी के ग्राम खपरीकला की निवासी श्रीमती सम्पत्ति प्रजापति ने सीमित संसाधनों के बावजूद स्व-सहायता समूह से जुड़कर आत्मनिर्भरता की मिसाल पेश की है। कभी आर्थिक तंगी से जूझने वाली सम्पत्ति दीदी आज लखपति दीदी के रूप में पहचानी जा रही हैं और अन्य महिलाओं के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं। समूह से जुड़ने से पहले उनके परिवार की आय का मुख्य साधन एक छोटा सा होटल व्यवसाय था, जिससे मुश्किल से घर का खर्च चल पाता था। परिवार की आवश्यकताएं पूरी करना भी चुनौतीपूर्ण था। लेकिन एनआरएलएम (बिहान) योजना के अंतर्गत जय शनिदेव महिला स्व-सहायता समूह से जुड़ने के बाद उनकी जिंदगी ने नया मोड़ लिया।

समूह के माध्यम से उन्हें रिवॉल्विंग फंड, कम्युनिटी इन्वेस्टमेंट फंड एवं बैंक लिंकेज के तहत ऋण सुविधाएं प्राप्त हुईं। इन संसाधनों का सदुपयोग करते हुए उन्होंने अपने होटल व्यवसाय का विस्तार किया और साथ ही सुहाग भंडार एवं किओस्क बैंकिंग का कार्य भी शुरू किया। उनकी मेहनत और लगन का परिणाम यह रहा कि उनकी मासिक आय, जो पहले मात्र 10 हजार रुपये थी, बढ़कर अब लगभग 25 हजार रुपये तक पहुंच गई है, जबकि वार्षिक आय करीब 03 लाख रुपये हो गई है। इसके साथ ही कृषि कार्य से भी उन्हें सालाना लगभग 01 लाख रुपये की अतिरिक्त आय प्राप्त हो रही है।

आर्थिक सशक्तिकरण के इस सफर ने उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाए हैं। परिवार का जीवन स्तर बेहतर हुआ है, बच्चों की शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार हुआ है और वे आज आत्मनिर्भर बनकर सम्मानजनक जीवन जी रही हैं। सम्पत्ति दीदी अब अपने व्यवसाय को और विस्तार देने के साथ-साथ गांव की अन्य महिलाओं को भी स्व-सहायता समूह से जुड़कर आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रही हैं। उनकी यह सफलता की कहानी यह दर्शाती है कि सही मार्गदर्शन, योजनाओं का लाभ और दृढ़ संकल्प से कोई भी महिला अपने जीवन को बदल सकती है

काठाडीह बीएसयूपी कॉलोनी में था गांजा तस्करों का जमावड़ा

रायपुर। एण्टी क्राईम एण्ड साईबर युनिट की टीम को सूचना प्राप्त हुई कि थाना मुजगहन क्षेत्रांतर्गत काठाडीह बीएसयूपी कालोनी स्थित एक मकान में कुछ व्यक्ति गांजा रखें है तथा बिक्री करने की फिराक में है। उक्त सूचना को गंभीरता से लेते हुए पुलिस उपायुक्त स्मृतिक राजनाला एवं पुलिस उपायुक्त संदीप पटेल द्वारा अधीनस्थ अधिकारियों एवं प्रभारियों को सूचना की तस्दीक कर आरोपियों को गांजा सहित गिरफ्तार करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में एण्टी क्राईम एण्ड साईबर यूनिट तथा थाना मुजगहन पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा तत्काल कार्यवाही करते हुए टीम के सदस्यों द्वारा उक्त स्थान पर जाकर मुखबीर द्वारा बताये मकान में रेड कार्यवाही की। रेड कार्यवाही के दौरान 05 पुरूष एवं 01 महिला सहित कुल 06 लोग उपस्थित थे। टीम के सदस्यों द्वारा कमरे की तलाशी लेने पर पलंग के नीचे रखें बोरी में गांजा रखा होना पाया। पूछताछ करने पर आरोपियों द्वारा टीम को गोलमोल जवाब देकर लगातार गुमराह करने का प्रयास किया जा रहा था। सभी 06 आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से कुल 4.916 किलोग्राम गांजा तथा घटना से संबंधित 06 नग मोबाईल जब्त किया गया।

वार्ड 57 के 7 स्थानों पर होगा विकास विधायक और महापौर ने किया भूमिपूजन

रायपुर। रायपुर दक्षिण विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत नगर पालिक निगम रायपुर जोन कमांक 4 अंतर्गत पंडित भगवतीचरण शुक्ल वार्ड क्रमांक 57 क्षेत्र के 7 विभिन्न स्थानो पर लगभग 32 लाख रू. की स्वीकृत लागत से नये विकास कार्यों का श्रीफल फोडकर व कुदाल चलाकर भूमिपूजन कर कार्यारंभ रायपुर दक्षिण विधायक सुनील सोनी और महापौर मीनल चौबे ने वार्ड 57 पार्षद व निगम एमआईसी सदस्य अमर गिदवानी, जोन 4 अध्यक्ष मुरली शर्मा, रायपुर शहर जिला भाजपा अध्यक्ष रमेश सिंह ठाकुर, सामाजिक कार्यकर्ता राजेश जैन, सुश्री पल्लवी पाण्डेय,सुश्री गायत्री देवांगन, नगर निगम जोन 4 जोन कमिश्नर डॉ. दिव्या चंद्रवंशी, कार्यपालन अभियंता शेखर सिंह, सहायक अभियंता दीपक देवांगन सहित वार्ड 57 के पेंशनबाडा कालोनी क्षेत्र के रहवासी गणमान्यजनों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, महिलाओं, वरिष्ठ नागरिको, नवयुवको की बडी संख्या में उपस्थिति के मध्य किया एवं नगरवासियों को एक और शानदार सौगात दी। रायपुर दक्षिण विधायक सुनील सोनी ने कहा कि जोन 4 अधिकारीगण गर्मी की तपीश को देखते हुए नये सीसी रोड निर्माण के बाद उसमें तराई का कार्य करवाना सुनिश्चित करें ताकि गर्मी के चलते नई सीसी रोड को कोई क्षति नहीं पहुंचने पाये। रायपुर दक्षिण विधायक ने कहा कि रायपुर नगर निगम क्षेत्र में पूर्ववर्ती शहर सरकार के 5 साल के कार्यकाल में विकास कार्य प्रारंभ नहीं होने के बाद नगर निगम की नई परिषद के कार्यकाल में सभी वार्डो में तेजी से नये विकास कार्य करवाये जा रहे है। शहर सरकार के पास विकास कार्य करवाने राशि की कोई कमी नहीं है। महापौर श्रीमती मीनल चौबे ने वार्डवासियों को 32 लाख के नये विकास कार्य वार्ड में प्रारंभ होने पर हार्दिक बधाई दी एवं अधिकारियों को निर्देशित किया कि वे स्वीकृति अनुसार शीघ्र कार्य प्रारंभ करवाकर सभी नये विकास कार्य तय समय सीमा में गुणवत्ता के साथ जनहित में पूर्ण करवाना सुनिश्चित करें। वार्ड 57 पार्षद व एमआईसी सदस्य अमर गिदवानी ने वार्ड 57 में 32 लाख की लागत से नाली, सीसी रोड, सामुदायिक भवन आदि के 7 स्थानो पर नये विकास कार्य प्रारंभकरने पर सभी वार्डवासियों की ओर से रायपुर दक्षिण विधायक सुनील सोनी और महापौर मीनल चौबे सहित जोन 4 जोन अध्यक्ष श्री मुरली शर्मा को धन्यवाद दिया एवं नये विकास कार्य प्रारंभ होने पर सभी वार्डवासियों को हार्दिक बधाई दी ।

अपनी ज़िम्मेदारी निभाएं और अपनी बेटियों को सर्वाईकल कैंसर के खतरे से बचाएं

रायपुर । बेटियों की मुस्कान में ही भविष्य की सबसे उजली तस्वीर बसती है-और इसी मुस्कान को सुरक्षित रखने के संकल्प के साथ छत्तीसगढ़ ने एचपीवी (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) टीकाकरण कार्यक्रम की शुरुआत की है। यह पहल केवल एक शासकीय योजना नहीं, बल्कि हर उस माँ-बाप के विश्वास की रक्षा है, जो अपनी बेटी के बेहतर स्वास्थ्य और सुरक्षित कल का सपना देखते हैं। भारत सरकार के नेतृत्व में चल रहे अभियान से जुड़ते हुए छत्तीसगढ़ अब उन सभी राज्यों के साथ कदम से कदम मिला रहा है, जिन्होंने गर्भाशय ग्रीवा (सर्वाइकल) कैंसर को जड़ से समाप्त करने का बीड़ा उठाया है। गर्भाशय ग्रीवा कैंसर महिलाओ में होने वाले कैंसरों में दूसरा सबसे सामान्य कैंसर है। यह मुख्य रूप से ह्यूमन पैपिलोमा वायरस संक्रमण के कारण होता है, गर्भाशय ग्रीवा कैंसर के प्रारंभिक चरण में सामान्यत: कोई स्पष्ट लक्षण दिखाई नहीं देता जिस कारण अक्सर यह गंभीर अवस्था में पहुँच जाता है। एचपीवी टीकाकरण इस गंभीर कैंसर के खिलाफ एक सशक्त और भरोसेमंद सुरक्षा कवच के रूप में स्थापित हो चुकी है- वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित, पूर्णत: सुरक्षित, अत्यंत प्रभावी है और इसकी सुरक्षा को लेकर कोई गंभीर प्रतिकूल प्रभाव दर्ज नहीं हुआ है-जो इसकी विश्वसनीयता को और भी पुख्ता बनाता है। यह टीका केवल आज की सुरक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि आने वाले वर्षों में कैंसर के खतरे को जड़ से कम करने की ठोस और दीर्घकालिक सुरक्षा प्रदान करता है। निजी अस्पतालों में एचपीवी टीके की एक खुराक की कीमत लगभग ?4,000 तक होती है, जो अनेक परिवारों के लिए वहन करना आसान नहीं है। ऐसे में आर्थिक बाधाएँ अक्सर बेटियों की इस जरूरी सुरक्षा में रुकावट बन जाती हैं।

पोलमपल्ली से अरलमपल्ली सड़क बनने से खुश है ग्रामीण

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में सुकमा जिले के दूरस्थ और नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में विकास की रफ्तार तेज हुई है। रोड कनेक्टिविटी के विस्तार ने यहां के ग्रामीण जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना शुरू कर दिया है। कलेक्टर श्री अमित कुमार के मार्गदर्शन में वनांचल और नियद नेल्लानार क्षेत्रों में सड़क निर्माण कार्यों को प्राथमिकता दी जा रही है। लोक निर्माण विभाग द्वारा पोलमपल्ली से अरलमपल्ली तक 7 किलोमीटर लंबी डामरीकृत सड़क का निर्माण 4 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से कराया जा रहा है। यह सड़क निर्माण कार्य पूर्णता की ओर है, जिसके बन जाने से विकासखंड मुख्यालय कोंटा की दूरी लगभग 15 किलोमीटर कम हो जाएगी। यह मार्ग डब्बाकोंटा, कोलाईगुड़ा, एंटापाड़, बुर्कलंका, पालाचलमा और गट्टापाड़ जैसे पूर्व में नक्सल प्रभावित गांवों को जोड़ता है। पहले जर्जर रास्तों और नक्सली गतिविधियों के कारण यहां आवागमन अत्यंत कठिन था, लेकिन अब पुलिस कैंपों की स्थापना और प्रशासनिक सक्रियता से हालात बदले हैं। कलेक्टर ने कहा कि दूरस्थ क्षेत्रों तक सड़क पहुंचाना प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। यह सड़क न केवल आवागमन को सुगम बनाएगी, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर भी बढ़ाएगी। स्थानीय निवासी मड़काम भीमा ने बताया कि सड़क बनने से कोंटा तक पहुंचना आसान हो गया है।

शासकीय सेवकों के राजनीतिक दलों की सदस्यता पर सरकार के यू-टर्न पर कांग्रेस का तंज, कहा- आरएसएस चला रही सरकार

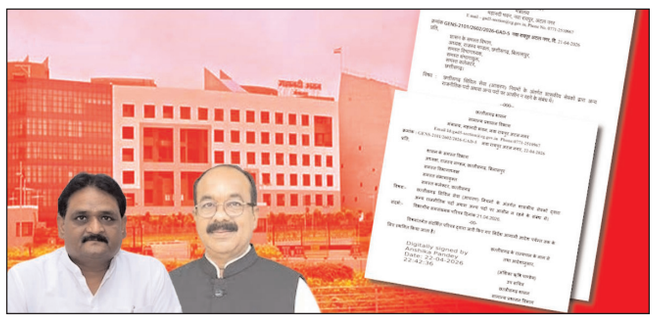

रायपुर। शासकीय सेवकों के राजनीतिक दलों या संगठनों में सक्रिय सदस्यता को लेकर जारी आदेश पर छत्तीसगढ़ सरकार के यू-टर्न पर सरकार के साथ-साथ विपक्ष की भी प्रतिक्रिया आई है। कांग्रेस ने इस नए आदेश के पीछे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका बताई है, वहीं दूसरी ओर भाजपा ने आरएसएस के राजनीतिक दल नहीं होने की दलील दी है।कांग्रेस संचार प्रमुख सुशील आनंद शुक्ला ने सामान्य प्रशासन विभाग के ताजा आदेश पर कहा कि सरकार को ये स्पष्ट करना चाहिए कि क्या सरकारी कर्मचारी अब राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों में शामिल हो सकते हैं? पदाधिकारी बन सकते हैं? क्या सर्विस रूल में छूट दे दी गई हैं? क्या ये आदेश कर्मचारियों को आरएसएस की गतिविधियों में शामिल होने के लिए दिया गया हैं। इससे साबित हो रहा है कि सरकार को भाजपा नहीं, पीछे दरवाजे से आरएसएस चला रही है।

वहीं कांग्रेस के सवाल पर उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने कहा कि कर्मचारी नियम से शासित होते हैं, प्रावधान के अनुरूप आचरण करना पड़ता है, लेकिन आरएसएस कोई राजनीतिक दल नहीं है, कांग्रेस को समझना जरूरी है। डिप्टी सीएम साव ने इसके साथ अमित जोगी को सुप्रीम कोर्ट से राहत मिलने पर कहा कि न्यायालय में किसी का प्रभाव नहीं चलता। अंतिम फैसला अभी आया नहीं, अंतरिम राहत मिली है। न्यायालय विधि के अनुरूप न्याय करता है। अंतिम फैसला अंतिम सुनवाई के बाद ही आएगा। वहीं बंगाल में हो रहे चुनाव पर डिप्टी सीएम साव ने कहा कि ममता दीदी जाने वाली हैं। पश्चिम बंगाल में सुशासन आएगा, बेटियों-माताओं को सुरक्षा मिलेगी, वहां कमल खिलने वाला है। धान खरीदी में 900 करोड़ के नुकसान पर अरुण साव ने कहा कि सरकार इस दिशा में काम कर रही है। नुकसान ना हो इसके प्रयास जारी हैं। उपसमिति की बैठक में इसकी समीक्षा की जाएगी। वहीं राहुल गांधी की ओबीसी एडवाइजरी काउंसिल बैठक को लेकर उप मुख्यमंत्री ने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा ओबीसी को उपेक्षित रखा, सत्ता से बाहर है तो ओबीसी की याद आ रही है। भूपेश के राज में भी ओबीसी के साथ अन्याय हुआ, केंद्र में भी हुआ। काका कालेलकर समिति का विरोध कांग्रेस ने किया। ओबीसी कमीशन को संवैधानिक दर्जा देने और आरक्षण के काम कांग्रेस ने नहीं किया। मंडल कमीशन के खिलाफ लंबा भाषण भी कांग्रेस ने ही दिया। ओबीसी के लोग कांग्रेस के इस स्वभाव को जानते हैं।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता, जल संसाधन संभाग कोण्डागाँव, छत्तीसगढ़ कोड क्रमांक-041
email:- eewrkon@cgwrd.in

ज्ञा.क्रमांक/864/व.ले.लि./2026-27 कोण्डागाँव, दिनांक 6./04/2026

-: निविदा निरस्तीकरण आदेश:-

इस कार्यालय के निविदा आमंत्रण सूचना क्रमांक 19/वलेलि/2025-26 दिनांक 09.01.2026 सिस्टम निविदा क्रमांक 183411 G - 252605971 द्वारा छ.ग. राज्य के कोण्डागाँव जिले के विकासखण्ड फरसगाँव के चनियागाँव एनीकट का निर्माण कार्य (प्रथम आमंत्रण) राशि रूपये 292.52 लाख का निविदा आमंत्रित किया गया था। जिसे कार्यालय प्रमुख अभियंता, जल संसाधन विभाग, शिवनाथ भवन सेक्टर-19 नार्थ ब्लॉक, नवा रायपुर, अटल नगर रायपुर (छ.ग.) के पृ. क्र.4264030/निविदा प्रकोष्ठ/2026/4343 (TC) रायपुर दिनांक 16.03.2026 के अनुसार उक्त प्रथम निविदा आमंत्रण में योग्य निविदाकार की संख्या केवल एक होने के कारण उक्त निविदा को निरस्त कर पुन: निविदा आमंत्रण किया जाना है।

अत: G - 252605971 सिस्टम निविदा क्रमांक 183411 निविदा आमंत्रण सूचना क्रमांक 19/वलेलि/2025-26 दिनांक 09.01.2026 को एतद् द्वारा निरस्त की जाती है एवं पुन: निविदा आमंत्रित करने की कार्यवाही की जाती है।

संलग्न -शून्य ।

कार्यापालन अभियंता
जल संसाधन संभाग कोण्डागांव
जिला-कोण्डागांव (छ.ग.)

जी-262700327/8

प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का नोटिस

सनत जैन

कांग्रेस के सांसद केसी वेणुगोपाल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ विशेषाधिकार का प्रस्ताव लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को सौंपा है। लोकसभा अध्यक्ष को पत्र सौंपकर वेणुगोपाल ने आरोप लगाया है, 18 अप्रैल 2026 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र के नाम जो संबोधन किया है उस संबोधन में लोकसभा सदस्यों के बारे में आपत्तिजनक टिप्पणी की है। संसद सदस्यों की सोच पर गंभीर सवाल उठाए हैं। कांग्रेस सांसद ने अपने पत्र में कहा है, कि राष्ट्र के नाम संबोधन में संसद की गरिमा और सांसदों के अधिकारों का उल्लंघन हुआ है। कांग्रेस ने आरोप लगाया है, प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्षी सांसदों के मतदान और उनकी मंशा को लेकर जो कहा है, वह अवमानना की श्रेणी में आता है। यह बेहद गंभीर मामला है, इस पर तत्काल कार्यवाही की जानी चाहिए। वेणुगोपाल ने अपने पत्र में कहा, यह सिर्फ एक संसद सदस्य के विशेष अधिकार का मामला नहीं है, बल्कि लोकतंत्र की गरिमा और संसद की स्वतंत्रता पर गहरा आघात है। उन्होंने इस पत्र में लोकसभा अध्यक्ष से मांग की है, इस तरह की पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए। इस मामले में विशेष अधिकार हनन की कार्यवाही तुरंत शुरू की जानी चाहिए। लगता है कांग्रेस आक्रामक होती चली जा रही है। कांग्रेस लंबे समय तक सत्ता में रही है, जिसके कारण उसे विरोध करने के तौर-तरीके नहीं आते थे। जिस तरह से कांग्रेस के सांसद केसी वेणुगोपाल ने प्रधानमंत्री मोदी द्वारा दिए गए राष्ट्र के संबोधन को सांसदों के विशेष अधिकार से जोड़कर निशाना साधा है, उसको देखते हुए यह कहा जा सकता है, कांग्रेस ने लंबे समय तक विपक्ष में रहते हुए सत्ता पक्ष को न केवल जवाब देना सीख लिया है वरन सत्ता पक्ष को कैसे घेरा जाता है, यह अच्छी तरह से जान लिया है। सत्ता पक्ष जिस तरह से विपक्षी नेताओं को घेरने के लिए सत्ता एवं संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग करता है। लोकतंत्र और कानून के नाम पर विपक्ष को आतंकित करके रखा था। उससे अब कांग्रेस बाहर निकल रही है। सत्ता पक्ष को वह उसी अंदाज में न केवल जवाब देना सीख गई है, वरन अदालतों में भी सत्ता पक्ष को घेरने का कोई मौका नहीं छोड़ रही है। अदालतों में मुखर होकर अपनी बात कहना, अदालतों के निर्णय सत्ता पक्ष के लिए अलग और विपक्ष के लिए अलग तरह का विरोध अदालत के सामने किया जाने लगा है। आसंदी के सामने भी विपक्ष दिनों-दिन मुखर हो रहा है। इससे सत्ता पक्ष के लिए मुसीबतें बढ़ रही हैं। न्यायपालिका की कुर्सी में बैठे हुए जजों के लिए भी सत्ता पक्ष का समर्थन आंख बंद करके करना मुश्किल हो रहा है। विपक्ष में अब एक नया संगिठत बदलाव देखने को मिल रहा है। कांग्रेस जिस तरह से आक्रामक हो रही है, निश्चित रूप से उसकी गुरु जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी ही बनी है। जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी जब विपक्ष में थी उस समय जिस तरह का विरोध करती थी, अब उसी आक्रामकता से विरोध करना कांग्रेस ने सीख लिया है। प्रमाण के साथ विरोध करना सीख लिया है। विपक्षी सांसद अब बिना डरे हुए अपनी बात कहना सीख गए हैं। जिसके कारण सत्ता पक्ष की परेशानी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, सत्ता पक्ष की जवाबदेही भी बढ़ रही है। न्यायपालिका में बैठे हुए जजों के लिए अब आसान नहीं है, वह सरकार की दबाव में निर्णय कर सकें। बार-काउंसिल, हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता भी मुखर होकर, आक्रामक होकर, अपना पक्ष न्यायालयों के सामने रख रहे हैं। न्यायपालिका में अभी जो सरकारी दबाव देखने को मिलता था, उसमें विपक्ष अब सेंध लगाने का कोई मौका नहीं छोड़ रहा है।

न्यायपालिका बनाम विधायिका टकराव पर संवैधानिक प्रश्न

सौरभ वार्ष्णेय

दिल्ली की राजनीति में हाल में उभरा जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा बनाम दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल विवाद एक बड़े संवैधानिक प्रश्न को जन्म देता है—क्या यह मामला सच में न्यायपालिका बनाम विधायिका का टकराव है, या फिर यह संस्थाओं के बीच संतुलन और जवाबदेही की सामान्य प्रक्रिया का हिस्सा है? यह विवाद तब चर्चा में आया जब अदालत की टिप्पणियों और राजनीतिक प्रतिक्रियाओं ने सार्वजनिक विमर्श को गर्मा दिया। अदालत ने शासन के कुछ निर्णयों और प्रक्रियाओं पर सवाल उठाए, जबकि राजनीतिक पक्ष ने इसे न्यायिक दखल के रूप में देखा। जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा बनाम केजरीवाल विवाद को सीधे-सीधे न्यायपालिका बनाम विधायिका का टकराव कहना अतिशयोक्ति होगी। यह लोकतंत्र के भीतर चल रही वह स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसमें संस्थाएँ एक-दूसरे पर नियंत्रण और संतुलन बनाए रखती हैं। असल चुनौती टकराव से बचना नहीं, बल्कि संवैधानिक संतुलन और गरिमा को बनाए रखना है—क्योंकि मजबूत लोकतंत्र वही है, जहाँ संस्थाएँ स्वतंत्र भी हों और जिम्मेदार भी।

भारतीय संविधान में तीनों स्तंभ—विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका—स्पष्ट रूप से अलग-अलग भूमिकाओं के साथ स्थापित किए गए हैं। न्यायपालिका का दायित्व कानून की व्याख्या करना और यह सुनिश्चित करना कि सरकार संवैधानिक सीमाओं में काम करे। विधायिका का अधिकार कानून बनाना और नीतियाँ तय करना। ऐसे में जब अदालत किसी सरकारी फैसले पर सवाल उठाती है, तो वह टकराव नहीं, बल्कि संवैधानिक जांच का हिस्सा होता है।

आखिरकार विवाद की असली जड़ क्या है? इस प्रकरण में मूल मुद्दा सीमा-निर्धारण का है। यदि न्यायपालिका नीति निर्माण में गहराई से हस्तक्षेप करे, तो विधायिका को अतिक्रमण महसूस हो सकता है। वहीं, यदि सरकार न्यायिक आदेशों या टिप्पणियों को नजरअंदाज करे, तो यह कानून के शासन को कमजोर कर सकता है। यानी, समस्या टकराव की नहीं, बल्कि संतुलन बनाए रखने की है।

लोकतंत्र के लिए क्या संकेत? यानी स्वस्थ लोकतंत्र के लिए यह विवाद कुछ महत्वपूर्ण

संकेत देता है। संस्थागत संवाद की आवश्यकता टकराव की बजाय सहयोग और सम्मान जरूरी है। संवैधानिक मर्यादा हर संस्था को अपनी सीमाओं का सम्मान करना होगा। तकनीकी परिपक्वता सार्वजनिक बयानबाजी के बजाय कानूनी प्रक्रियाओं पर भरोसा बढ़ाना चाहिए। जस्टिस पर की टिप्पणी—क्या यह उचित है?

भारतीय लोकतंत्र में न्यायपालिका और राजनीति के बीच संतुलन बेहद संवेदनशील विषय है। हाल ही में अरविंद केजरीवाल द्वारा जस्टिस पर की गई टिप्पणी ने इसी संतुलन को लेकर बहस छेड़ दी है। सवाल यह है कि क्या किसी निर्वाचित जनप्रतिनिधि द्वारा न्यायाधीशों पर सार्वजनिक टिप्पणी करना उचित है? पहली बात, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लोकतंत्र का मूल स्तंभ है। एक राजनेता होने के नाते केजरीवाल को अपनी बात रखने का अधिकार है। लेकिन यह अधिकार पूर्ण नहीं है—इसके साथ जिम्मेदारी भी जुड़ी होती है। जब टिप्पणी न्यायपालिका जैसे संवैधानिक संस्थान पर हो, तो शब्दों का चयन और मर्यादा दोनों अहम हो जाते हैं।दूसरी ओर, न्यायपालिका की स्वतंत्रता लोकतंत्र की रीढ़ मानी जाती है। यदि राजनीतिक नेता न्यायाधीशों के फैसलों या व्यक्तित्व पर सार्वजनिक रूप से सवाल उठाने लगें, तो इससे जनता का भरोसा कमजोर पड़ सकता है। यह स्थिति न्यायपालिका की निष्पक्षता पर अनावश्यक संदेह पैदा कर सकती है।हालांकि, यह भी सच है कि न्यायपालिका आलोचना से परे नहीं है। स्वस्थ लोकतंत्र में हर संस्था की समीक्षा होनी चाहिए। लेकिन यह समीक्षा तथ्यों, तर्क और संवैधानिक मर्यादा के दायरे में होनी चाहिए—न कि व्यक्तिगत या भावनात्मक आरोपों के रूप में।इस पूरे विवाद में मूल प्रश्न संतुलन का है—क्या आलोचना संस्थागत सुधार के लिए है, या राजनीतिक लाभ के लिए? अगर उद्देश्य सुधार है, तो भाषा और मंच दोनों संयमित होने चाहिए। केजरीवाल की टिप्पणी को केवल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के चश्मे से नहीं, बल्कि संवैधानिक जिम्मेदारी के पैमाने पर भी परखा जाना चाहिए। लोकतंत्र की मजबूती इसी में है कि संस्थाएं एक-दूसरे का सम्मान करते हुए जवाबदेही निभाएं।

दिल्ली हाईकोर्ट ने सोमवार को आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल और अन्य आरोपियों द्वारा दायर उन अर्जियों को खारिज किया, जिनमें शराब नीति मामले की सुनवाई से जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा के हटने की मांग की गई थी। जस्टिस स्वर्ण कांता शर्मा ने टिप्पणी की कि सिर्फ इसलिए कि उनके बच्चे केंद्र सरकार के पैनल वकील हैं, यह नहीं माना जा सकता कि उनके मन में केजरीवाल के प्रति कोई पूर्वाग्रह है। जज ने आगे कहा कि किसी राजनेता को न्यायिक क्षमता का आकलन करने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

किसी जज की क्षमता का फैसला हाईकोर्ट करता है, न कि कोई वादी। किसी राजनेता को अपनी सीमा पार करने और न्यायिक क्षमता का आकलन करने की अनुमति नहीं दी जा सकती, हो सकता है कि कोई वादी हमेशा सफल न हो, और केवल हाईकोर्ट ही यह तय कर सकता है कि कोई फैसला गलत है या एकतरफा। जिला कोर्ट के फैसले को हाईकोर्ट सही ठहरा सकता है। यही बात हाईकोर्ट पर भी लागू होती है, जिसके फैसले को सुप्रीम कोर्ट देखता है। वादी की यह सामान्य आशंका कि शायद यह अदालत उसे राहत न दे, जज पर पूर्वाग्रह का आरोप लगाने का आधार नहीं बन सकती।

जस्टिस शर्मा ने आगे कहा कि आरोपों का सामना होने पर कोई जज अपनी न्यायिक जिम्मेदारी से पीछे नहीं हट सकता। उन्होंने कहा, कोई जज किसी वादी के मन में पूर्वाग्रह को लेकर पैदा हुए बेबुनियाद शक को दूर करने या मनगढ़ंत आरोपों के आधार पर सुनवाई से खुद को अलग नहीं कर सकता... जज पर किए गए निजी हमले असल में पूरी संस्था पर किए गए हमले होते हैं... यह न केवल मुझ पर (जो कि एक जज हूं) हमला होगा, बल्कि पूरी संस्था पर भी हमला होगा। इस तरह का खतरा न केवल हाईकोर्टस् तक पहुंचेगा, बल्कि जिला कोर्ट तक भी जाएगा... अगर यह अदालत सुनवाई से हटने का फैसला सुनाकर यह संदेश देती है कि किसी वादी के दबाव में आकर वह ऐसा कर सकती है तो इससे जनता के मन में यह धारणा बन जाएगी कि जज किसी राजनीतिक दल के पक्ष में काम करते हैं...

जज ने आगे कहा कि सुनवाई से हटने की अर्जियों में जो कहानी गढ़ी गई, वह पूरी तरह से अटकलों पर आधारित पाई गई। इसके अलावा, सुनवाई से हटने की अर्जी के साथ कोई सबूत पेश नहीं किया गया, बल्कि उसमें जज की ईमानदारी और निष्पक्षता पर आक्षेप, इशारे और संदेह ही व्यक्त किए गए।उन्होंने कहा, अगर मैं इन अर्जियों को मान लेती तो इससे एक परेशान करने वाली मिसाल कायम हो जाती। अब यह मेरा पक्का फर्ज़ बन जाता है कि मैं इसका बेखौफ़ होकर जवाब दूं।

बदकिस्मती से आज मुझे दो मुक़दमेबाज़ों के बीच का झगड़ा नहीं, बल्कि एक मुक़दमेबाज़ और मेरे—एक जज—के बीच का झगड़ा सुलझाना है। इस अदालत के सामने जो दलीलें पेश की गईं, वे खुद को केस से अलग करने के कानून के तहत ज़रूरी सबूतों से कमज़ोर साबित हुईं। कोई भी जज, किसी मुक़दमेबाज़ के मन में पक्षपात को लेकर पैदा हुए बेबुनियाद शक को दूर करने के लिए, या मनगढ़ंत आरोपों के आधार पर खुद को केस से अलग नहीं कर सकता... यह अदालत अपने और इस संस्था के सम्मान के लिए खड़ी रहेगी, भले ही यह मुश्किल क्यों न लगे। इस अदालत ने जो चोगा पहना है, वह इतना हल्का नहीं है।

अगर ऐसे आधारों पर खुद को केस से अलग करने की बात मान ली जाती है तो इससे हमारी न्याय प्रक्रिया पर खतरा पैदा हो जाएगा। तब इसे मैनेज्ड जस्टिस (प्रबंधित न्याय) कहा जाएगा।अब इस मुख्य मामले की सुनवाई 29 और 30 अप्रैल को होगी, जिसमें सीबीआई अपनी दलीलें पेश करेगी। उसके बाद अदालत प्रतिवादियों की बात सुनेगी।

पुराण दिग्दर्शन ....

सन्देहाभासनिकारणाध्यायः (नौवां अध्याय)

(गतांक से आगे...)

(ग) इन्द्र बोला- मैंने द्युलोक में प्रह्लाद वंशज दैत्यों को अन्तरिक्ष, में पुलोमा के वंशधरों को और पृथ्वी पर कालकाञ्ज नामक असुरों को मार डाला। इस [हिंसा] कार्य में (देवसत्तारक्षणरूप पुण्य कर्म के कारण) मेरा रोम भी नहीं उखड़ा, सो जो पुरुष मेरे (इस धर्मरक्षार्थ किये गये कर्तव्य-पालन) को जानेगा सो उसका भी किसी प्रकार के कर्म से (इसप्रकार के आचरण से) लोक नष्ट न होगा (लोक और परलोक न बिगड़ेगा) अमुक-अमुक परिस्थितियों में देवसत्ता की रक्षा के लिए की गई चोरी, भ्रूण-हत्या, मातृ-हत्या और पितृ-हत्या आदि के पाप से उसका मुख काला न होगा।

(घ) सात से गुणित सात 7×7= 46 मरुद्गण हैं। (ङ) मरुतों ने जलों से अग्नि को विस्तृत किया और उस विस्तृत हुई अग्नि के हृदय को छेदन कर डाला, वह अशनि वज्र बिजली हुई। (च) यह सूक्त मरुत्स्तोम कहलाता है इसी के प्रताप से (गर्भस्थ) मरुतों ने (बार-बार काट डालने पर तथैव जीवित बने रहना रूप) अपरिमित पुष्टि को परिपुष्ट किया। (छ) तब ऊंची दिशा में मरुत् और आंगिरस देवताओं ने इन्द्र को अभिषिक्त किया।

पौराणिक स्वरूप

एकदा सा तु संध्यायामुच्छिष्टा व्रतशिता ।
अस्पृष्टवार्य्यधौतांघ्रिः सुष्त्राप विधिमोहिता ।।60।।
लब्ध्वा तदन्तरं शक्रो निद्रापहृतचेतसः।
दितेः प्रविष्ट उदरं योगेशो योगमायया ।।61।।
चकर्त सप्तधा गर्भ वज्रण कनक-प्रभम्।
वदन्तं सप्तधैकैकं मारोदोरिति तान्पुनः ॥62॥
ते समूचुः पाठ्यमानाः सर्वे प्राञ्जलयो नृप!
नो जिघांससि किमिन्द्र ! भ्रातरो मरुतस्तव ।।63॥
मा भैष्ट भ्रातरो मह्यं यूयमित्याह कौशिकः।
अनन्यभावात्पार्षदानात्मनो मरुतां गणान् ।।64।।

क्रमशः ..

राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस और 73वाँ संविधान संशोधन

सुनील कुमार महला

हमारा देश गांवों का देश है और गाँव स्तर पर भारतीय लोकतंत्र को सशक्त बनाने के उद्देश्य से भारत में प्रतिवर्ष 24 अप्रैल को राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस मनाया जाता है। यह दिन इसलिए विशेष महत्व रखता है, क्योंकि 24 अप्रैल 1993 को भारत में 73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम लागू हुआ था, जिसके माध्यम से पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्राप्त हुआ। यहां पाठकों को जानकारी देता चलूं कि यद्यपि यह संशोधन भारतीय संसद द्वारा वर्ष 1992 में पारित किया गया था, परंतु इसे 24 अप्रैल 1993 से प्रभावी किया गया। यही कारण है कि यह तिथि भारतीय ग्रामीण लोकतंत्र के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

वास्तव में, 73वाँ संविधान संशोधन भारतीय संविधान में किया गया एक ऐतिहासिक, नायाब और दूरदर्शी संशोधन था। कहना ग़लत नहीं होगा कि इस संशोधन ने ग्रामीण स्वशासन की वास्तविक नींव रखी। इस संशोधन के बाद राज्य सरकारों के लिए पंचायती राज व्यवस्था को लागू करना संवैधानिक रूप से अनिवार्य हो गया। इसके माध्यम से संविधान में भाग-IX जोड़ा गया, जिसमें पंचायतों से संबंधित प्रावधान सम्मिलित किए गए। साथ ही, इसमें 11वीं अनुसूची भी जोड़ी गई, जिसमें पंचायतों को सौंपे जाने वाले 29 विषयों का उल्लेख किया गया।

इस संशोधन का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय स्वशासन को मजबूत करना, लोकतंत्र को गाँव-गाँव तक पहुँचाना तथा जनता की सीधी भागीदारी सुनिश्चित करना था। इसके अंतर्गत पूरे देश में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था लागू की गई, जिसमें क्रमशः ग्राम स्तर पर ग्राम पंचायत, मध्यवर्ती/ब्लॉक स्तर पर पंचायत समिति तथा जिला स्तर पर जिला परिषद शामिल हैं। उल्लेखनीय है कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 243-ब के अनुसार प्रत्येक राज्य में इन तीन स्तरों पर पंचायतों के गठन का प्रावधान किया गया। हालांकि, जिन राज्यों की जनसंख्या 20 लाख से कम है, वहाँ मध्यवर्ती (ब्लॉक) स्तर पर पंचायत बनाना अनिवार्य नहीं है। पाठक जानते होंगे कि पंचायतों के सदस्यों के चुनाव प्रत्यक्ष रूप से जनता द्वारा किए जाते हैं। ग्राम, मध्यवर्ती और जिला स्तर के निर्वाचित सदस्यों का चयन सीधे मतदाताओं द्वारा होता है, जबकि मध्यवर्ती एवं जिला स्तर के अध्यक्षों का चुनाव निर्वाचित सदस्यों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से किया जाता है। पंचायत चुनावों के संचालन हेतु प्रत्येक राज्य में राज्य निर्वाचन आयोग की स्थापना का प्रावधान किया गया। इतना ही नहीं, भारतीय संविधान के अनुच्छेद 243-इ के अनुसार प्रत्येक पंचायत का कार्यकाल 5 वर्ष निर्धारित किया गया है, यदि उसे पूर्व में भंग न किया जाए। इससे पंचायतों को स्थायित्व और निरंतरता प्राप्त हुई।इस संशोधन की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक सामाजिक न्याय और समावेशिता है। इसके अंतर्गत अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी) तथा महिलाओं के लिए आरक्षण का प्रावधान किया गया। महिलाओं को पंचायतों में प्रतिनिधित्व मिलने से ग्रामीण नेतृत्व में व्यापक परिवर्तन आया और महिला सशक्तीकरण को नई दिशा व उन्नयन मिला।

गलतियों से क्या अमेरिका ने नहीं सीखा कोई सबक?

शेखर गुप्ता

इजरायल और अमेरिका ने ईरान के साथ जंग की शुरुआत अत्यधिक नाटकीय अंदाज में की थी। यह बात भी उतनी ही नाटकीय है कि तथाकथित विजेता, खासकर अमेरिका अब रुक गया है। इसमें नाटकीयता का तत्व ईरान के शीर्ष धार्मिक, सैन्य, वैचारिक और खुफिया नेतृत्व की लक्षित हत्या में निहित था। अमेरिकी कार्रवाई में वर्तमान ठहराव ईरान की जिद और आत्मसमर्पण से इनकार के कारण आया है। ऐसे में कुछ सवाल पैदा होते हैं।

क्या नेतृत्व-विहीन करने के प्रयास करने वाले हमले विरोधी के विनाश की गारंटी देते हैं? क्या इससे बेहतर तरीका भी हो सकता है? क्या इजरायल-अमेरिका गठबंधन ने कोई चूक की? क्या अन्य जगहों पर ऐसे ही किसी युद्ध का इतिहास हमें कुछ और बताता है? क्या भारतीय अनुभव में भी कुछ सबक हैं? पहले तीन प्रश्नों का उत्तर 'नहीं' है। बाकी का 'हां'।

हमें इजरायल और अमेरिका को अलग-अलग संदर्भों में देखना होगा। इजरायल हमेशा अस्तित्वगत खतरों से लड़ता है। उन्हें निराशा होगी कि ईरान में शासन परिवर्तन नहीं हुआ। लेकिन ईरान को कमजोर कर देना, उसके परमाणु कार्यक्रम को लंबा झटका, और उसके मिसाइल ढांचे का विनाश अपेक्षाकृत कम लागत पर बड़े लाभ हैं। लेबनान में कार्रवाई और हिज्बुल्लाह का कमजोर होना इजरायल के लिए फायदेमंद ही है। अगर इजरायल अपने लिए कुछ वक्त चाहता था तो उस लिहाज से यह एक अच्छा कदम था। इसके अलावा इजरायल अपनी इच्छा से युद्ध और शांति के बीच आवाजाही कर सकता है।

ऐसे में अमेरिका को कहां रखें? उसके ज्यादातर लक्ष्य वही थे जो इजरायल के थे लेकिन साथ ही उसके कुछ खास हित भी थे। सत्ता परिवर्तन और ईरान की परमाणु महत्वाकांक्षाओं के खात्मे के अलावा उसे अरब में अपने संरक्षण वाले देशों (खाड़ी सहयोग परिषद या जीसीसी) को भी बचाना और आश्वस्त करना था।

यह तीनों लक्ष्यों को पाने में विफल रहा। ईरान की सत्ता न केवल बरकरार रही बल्कि द वॉल स्ट्रीट जर्नल के मुताबिक अब वह अधिक कट्टर व्यक्तियों के हाथ में है। यूरेनियम की बात करें तो ईरान अभी भी संवर्धित यूरेनियम भंडार सौंपने को तैयार नहीं है न ही वह उसे निगरानी में लाना चाहता है। उसके मिसाइल हमले कमजोर हुए हैं लेकिन साथ ही विरोधियों का बचाव तंत्र भी कमजोर पड़ा है। हर बार जब अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप या उनके युद्ध मंत्री पीट हेगसेथ ईरान की नौसेना और वायु सेना के अंत के दावे करते हैं तब आप केवल हंस सकते हैं। वास्तव में ईरान के पास एक छोटी नौ सेना थी और वायु सेना तो लगभग नहीं थी। छोटे लेकिन हिम्मती यूएई को छोड़ दें तो बाकी अरब देश डरे हुए और युद्ध से बचते हुए नजर आए। लंबे समय से वे पश्चिमी देशों पर निर्भर रहे हैं। उन्होंने इजरायल को अपने हवाई क्षेत्र का इस्तेमाल करने दिया और फिलिस्तीन के मुद्दे पर सिर्फ औपचारिक बातें करते रहे। कतर जैसे कुछ देशों ने दोनों पक्षों का साथ दिया। उसने अमेरिका को अपना सबसे बड़ा अड्डा बनाने दिया और दूसरी ओर मुस्लिम ब्रदरहुड, हमास और ईरान के साथ भी रिश्ते कायम रखे। सऊदी शाही परिवार को लगा कि पवित्र मस्जिदों का संरक्षक होने के नाते उसे सुरक्षा मिलेगी। उन्होंने अमेरिकी सेना पर पूरा भरोसा किया। अब यह भरोसा हिल चुका है। जीसीसी के देशों को आधुनिक इतिहास में पहली बार हमले का सामना करना पड़ा। उन्हें न केवल अपने सुरक्षा बल बचा पाए और न ही अमेरिका।

पश्चिम एशिया की लड़ाई इजरायल और ईरान के बीच नहीं है। यह ईरान और खाड़ी के अरब देशों के बीच प्रभुत्व की लड़ाई है जिसमें इजरायल एक हिस्सा भर है। ईरान की जनसंख्या पूरे जीसीसी की तुलना में डेढ़ गुना से अधिक है, और उसकी सेना (इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड्स कॉर्प्स के साथ) उनके संयुक्त बल से भी बड़ी है।

गरीब मुस्लिम देशों में ईरानी इस्लाम को अमीर खाड़ी देशों के इस्लाम की तुलना में अधिक विश्वसनीय और शुद्ध माना जाता है। और यह केवल शियाओं तक सीमित नहीं है। उनमें से कई ईरान को एकमात्र इस्लामी देश मानते हैं जो इजरायल और अमेरिका के खिलाफ फिलिस्तीनियों के लिए लड़ रहा है, और इसके लिए भारी कीमत चुका रहा है। यह उस दृष्टिकोण से ज्यादा अलग नहीं है जिसमें वे खाड़ी अरबों को 'अमीर, निर्बल, अनैतिक पश्चिमी कठपुतलियां' मानते हैं। यूएई को छोड़कर, जीसीसी में किसी ने भी प्रतिरोध की बात नहीं की है। वे दोनों पक्षों से सौदे तलाश रहे हैं।

जीसीसी का डर केवल ईरान की सैन्य शक्ति से नहीं है, बल्कि उस तबाही से भी है जो वह अपनी खुफिया पैठ और वैचारिक प्रभाव का उपयोग करके उनकी जनसंख्या में फैला सकता है। अब यह डर इस तथ्य से और बढ़ गया है कि इसे कई लोग पश्चिमी शक्ति के खिलाफ पहला वास्तविक मुस्लिम प्रतिरोध मानेंगे, इराक, अफगानिस्तान और सीरिया जैसी लगातार अपमानजनक घटनाओं के बाद। खाड़ी अरबों को सबसे अधिक डर अपने ही लोगों के इस्लामी विद्रोह से है यानी एक नया अरब स्प्रिंग।

इसी डर के कारण सऊदी अरब ने पाकिस्तान के साथ रक्षा समझौता फिर से बहाल किया और अपनी सेना को उसमें शामिल किया। लेकिन पाकिस्तान शायद ही ईरान या इराक के खिलाफ लड़ता दिखेगा। वह वहां पैसों की खातिर रहेगा। डर इतना ज्यादा है कि कतर ने भी स्टेट बैंक ऑफ पाकिस्तान को 5 अरब डॉलर दिए हैं। साफ कहें तो अमेरिका युद्ध से जुड़े उद्देश्य पूरे नहीं कर सका है। उसके पास न तो ताकत है और न ही प्रेरणा है कि वह जमीनी हमलों के साथ युद्ध दोबारा शुरू कर सके। हेगसेथ ने कहा था कि ईरान युद्ध विराम चाहता था लेकिन अब यह स्पष्ट हो चुका है कि ट्रंप ही समझौते के लिए अधिक उत्सुक हैं। यह हमें हमारे मुख्य प्रश्नों तक ले जाता है। क्या ईरानी नेतृत्व की हत्या एक मास्टरस्ट्रोक थी या एक भूल? आत्मसमर्पण के बजाय, ईरानी प्रतिरोध युद्ध विराम के दिन तक दृढ़ और लगातार बना रहा। वास्तव में ये हत्याएं गलती साबित हुई हैं।

वर्तमान वार्ताओं में अमेरिका के लिए बेहतर यही होता कि वह अयातुल्लाह खामेनेई (जो 86 वर्ष की आयु में प्रोस्टेट कैंसर के शिकार थे) और उनके प्रमुख सैन्य सहयोगियों से उनकी पराजय के बाद निपटता। दो देशों के बीच होने वाली जंग में आपको किसी के साथ बातचीत करनी ही होती है। यही वजह है कि कभी शीर्ष नेताओं को निशाना नहीं बनाया जाता है। रूस और यूक्रेन इसका उदाहरण हैं।

किसी आतंकी, गैर राज्य समूह और संगठित राज्यों से निपटने में अंतर होता है। हमास, हिज्बुल्लाह और हूती पहले वर्ग में आते हैं, लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद भी। राष्ट्रीय नेताओं की बात अलग होती है। क्या 1991में सद्दाम हुसैन को बख्शकर जॉर्ज बुश सीनियर ने समझदारी दिखाई थी बजाय कि जॉर्ज बुश जूनियर के जिन्होंने 2006 में सद्दाम को मार डाला। क्या लीबिया को गद्दाफी की हत्या से कोई फायदा हुआ?

अंतत: हम भारतीय अनुभव पर आते हैं। सैद्धांतिक रूप से भारत ने सबसे कठिन विद्रोहों से लड़ते हुए भविष्य की वार्ताओं के लिए शीर्ष नेताओं को सुरक्षित रखा। मिजो और नागा के भूमिगत नेताओं और मणिपुर तथा असम के नेताओं पर कभी हमला नहीं हुआ। अक्सर उन्हें बख्श दिया गया या जब वे घिर गए तो उन्हें सूचना भी दी गई। भारतीय शांति सेना के वरिष्ठों से पूछिए, उनका यह दृढ़ रूप से मानना रहा है कि जब वे वेलुपिल्लई प्रभाकरण को घेरते तो रॉ उन्हें सूचना दे रहा था।

आज का इतिहास

1915 जर्मनी की सेना ने बेल्जियम के फ्लेमिस प्रांत के आइपर क्षेत्र में क्लोरोफोर्म गैस छोडी।
1915 ओटोमन साम्राज्य में अर्मेनियाई नरसंहार, सैकड़ों प्रमुख आर्मीनियाई लोगों ने कांस्टेंटिनोपल के थेरेस्ट और निर्वासन के साथ शुरू किया।
1916 आयरलैंड में पैट्रिक पियर्स के नेतृत्व में आयरिश रिपब्लिकन ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ ईस्टर राइजिंग शुरू किया और आयरिश गणराज्य को एक स्वतंत्र राज्य घोषित किया।
1922 इंपीरियल वायरलेस चैन का पहला भाग, ब्रिटिश साम्राज्य के देशों को जोड़ने के लिए बनाया गया एक रणनीतिक वायरलेस टेलीग्राफी संचार नेटवर्क खोला गया।
1933 नाजी जर्मनी ने मैगडेबर्ग में वॉच टॉवर सोसाइटी के कार्यालय को बंद करके यहोवा के साक्षियों के उत्पीड़न की शुरुआत की।
1938 कोस्टेंटिन पाट्स एस्टोनिया के पहले राष्ट्रपति बने।
1951 जापान के योकोहामा शहर में एक ट्रेन में आग लगने से 100 से अधिक लोग मरे गए।
1960 दक्षिण ईरान में आये भयंकर भूकंप से 500 लोगों की मौत।
1967 सोवियत अंतरिक्ष यान सोयुज 1 पृथ्वी के अपने फैलाव के दौरान साइबेरिया में दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिससे अंतरिक्ष यान के दौरान पहली मानव टोडी कोस्मोनॉट व्लादिमीर कोमारोव की मृत्यु हो गई।
1984 एड्स-वायरस की पहचान की, प्रतिरक्षा की कमी वाले सिंड्रोम का अधिग्रहण किया।
1990 हबल स्पेस टेलीस्कोप को मिशन एसटीएस-31 में स्पेसशूट डिस्कवरी पर सवार किया गया था।
1993 अनंतिम आयरिश रिपब्लिकन आर्मी ने बिशप्सगेट के वित्तीय जिले में एक ट्रक बम विस्फोट किया, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि 44 अन्य घायल हो गए।
1995 देश के संगीत अकादमी के 31 वें अकादमी शनाया ट्विन को सम्मानित किया गया।
1996 जॉन बैरी के साथ शहर में बेलास्को जैक रात में 12 प्रदर्शन अधिक खुले थे।
1997 न्यूयॉर्क शहर में रिचर्ड थिएटर में स्टील पीयर खोला जाता है। यह 76 प्रदर्शनों के लिए था।
2002 अर्जेन्टीना में बैंक अनिश्चित काल के लिए बंद।
2006 नेपाल में संसद बहाल।
2009 मेक्सिको से इन्फ्लूएंजा के खर्च के बारे में संयुक्त राज्य अमेरिका, अन्य देशों को डब्ल्यूएचओ द्वारा व्यक्त किया गया था।

ब्रिगेड मैदान की जंग में ममता बनाम अमित शाह की जंग

उमेश चतुर्वेदी

प्रधानमंत्री रहते अटल बिहारी वाजपेयी ने कोलकाता की यात्रा की थी। उस दौरे पर उन्होंने तत्कालीन रेल मंत्री के कालीघाट स्थित घर का दौरा किया था। तब उन्होंने मंत्री की मां से उलाहना दिया था, आपकी बेटी मुझे बहुत परेशान करती हैं। कहना न होगा कि वह शख्सियत डेढ़ दशक से पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री है। ममता बनर्जी लड़ाका है। धूल से उठकर राजनीतिक आसमान का तारा अगर वे बनी हुई हैं, उसकी वजह उनका सघर्षशील व्यक्तित्व ही है। लेकिन कोलकाता के मैदान में इस बार यह योद्धा फंसा नजर आ रहा है। भारतीय जनता पार्टी जिस तरह उनसे दो-दो हाथ कर रही है, निश्चित तौर पर उसके पीछे नरेंद्र मोदी की अगुआई में बंगाल की धूल में लगातार परिश्रम कर रहे बीजेपी के कार्यकर्ता हैं। आज अगर बंगाली की सियासी लड़ाई आर-पार के दौर में आ चुकी है तो इसके पीछे अमित शाह की रणनीति काम कर रही है।

साल 2021 के विधानसभा चुनाव नतीजे आने के बाद कहा गया था कि बीजेपी चुनाव जीतते-जीतते हार गई है। ममता का संघर्ष बीजेपी की रणनीतियों पर भारी पड़ गया था। पांच साल बाद कोलकाता के रायटर्स बिल्डिंग पर कब्जे को लेकर सेनाएं सज गई हैं। लेकिन इस बार हालात बदले नजर आ रहे हैं। इसकी वजह अमित शाह का चुनाव प्रचार की कमान खुद संभालना है, जिन्होंने 170 सीटें जीतने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय कर रखा है। पिछले विधानसभा चुनाव में पिछड़ने के बावजूद अमित शाह ने राज्य की यात्राएं जारी रखीं और इसके जरिए अपने कार्यकर्ताओं को उत्साहित बनाए रखा। इस बार बीजेपी अगर सत्ता की प्रबल दावेदार के रूप में उभरी है तो इसकी बड़ी वजह बूथ प्रबंधन तो है ही, घुसपैठ और महिला सुरक्षा को मुद्दा बनाना भी है। बंगाल के बारे में कहा जाता है कि वह जो आज सोचता है, पूरा देश उस पर बाद में आगे बढ़ता है। शक्ति पूजा की संस्कृति वाले राज्य में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर ममता के राज में कई बार सवाल उठे। कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कालेज में रेजिडेंट डाक्टर से दुष्कर्म और बर्बर हत्या के बाद अंग्रेजों की पहली राजधानी का भद्रलोक उद्वेलित हो उठा। अभी इसकी आंच ठंडी पड़ी नहीं कि कस्बा लॉ कालेज की छात्रा के साथ बलात्कार हुई। इसके पहले संदेशखाली में हुई कथित तौर पर यौन हिंसा और ज़मीन हड़पने के मामलों से पश्चिम बंगाल का समाज उद्वेलित रहा। अमित शाह के बार-बार के बंगाल दौरे के चलते बीजेपी के कार्यकर्ताओं ने महिला सुरक्षा के मसले को कभी धीमा नहीं पड़ने दिया। इन्हीं वजहों से महिला सुरक्षा को लेकर तृणमूल

कांग्रेस सवालों के घेरे में आ गई। राष्ट्रीय क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो की 2023 की रिपोर्ट भी राज्य में महिलाओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा की ही तसदीक करती है, जिसके अनुसार, राज्य में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 34,691 मामले दर्ज किए गए और एसिड हमलों में इसका हिस्सा सबसे ज़्यादा करीब 27.5 प्रतिशत रहा। बीजेपी को महिला सुरक्षा को बड़ा मुद्दा बनाने में ममता बनर्जी के एक बयान से भी मिला, जिसमें उन्होंने कहा था कि महिलाओं को शाम सात बजे के बाद बाहर नहीं निकलना चाहिए। बीजेपी ने महिला सुरक्षा के मुद्दे पर आरजी कर की पीड़िता की मां मंजू देवनाथ को पनियाहाटा से उम्मीदवार बनाकर एक तरह से राज्य की महिलाओं को संदेश दे दिया है, संदेश यह कि वह उनकी सुरक्षा के लिए संजीदा है। बीजेपी ने महिलाओं को लुभाने के लिए दुर्गा सुरक्षा दस्ते बनाने और नौकरियों में महिलाओं को 33 फीसद आरक्षण देने का भी वादा किया है। इसके साथ ही महिलाओं को मध्य प्रदेश, हरियाणा और महाराष्ट्र की तरह प्रतिमाह तीन हजार रूपए देने का वादा किया है। यहां याद रखना चाहिए कि ममता सरकार हर महीने महिलाओं को डेढ़ हजार रूपए दे रही है।

साल 2021 में राज्य में तृणमूल कांग्रेस को 213 सीटें और करीब 44 प्रतिशत वोट मिले थे, जबकि बीजेपी को 38 प्रतिशत वोट के साथ 77 सीटों पर संतोष करना पड़ा था। हालांकि 2016 के विधानसभा चुनावों के मुकाबले देखें तो पार्टी ने तीन सीट और करीब 28 प्रतिशत वोट की तुलना में बड़ी छलांग लगाई। अमित शाह ने इसी बुनियाद को मजबूत करते हुए आगे बढ़ने की रणनीति बनाई। इसके तहत उन्होंने दो बातों पर जोर दिया। उन्होंने उन गढ़ों को और मज़बूत बनाने की रणनीति बनाई, जहां पहले से ही पार्टी मजबूत स्थिति में है। इसके साथ ही उन चुनाव क्षेत्रों में आधार बढ़ाने की कोशिश तेज की, जहां 2021 में वह बहुत कम अंतर से हारी थी। इसके साथ ही अमित शाह ने पार्टी के भीतर की गुटबाज़ी को भी सुलझाने की कोशिश की। राज्य में पार्टी के अध्यक्ष रहे दिलीप घोष के बारे में माना जा रहा था कि वे नाखुश हैं। अमित शाह ने उनसे मुलाकात करके तृणमूल से आए शुभेंदु अधिकारी से बीच उनके मतभेदों को दूर करने की कोशिश की।

ममता बनर्जी ने पिछली बार बंगाली माटी और मानुष यानी स्थानीय को मुद्दा बनाया था। उन्हें इस मुद्दे से पिछली बार मदद भी मिली। इस बार भी ममता विपक्ष यानी बीजेपी के नेताओं के बाहरी होने का आरोप लगा रही हैं। इसके जवाब स्वरूप अमित शाह ने ऐलान किया है कि अगर पश्चिम बंगाल में पार्टी सत्ता में आई तो राज्य का मुख्यमंत्री 'धरती का बेटा' यानी स्थानीय व्यक्ति ही बनेगा। पार्टी ने इस बार घुसपैठ को भी बड़ा मुद्दा बनाया है। राज्य में विशेष पुनरीक्षण अभियान के दौरान राज्य में नब्बे लाख वोटरों के नाम हटाने को लेकर ना सिर्फ सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस समेत समूचा गैर बीजेपी दल मुद्दा बना रहे हैं। हालांकि अमित शाह चुनाव आयोग के विशेष गहन पुनरीक्षण अभियान यानी एसआईआर के कदम को सही बताया है। बीजेपी यहीं नहीं रूकी है, उसने वादा किया है कि अगर वह सत्ता में आई तो राज्य से अवैध घुसपैठियों की पहचान करेगी और उन्हें बाहर करेगी। इसके साथ ही पार्टी ने सत्ता में आने के पैंतालीस दिनों के अंदर सीमा पर बाड़ लगाने के लिए केंद्र सरकार को जमीन देगी। बीजेपी ने इसके जरिए बांग्लादेश की ओर हो रही पशु तस्करी को रोकने का भी ऐलान किया है।

राज्य में भ्रष्टाचार को भी बड़ा मुद्दा बनाने में बीजेपी कामयाब रही है। इसमें अतीत में हुई भ्रष्टाचार की घटनाओं ने मदद की है। यहां का शिक्षक भर्ती घोटाला रहा, जिसकी सुनवाई करते हुए कलकत्ता हाईकोर्ट ने 26 हजार नौकरियां रद्द कर दी थी। इसके साथ ही राशन और मिड-डे मील, मनरेगा , जॉब कार्ड घोटाला भी सुर्खियां बनता रहा है। बीजेपी ने इस बार इसे भी मुद्दा बनाया है। इन मामलों में तृणमूल के बीस से ज्यादा नेताओं को जेल भेजा गया। हालांकि तृणमूल कांग्रेस इसे केंद्र की बदले की कारवाई बताती रही है। यही वजह है कि पार्टी ने दागी नेताओं को टिकट भी दिया है। इसकी वजह से भद्रलोक के बीच तृणमूल को सवालों के घेरे में लाने की पुरजोर कोशिश अमित शाह और उनकी बीजेपी कर रही है। ऐसे ढेरों मामले हैं, जिनकी वजह से बीजेपी सत्ताधारी तृणमूल कांग्रेस को जबरदस्त चुनौती देती नजर आ रही है। इसका मतलब यह नहीं है कि तृणमूल कांग्रेस ने सरेंडर कर दिया है। ममता की अगुआई में पार्टी अब भी पुरजोर तरीके से मैदान में खड़ी है। इस वजह से इस बार भी मुकाबला सीधे तौर पर ममता बनाम बीजेपी ही नजर आ रहा है। हालांकि सही तौर पर कहें तो इस बार मुकाबला ममता बनाम अमित शाह है। इस जंग में अमित शाह सफल होंगे या ममता एक बार फिर उन्हें मात देने में कामयाब रहेंगी, यह तो चार मई को मतगणना के बाद ही पता चल पाएगा।

कुछ राज्यों में वर्षों से लंबित हैं पंचायत चुनाव

महेंद्र तिवारी

देश आज पंचायतीराज दिवस मनाएगा, पर इस वर्ष यह दिन एक अहम सवाल के साथ दस्तक दे रहा है। सवाल है कि क्या हमारा स्थानीय लोकतंत्र धीरे-धीरे औपचारिकता में नहीं बदलता जा रहा है? देश के आठ राज्यों व चार केंद्रशासित प्रदेशों में तय समय पर पंचायतों के चुनाव नहीं कराए गए हैं। कुछ राज्यों में तो कई वर्षों से पंचायत चुनाव लंबित हैं। ऐसा तब है, जब संविधान के अनुच्छेद-243(ड.) के तहत पंचायतों में नियमित चुनाव कराना राज्यों की जिम्मेदारी है। केंद्रीय पंचायतीराज मंत्री की ओर से लोकसभा में दी गई जानकारी के अनुसार, मणिपुर व महाराष्ट्र में वर्ष 2022 से, गुजरात में 2023 से, राजस्थान में 2025 से तथा तेलंगाना में 2024 से पंचायतों के चुनाव नहीं हुए हैं। इसी तरह कर्नाटक में ब्लॉक व जिला पंचायतों के चुनाव 2021 से तथा ग्राम पंचायतों के चुनाव दिसंबर 2025 से लंबित हैं। हिमाचल प्रदेश में इस साल जनवरी में चुनाव होने थे, पर नहीं हो सके। तमिलनाडु में 28 जिलों की पंचायतों का कार्यकाल जनवरी 2025 में खत्म हो चुका है। केंद्रशासित प्रदेशों में जम्मू-कश्मीर में ग्राम पंचायतों व ब्लॉक पंचायतों के कार्यकाल 2024 में, जबकि जिला पंचायतों के कार्यकाल इसी साल फरवरी में खत्म हो गए। लद्दाख में 2024 से, तो पुडुचेरी में 2011 से पंचायतों के चुनाव नहीं हुए हैं। गौर करने वाली बात यह है कि समय पर पंचायत चुनाव न कराने वाले राज्य व केंद्रशासित प्रदेश किसी एक दल की सत्ता वाले नहीं हैं। इनमें भाजपा शासित गुजरात, महाराष्ट्र व राजस्थान जैसे राज्य हैं, तो कांग्रेस शासित राज्यों में कर्नाटक व हिमाचल भी शामिल हैं। तमिलनाडु, जम्मू-कश्मीर में क्रमशः क्षेत्रीय दलों द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (द्रमुक) व नेशनल कांफ्रेंस की सरकार है। 73वें संविधान संशोधन का मूल उद्देश्य सत्ता का विकेंद्रीकरण था। मकसद था कि निर्णय गांव के स्तर पर लिए जाएं और लोगों की भागीदारी बढ़े। संविधान ने स्पष्ट प्रावधान किया है कि हर पांच साल में पंचायत चुनाव अनिवार्य रूप से कराए जाएं। यदि किसी कारणवश पंचायत भंग होती है, तो छह महीने के भीतर चुनाव कराना जरूरी है। गांवों में विकास योजनाओं का सही लाभ तभी मिल सकता है, जब स्थानीय प्रतिनिधि सक्रिय हों। बिना जनप्रतिनिधियों के कामों में मनमानी व भ्रष्टाचार को भी बढ़ावा मिलता है। दरअसल, पंचायत चुनाव टालने के पीछे अक्सर प्रशासनिक या कानूनी कारणों का हवाला दिया जाता है-जैसे आरक्षण का निर्धारण, परिसीमन या अदालतों में लंबित मामले। ऐसा कहने वालों की भी कमी नहीं है कि कई सरकारों ने राजनीतिक समीकरणों के चलते चुनाव टाल दिए। पंचायतें लोकतंत्र की पहली सीढ़ी हैं। पंचायतों से निकले कई जनप्रतिनिधि विधायक व सांसद बनने में सफल हुए हैं। यदि यही कमजोर पड़ गई, तो ऊपर की पूरी संरचना प्रभावित होगी। इसके अलावा, पंचायतों में महिलाओं, अनुसूचित जातियों-जनजातियों व पिछड़े वर्गों को जो प्रतिनिधित्व मिला है, वह भी चुनाव न होने की स्थिति में बाधित होता है। जहां नियमित चुनाव हो रहे हैं, वहां की पंचायतों में लाखों महिलाएं और वंचित वर्ग के लोग नेतृत्व की भूमिका में आए हैं। चुनाव न होने की स्थिति में यह प्रतिनिधित्व स्वतः समाप्त हो जाएगा या सीमित हो जाएगा। पंचायतीराज संस्थाओं को केवल प्रशासनिक इकाई के रूप में नहीं देखा जा सकता। ये सामाजिक सशक्तीकरण का माध्यम भी हैं। गांवों में लोकतंत्र की जड़ें जितनी मजबूत होंगी, देश का लोकतंत्र उतना ही स्थायी और प्रभावी होगा। लोकसभा व विधानसभाओं में महिलाओं को आरक्षण देने के मुद्दे पर घमासान मचा हुआ है। पर, देश की त्रिस्तरीय पंचायत व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की दिशा में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। केंद्रीय पंचायती राज मंत्रालय के फरवरी, 2026 के आंकड़ों के अनुसार, देश के निर्वाचित 24,41,781 पंचायत प्रतिनिधियों में से 12,14,885 महिलाएं हैं।

अमेरिका-ईरान बातचीत पर गहराता संशय

सौरभ वार्ष्णेय

अमेरिका और ईरान के बीच जारी शांति वार्ता एक बार फिर अनिश्चितता के धुंध में घिरती दिखाई दे रही है। हालिया घटनाक्रम—विशेषकर युद्धविराम की मियाद समाप्त होने के करीब पहुंचना, समुद्री टकराव और कड़े बयान—ने इस संवाद की दिशा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। सबसे बड़ी बाधा दोनों देशों के बीच गहरे अविश्वास की है। ईरान स्पष्ट कर चुका है कि वह धमकियों की छाया में बातचीत स्वीकार नहीं करेगा, जबकि अमेरिका अपनी शर्तों पर समझौते के लिए दबाव बनाए हुए है। यही कारण है कि प्रस्तावित दूसरे दौर की वार्ता पर भी संशय बना हुआ है। हालात को और जटिल बनाने वाला तत्व है हालिया सैन्य घटनाक्रम। अमेरिका द्वारा होर्मुज़ जलडमरूमध्य के पास ईरानी जहाज को जब्त करना और नौसैनिक नाकेबंदी जारी रखना, ईरान के लिए उकसावे जैसा कदम माना जा रहा है। इससे न केवल वार्ता का माहौल बिगड़ा है, बल्कि ईरान ने इसे युद्धविराम का उल्लंघन तक बताया है। वास्तव में, यह संकट केवल द्विपक्षीय नहीं बल्कि वैश्विक महत्व का है। होर्मुज़ जलडमरूमध्य दुनिया की ऊर्जा आपूर्ति का प्रमुख मार्ग है, और यहां तनाव बढऩे का सीधा असर तेल कीमतों और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। ऐसे में खाड़ी देशों की चिंताएं भी बढ़ गई हैं, जिन्हें डर है कि यह वार्ता ईरान के क्षेत्रीय प्रभाव को और मजबूत कर सकती है।

अमेरिका- ईरान शांति वार्ता का भविष्य काफी हद तक होर्मुज़ जलडमरूमध्य पर निर्भर करता है। यह जलडमरूमध्य केवल एक भौगोलिक मार्ग नहीं, बल्कि वैश्विक ऊर्जा सुरक्षा और सामरिक संतुलन का केंद्र है। दुनिया के लगभग एक-तिहाई कच्चे तेल का व्यापार इसी रास्ते से गुजरता है, इसलिए यहां किसी भी तरह का तनाव वैश्विक अर्थव्यवस्था को सीधे प्रभावित करता है।ईरान लंबे समय से इस जलडमरूमध्य को अपने सामरिक दबाव के साधन के रूप में इस्तेमाल करता रहा है। जब-जब अमेरिका या उसके सहयोगी देशों के साथ तनाव बढ़ता है, तब-तब ईरान द्वारा होर्मुज़ को बंद करने या वहां सैन्य गतिविधि बढ़ाने की चेतावनी दी जाती है। इसके जवाब में

अमेरिका अपनी नौसैनिक मौजूदगी बढ़ाकर यह संदेश देता है कि वह इस मार्ग को हर हाल में खुला रखेगा। यही टकराव शांति वार्ता की दिशा और गति को प्रभावित करता है। यदि ईरान होर्मुज़ जलडमरूमध्य को लेकर लचीला रुख अपनाता है और अंतरराष्ट्रीय नौवहन की सुरक्षा की गारंटी देता है, तो यह विश्वास बहाली की दिशा में एक बड़ा कदम हो सकता है। इससे अमेरिका और पश्चिमी देशों को यह संकेत मिलेगा कि ईरान केवल टकराव की नीति नहीं, बल्कि सहयोग की राह भी अपनाना चाहता है। इसके विपरीत, यदि ईरान इस मार्ग को दबाव की रणनीति के रूप में इस्तेमाल करता रहा, तो वार्ता में अविश्वास बना रहेगा और समझौते की संभावनाएं कमजोर पड़ेंगी।भारत जैसे ऊर्जा आयातक देशों के लिए भी होर्मुज़ जलडमरूमध्य का महत्व अत्यधिक है। यहां स्थिरता से तेल की कीमतों में संतुलन बना रहता है, जबकि किसी भी संकट से महंगाई और आर्थिक दबाव बढ़ सकता है। इसलिए भारत सहित कई देश चाहते हैं कि अमेरिका-ईरान वार्ता सकारात्मक दिशा में आगे बढ़े और इस महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग की सुरक्षा सुनिश्चित हो।यह कहा जा सकता है कि होर्मुज़ जलडमरूमध्य केवल एक सामरिक बिंदु नहीं, बल्कि शांति वार्ता की कुंजी' है। यदि यहां स्थिरता बनी रहती है, तो अमेरिका-ईरान संबंधों में सुधार की संभावना मजबूत होगी। लेकिन यदि यह क्षेत्र तनाव का केंद्र बना रहता है, तो शांति वार्ता भी अनिश्चितता और अविश्वास के भंवर में फंसी रहेगी।

अमेरिका और ईरान के बीच लंबे समय से चल रही तनातनी के बीच शांति वार्ता की कोशिशें बार-बार शुरू होती हैं, लेकिन हर बार किसी न किसी कारण से बाधित हो जाती हैं। हाल के घटनाक्रम भी यही संकेत देते हैं कि दोनों देशों के बीच अविश्वास की खाई इतनी गहरी है कि स्थायी समाधान तक पहुँचना आसान नहीं है।सबसे बड़ी रुकावट है आपसी अविश्वास। अमेरिका और ईरान के बीच संबंध 2015 के ईरान परमाणु समझौता के बाद कुछ बेहतर हुए थे, लेकिन 2018 में अमेरिका के इससे बाहर निकलने के फैसले ने विश्वास की नींव को हिला दिया। इसके बाद से ईरान ने भी अपने परमाणु कार्यक्रम को तेज किया, जिससे तनाव और बढ़ गया। दूसरी बड़ी समस्या है राजनीतिक दबाव। अमेरिका में आंतरिक राजनीति और बदलती सरकारों की नीतियाँ वार्ता को अस्थिर बनाती हैं, वहीं ईरान में कट्टरपंथी और सुधारवादी गुटों के बीच मतभेद किसी भी समझौते को कमजोर कर देते हैं। दोनों देशों में नेतृत्व परिवर्तन के साथ नीतियों का बदलना वार्ता की निरंतरता को प्रभावित करता है।तीसरा कारण क्षेत्रीय भू-राजनीति है। मध्य पूर्व में इज़राइल, सऊदी अरब जैसे देशों की चिंताएँ भी इस वार्ता को प्रभावित करती हैं। ये देश ईरान की बढ़ती शक्ति और उसके परमाणु कार्यक्रम को अपने लिए खतरा मानते हैं, जिससे अमेरिका पर सख्त रुख अपनाने का दबाव बढ़ता है।आर्थिक प्रतिबंध भी एक बड़ी बाधा हैं। अमेरिका द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों ने ईरान की अर्थव्यवस्था को गंभीर रूप से प्रभावित किया है, और ईरान की पहली मांग ही इन प्रतिबंधों को हटाने की रहती है। वहीं अमेरिका चाहता है कि ईरान पहले अपने परमाणु कार्यक्रम और क्षेत्रीय गतिविधियों पर नियंत्रण लगाए। यही पहले कौन झुके की स्थिति वार्ता को गतिरोध में डाल देती है।इन सबके बीच कूटनीतिक प्रयास पूरी तरह बंद नहीं हुए हैं। कई बार अप्रत्यक्ष वार्ताओं और मध्यस्थ देशों की भूमिका से बातचीत आगे बढ़ती दिखती है, लेकिन ठोस परिणाम अभी भी दूर हैं।अमेरिका ईरान शांति वार्ता में रुकावटें केवल कूटनीतिक नहीं, बल्कि राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक जटिलताओं से जुड़ी हैं। जब तक दोनों पक्ष लचीला रुख नहीं अपनाते और आपसी विश्वास बहाली के ठोस कदम नहीं उठाते, तब तक स्थायी शांति की राह कठिन बनी रहेगी।

परिसीमन की सियासत और चुनावी हवा का बदलता रुख

कांतिलाल मांडोत

भारतीय राजनीति में चुनाव केवल मतों का गणित नहीं होता, बल्कि यह भावनाओं, पहचान, रणनीतियों और समय-समय पर बदलते नैरेटिव का एक जटिल मिश्रण होता है। हाल के घटनाक्रमों में महिला आरक्षण से जुड़ा संविधान संशोधन बिल का संसद में गिरना और परिसीमन बिल का पेश न होना, दो ऐसे मोड़ साबित हुए हैं जिन्होंने चुनावी राजनीति की दिशा और भाषा दोनों को बदल दिया है। विशेषकर पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु जैसे राज्यों में यह बदलाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है, जहां सत्तारूढ़ और विपक्षी दल अपने-अपने हिसाब से नए मुद्दे गढ़ रहे हैं और पुराने विमर्शों को पीछे छोड़ रहे हैं।

पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी ने जिस तेजी से अपनी चुनावी रणनीति को बदला है, वह उनकी राजनीतिक समझ और समय की नब्ज पकड़ने की क्षमता को दर्शाता है। महिला आरक्षण बिल के गिरने के बाद उन्होंने परिसीमन को केंद्र में रखकर एक नया आक्रामक अभियान शुरू किया है। पहले जहां एसआईआर जैसे मुद्दे को बंगाल की अस्मिता से जोड़ा जा रहा था, वहीं अब परिसीमन को देश को तोड़ने की साजिश के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। यह बदलाव केवल भाषाई नहीं बल्कि पूरी राजनीतिक दिशा को बदलने वाला है।

उत्तर बंगाल, जहां भाजपा ने पिछली बार मजबूत प्रदर्शन किया था, अब इस नए नैरेटिव का केंद्र बन गया है। चाय बागानों में काम करने वाले लाखों मजदूरों तक पहुंचने के लिए तृणमूल कांग्रेस ने घर-घर अभियान शुरू किया है। यहां अब रोजगार, मजदूरी और जमीन के अधिकार जैसे मुद्दों की जगह परिसीमन को लेकर भय और असुरक्षा का माहौल बनाया जा रहा है। ममता बनर्जी यह संदेश देने की कोशिश कर रही हैं कि यदि परिसीमन लागू होता, तो कई जिलों की पहचान ही खत्म हो जाती। यह एक ऐसा भावनात्मक तर्क है जो सीधे जनता के मन में अस्मिता के सवाल को जगाता है।

दूसरी ओर अभिषेक बनर्जी जैसे नेता इस मुद्दे को राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा की कमजोरी के रूप में पेश कर रहे हैं। उनका कहना है कि संसद में जो हुआ, वह केवल शुरुआत है और इसका असर राज्यों में भी दिखेगा। यह बयान न केवल आत्मविश्वास दर्शाता है बल्कि कार्यकर्ताओं

में ऊर्जा भरने का प्रयास भी है।

तमिलनाडु में स्थिति और भी रोचक है। यहां द्रविड़ मुनेत्र कड़गम ने बेहद तेजी से चुनावी हवा को अपने पक्ष में मोड़ने का काम किया है। तीन दिन पहले तक परिसीमन बिल सबसे बड़ा मुद्दा था, लेकिन अब तमिल अस्मिता चुनाव का केंद्रीय विषय बन चुकी है। एम. के. स्टालिन को इस पूरे घटनाक्रम में एक विजेता के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, मानो उन्होंने केंद्र के खिलाफ एक बड़ी लड़ाई जीत ली हो।

डीएमके के कार्यकर्ता गांव-गांव जाकर द्रविड़ गौरव के पर्चे बांट रहे हैं और यह संदेश दे रहे हैं कि यह केवल राजनीतिक लड़ाई नहीं बल्कि तमिल पहचान की रक्षा का प्रश्न है। इस रणनीति का असर यह हुआ है कि चुनावी विमर्श पूरी तरह बदल गया है। अब यह केवल सीटों के बंटवारे का मुद्दा नहीं रहा, बल्कि यह सांस्कृतिक और क्षेत्रीय अस्मिता का प्रश्न बन गया है।

भाजपा के लिए यह स्थिति चुनौतीपूर्ण बन गई है। के. अन्नामलाई लगातार यह कह रहे हैं कि परिसीमन से तमिलनाडु को कोई नुकसान नहीं होता, लेकिन उनकी बात उतनी प्रभावी तरीके से जनता तक नहीं पहुंच पा रही है। इसके विपरीत डीएमके का संदेश ज्यादा संगठित और भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ है, जिससे वह ज्यादा असरदार साबित हो रहा है।

एनडीए की सहयोगी एआईएडीएमके एक असमंजस की स्थिति में है। वह न तो खुलकर परिसीमन बिल के खिलाफ बोल पा रही है और न ही तमिल अस्मिता के मुद्दे पर पूरी तरह डीएमके का विरोध कर पा रही है। यह स्थिति उसे चुनावी मैदान में कमजोर बनाती है।

इस पूरे घटनाक्रम में एक और दिलचस्प पहलू उभरकर सामने आया है, वह है नए चेहरों का उदय। अभिनेता विजय ने इस मुद्दे को एक अवसर के रूप में लिया है और अपनी पार्टी के जरिए तमिलनाडु का हक जैसे संदेशों को डिजिटल माध्यम से फैलाया है। यह दिखाता है कि कैसे बदलते राजनीतिक माहौल में नए खिलाड़ी भी अपनी जगह बना सकते हैं।

यदि व्यापक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो यह पहली बार नहीं है जब चुनाव से ठीक पहले मुद्दों में इतना बड़ा बदलाव आया हो। पश्चिम बंगाल में 2011 में परिवर्तन का नारा और 2021 में खेला होबे जैसे अभियान यह साबित करते हैं कि सही समय पर सही नैरेटिव चुनाव की दिशा बदल सकता है। इसी तरह तमिलनाडु में 1967 और 2016 के चुनावों में भी आखिरी समय में मुद्दों के बदलने से परिणाम प्रभावित हुए थे। इस बार भी वही पैटर्न दोहराया जा रहा है, लेकिन एक अंतर के साथ। इस बार मुद्दे केवल स्थानीय नहीं हैं, बल्कि राष्ट्रीय नीतियों से जुड़े हुए हैं। परिसीमन जैसे विषय को लेकर क्षेत्रीय अस्मिता का उभार यह दिखाता है कि भारत की संघीय राजनीति में राज्य और केंद्र के बीच संतुलन का सवाल कितना संवेदनशील है।

भाजपा की स्थिति भी दिलचस्प है। एक तरफ वह संसद में बिल गिरने के बावजूद इसे अपनी रणनीतिक जीत के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश कर रही है, वहीं दूसरी तरफ राज्यों में उसे नए नैरेटिव का सामना करना पड़ रहा है। यह विरोधाभास उसके लिए चुनौती बन सकता है। दूसरी ओर विपक्ष, जो इस घटनाक्रम से उत्साहित है, कहीं न कहीं आंतरिक असंतोष और भ्रम का भी शिकार दिखाई देता है। अंततः यह स्पष्ट है कि आने वाले चुनाव केवल नीतियों या वादों पर नहीं बल्कि भावनाओं, पहचान और धारणा की लड़ाई पर आधारित होंगे। परिसीमन का मुद्दा केवल एक विधायी प्रक्रिया नहीं रह गया है, बल्कि यह राजनीतिक हथियार बन चुका है। पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में जिस तरह से इसे अलग-अलग रूपों में प्रस्तुत किया जा रहा है, वह भारतीय राजनीति की विविधता और जटिलता दोनों को दर्शाता है।

अब सबकी नजर चुनावी परिणामों पर है। क्या भाजपा इस बदलती हवा के बावजूद अपनी पकड़ बनाए रख पाएगी, या विपक्ष की नई रणनीतियां उसे पीछे छोड़ देंगी—यह सवाल अभी खुला है। लेकिन इतना तय है कि यह चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का नहीं, बल्कि राजनीतिक विमर्श के नए स्वरूप का भी संकेत देगा।

क्या है भारत-रूस का रेलॉस समझौता?

अभिनय आकाश

दो भाई और दोनों तबाही। चीन, पाकिस्तान और यूएस की हेकड़ी निकाल दी। एक पैक्ट, एक समझौता जो हुआ है भारत और रूस के बीच। भारत और रूस के बीच बढ़ते द्विपक्षीय संबंधों और गहराते डिफेंस कोऑपरेशन को दर्शाते हुए एक अहम समझौता औपचारिक रूप से लागू कर दिया गया है। भारत और रशिया के बीच द रेलॉस एग्रीमेंट हुआ है। इस फैक्ट के तहत दोनों देश एक दूसरे की टेरिटरी में अधिकतम 3000 मिलिट्री पर्सनल तैनात कर सकेंगे। सिर्फ सैनिक ही नहीं इस एग्रीमेंट के तहत शिप्स और एयरक्राफ्ट को भी एक दूसरे के क्षेत्र में तैनात करने की अनुमति दे दी गई है। यह समझौता रेसिप्रोकल एक्सचेंज ऑफ लॉजिस्टिक्स एग्रीमेंट यानी रेलोस से जुड़ा हुआ है। जिसमें जॉइंट मिलिट्री एक्सरसाइजज़, ट्रेनिंग और ह्यूमैनिटेरियन मिशनंस जैसे पहलू भी शामिल हैं। हाल ही में भारत दौरे से पहले रूसी राष्ट्रपति व्लादमीर पुतिन ने इस इंटर गवर्नमेंटल एग्रीमेंट को रटिफाई करने वाले कानून पर हस्ताक्षर कर दिए थे। इस एग्रीमेंट का मकसद भारत और रूस के बीच मिलिट्री डिप्लॉयमेंट, पोर्ट्स पर वॉरशिप्स की डॉकिंग और मिलिट्री एयरक्राफ्ट के लिए एयर स्पेस और एयर फील्ड इंफ्रास्ट्रक्चर के इस्तेमाल के लिए एक क्लियर फ्रेमवर्क तैयार करना है। द इंडियन रशियन रेसिप्रोकल एक्सचेंज ऑफ लॉजिस्टिक्स सपोर्ट एग्रीमेंट। इस एग्रीमेंट के तहत जरूरत पड़ने पर भारतीय सेना रशिया के कुछ चुनिंदा सैन्य ठिकानों का इस्तेमाल कर पाएगी। ठीक वैसे ही रशिया भी जरूरत पड़ी तो भारत के कुछ सैन्य ठिकानों का इस्तेमाल करेगा। यह समझौता कुछ कुछ-कुछ वैसा ही है जैसे अमेरिका मित्र देशों के सैन्य ठिकानों को अपने मिशन के लिए इस्तेमाल करता है। ठीक वैसे ही भारत और रशिया समय आने पर इसी तरह से एक दूसरे की जमीन का इस्तेमाल करेंगे अगर युद्ध में जरूरत पड़ती। जब दुनिया की दूसरी और चौथी सबसे ताकतवर सेनाएं एक साथ मिलकर खड़ी होंगी तो दुनिया की कोई भी ताकत उन्हें रोक नहीं पाएगी। रूस और भारत ने अपनी दोस्ती को एक कदम आगे ले जाते हुए एक ऐसी रणनीतिक साझेदारी की है जिसे देखकर दुनिया की कई महाशक्तियों के माथे पर सिकन नजर आने लगी है। भारत और रूस ने एक ऐसा समझौता किया जिससे दोनों देश एक दूसरे के सैन्य ठिकानों का इस्तेमाल कर पाएंगे और इससे भारतीय सेना की पहुंच आर्कटिक क्षेत्र तक और रूस की पहुंच हिंद महासागर तक हो जाएगी। इन दोनों ताकतवर देशों ने पल-पल बदल रही वैश्विक परिस्थितियों और जंग के माहौल के बीच यह समझौता अमल में लाकर दुश्मनों को परेशान कर दिया है। भारत और रूस के बीच द रेलॉस एग्रीमेंट हुआ है। इसके तहत भारत और रूस एक दूसरे के सैन्य ठिकानों पर अस्थाई बेस बना सकेंगे। ईरान युद्ध में हमने देखा कि हवाई हमलों के लिए अमेरिका ने यूरोपीय देशों में बने अपने सैन्य ठिकानों की मदद ली। अमेरिका से सीधे ईरान पर हमले करना खर्चीला है और समय भी काफी लगता है। इसी वजह से अमेरिका ने मिडिल ईस्ट के अपने ऑपरेशंस के लिए यूरोपीय देशों और मिडिल ईस्ट के भी कई देशों में अपने सैन्य ठिकाने बनाए हैं। इनमें कुछ स्थाई है और कुछ अस्थाई। ठीक वैसे ही अब से भारत और रूस एक दूसरे के सैनिक ठिकानों का इस्तेमाल कर पाएंगे। भारत के लिए रिलोस एग्रीमेंट रणनीतिक रूप से काफी फायदेमंद है। इससे भारतीय सेना की पहुंच आर्थिक क्षेत्र तक हो जाएगी। दुनिया की लगभग सभी महाशक्तियां जैसे अमेरिका, रूस और चाइना इस क्षेत्र में अपनी मौजूदगी बढ़ा रहे हैं। अभी तक भारत और रूस एक दूसरे के किन सैन्य ठिकानों का इस्तेमाल करेंगे इसके बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन एक्सपर्ट्स के मुताबिक इस समझौते के बाद भारतीय सेना रूस के एक बड़े पोर्ट मुरबंस और नॉर्दन प्लीट के मुख्यालय सिविरो म्स पर अपनी तैनाती कर सकता है। अगर ऐसा हुआ, तो इससे भारतीय नौसेना की वैश्विक मौजूदगी बढ़ेगी और दूरदराज के सैन्य ऑपरेशन आसान हो जाएंगे। युद्ध की स्थिति में युद्धपोतों को बार-बार भारत वापस नहीं आना पड़ेगा। इसके अलावा चाइना के पास ब्लादी बोस्टोक पर भी भारतीय सैनिक तैनात किए जा सकते हैं।

पुरुषों के मुकाबले महिलाओं में अधिक होती है यूटीआई की समस्या, जानिए इससे बचने के उपाय... गर्मी के मौसम में पानी की कमी के कारण किडनी उचित मात्रा में यूरिन को शरीर से बाहर नहीं निकाल पाती है। ऐसे में यूटीआई का खतरा बढऩे की आशंका रहती है। पुरुषों की तुलना में महिलाओं में इसके मामले अधिक हैं। जिसका कारण बैक्टीरियल इंफेक्शन है। ये बैक्टीरिया यूरेथ्रा के जरिए यूरीनरी ट्रैक में प्रवेश कर रोग का कारण बनते हैं। यूटीआई की समस्या एक्यूट और क्रांनिक दोनों तरह से हो सकती है। इसका खतरा उम्रवार सभी वर्गों को अलग-अलग कारणों से प्रभावित करता है।

महिलाओं में अधिक होती है युटीआई की समस्या

कारण बच्चों में

बच्चों में यूरीनरी ट्रैक इंफेक्शन का कारण यूरिन के रास्ते में रुकावट, न्यूरोजेनिक ब्लैडर व अन्य जन्मजात विकृतियां हैं। उनमें यूरेथ्रा से यूरीनरी ट्रैक तक बैक्टीरिया का हमला इस रोग की वजह बनता है।

पुरुषों में

पुरुषों में 50 साल की उम्र के बाद यूटीआई की समस्या अधिक होती है। जिसकी मुख्य वजह प्रोस्टेट का बढऩा है। ऐसे में यूरिन पूरी तरह बाहर नहीं निकल पाता व लगातार स्टोर होने से इंफेक्शन का खतरा रहता है। डायबिटीज रोग में लापरवाही से पेक्रियाज शुगर के स्तर को असामान्य कर देता है जिससे यूटीआई की आशंका रहती है। ब्लैडर/किडनी संबंधी परेशानी या कमजोर इम्युनिटी से भी यूटीआई होता है।

महिलाओं में

यौन संबंधों व अंग के आसपास इंफेक्शन होने और लंबे समय तक यूरिन रोकने की आदत क्रांनिक यूटीआई की समस्या को बढ़ाती है। यूरिन को रोके रखने की क्षमता वाली मांसपेशी कमजोर होने लगती हैं। इसे ओवर एक्टिव ब्लैडर कहते हैं। कई मामलों में सिजेरियन, सर्जरी व महिला का बार-बार गर्भधारण करना भी यूटीआई की आशंका बढ़ा देता है।

लक्षण

एक्यूट यूटीआई में यूरिन करने के तुरंत बाद ही बार-बार यूरिन आने, रोकने की क्षमता कम होने, यूरिन करते समय दर्द व जलन और हल्का बुखार आता है। क्रांनिक यूटीआई में इलाज के बाद भी इंफेक्शन बार-बार होता है।
मूत्रतंत्र से जुड़े अन्य अंग प्रभावित होते हैं जिससे गहरे रंग का यूरिन आने, पेट व पीठ के निचले हिस्से में दर्द के साथ ही ब्लैडर के आसपास भी दर्द होता है।

अन्य कारण

पानी की कमी : गर्मियों में पानी की पर्याप्त मात्रा न पीने से पेशाब कम बनता है और शरीर में मौजूद फ्लूड पसीने के जरिए निकल जाता है। संक्रमण : गंदे अंडरगारमेंट्स पहनने, साफ-सफाई के अभाव वाले टांयलेट या जगहों पर यूरिन

करने से भी संक्रमण की आशंका बढ़ जाती है। इसके अलावा दूषित भोजन व पानी के संपर्क में आने के दौरान बाहरी कीटाणु यूरेथ्रा में पहुंचकर इंफेक्शन बढ़ाते हैं।

तनाव

कई बार तनाव की स्थिति में यूरिन पूरी तरह से बाहर नहीं निकल पाता या व्यक्ति को बार-बार यूरिन आने की इच्छा होती है।

ध्यान रखें

दिन में 4-5 लीटर पानी पीएं ताकि कीटाणु बाहर निकल जाएं। फलों का जूस पीते रहें। कब्ज न होने दें, पेट साफ रखें। यूरिन को लंबे समय तक न रोकें।

जांच

यूरिन एग्जाम व यूरिन कल्चर टैस्ट कर इसका कारण का पता करते हैं।

इलाज

एक्यूट की स्थिति में 2-3 दिन तक एंटीबायोटिक दवा और क्रांनिक यूटीआई की स्थिति में लो डोज में प्रोफाइलेक्सिस गर्भावस्था के दौरान या डायबिटिक को यह समस्या है तो 2-3 हफ्ते तक दवा देते हैं।

गुणों से भरपूर है गन्ने का रस

भारत में सबसे ज्यादा गन्ना उगाया जाता है। गन्ने के रस से ज्यादा पोषक और स्वस्थ रखने वाला कोई और रस नहीं हो सकता। अगर आप दिर-भर की थकान को दूर करने के लिए एक गिलास गन्ने का रस पीएगें तो आपको स्वाद भरी ताजगी मिल जाएगी।

गन्ने का रस में सेहत के लिए बहुत गुणकारी है। यह रस विटामिन ए,सी ,बी, कैल्शियम, फास्फोरस, पोटेशियम, और कॉपर से भरपूर होता है। इसे पीने से हड्डियां मजबूत बनती हैं और दांतों की समस्या भी कम होती है। आज हम आपको बताएगें कि कैसे गन्ने का रस दूर करता है इन बिमारीयों से।

- **कैंसर से बचाव करता है:** गन्ने के रस में कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटेशियम, आयरन और मैंगनीज जैसे तत्व अच्छी मात्रा में हैं जो शरीर को कैंसर जैसी बिमारी से लड़ने के लिए सहायक होता हैं।
- **मुहांसों से छुटकारा:** गन्ने का रस पीने से त्वचा को अल्फा हाइड्रॉक्सी एसिड मिलता है जो मुहांसे दूर करने और सेहतमंद त्वचा के लिहाज से फायदेमंद है।
- **किडनी के लिए फायदेमंद:** गन्ने के रस में प्रोटीन अच्छी मात्रा में है। इसमें नींबू और नारियल पानी मिलाकर पीने से किडनी की युरीन इन्फेक्शन, एसटीडी और पत्थर जैसी समस्यामए दूर होती है।
- **पाचनतंत्र के लिए फायदेमंद:** गन्ने का रस पाचन तंत्र के साथ-साथ पेट की बीमारियों के लिए भी बहुत फायदेमंद है क्योकि इसमें पोटैशियम की मात्रा ज्यादा होती है। इसे पीने से कब्ज की समस्या भी दूर होती है।
- **नाखूनों में आती है चमक :** यह रस पीने से नाखूनों पर से सफेद धब्बे हटाते है और नाखून चमकदार होते हैं।

वजन बढ़ाने वाला पाउडर खाने से पहले जान लें साइड इफैक्ट्स

इस तेज रफ्तार और टैक्नोलॉजी से भरपूर जमाने में लोग फटाफट से हर काम को करना चाहते हैं। बात सिक्स पैक, बढ़ते हुए वजन को कम करने की हो या फिर दूबले शरीर को मोटा करने की, लोग किसी काम में भी इंतजार नहीं करना चाहते। सिक्स पैक, बॉडी, वजन बढ़ाने की चाहत में वह प्रोटीन शेक या बांडी सप्लीमेंट्स लेने तक लेने शुरू कर देते हैं लेकिन शायद वह इनसे होने वाले साइड इफैक्ट्स के बारे में नहीं जानते। एक्सरसाइज, वर्कआउट और योग का हमारे शरीर को कोई नुकसान नहीं होता लेकिन गलत चीजों से बांडी बनाने से हम तरह तरह की बीमारियों को खुद ही न्योता देते हैं जो कि सही नहीं है।

क्यों लेते हैं वजन बनाने वाले पाउडर? : हमारे शरीर को विटामिन, मिनरल्स, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन और फाइबर अगर सही मात्रा में मिल जाएं तो हमारा शरीर तंदुरुस्त रह सकता है लेकिन बिगड़ती लाइफस्टाइल, वर्कआउट न करने और संपूर्ण आहार न लेने के कारण ही लोग वजन बढ़ाने वाले पाउडर लेने लगते हैं। आज हम आपको बताते हैं कि वजन बढ़ाने वाल पाऊडर लेने से हमारे शरीर में किस तरह की समस्याएं पैदा हो सकती हैं। वजन बढ़ाने वाले पाउडर लेने से किडनी (गुर्दे) को खतरा होता है। क्रिएटीन व कैल्शियम ज्यादा मात्रा में लेने से गुर्दे की पथरी की भी समस्या हो सकती है।

डांस थेरेपी नाचें और स्वस्थ रहें

नृत्य का अब मनोरंजन के प्राचीन माध्यम से चिकित्सा के अत्याधुनिक औजार तौर पर इस्तेमाल किया जाने लगा है। डांस थेरेपी की शुरुआत बेशक कुछ दशकों पुरानी हो चुकी है, लेकिन इधर के वर्षों में दुनिया भर में इसका इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है और शारीरिक तथा मानसिक रोग निवारण में इसकी खुराक अचूक रही है।

जिम के साथ डांस क्लास

देश में डांस थेरेपी की छोटे बड़े दर्जनों संस्थान संचालित हैं, जिसमें पंजीकरण कराने वालों में 23 से 45 वर्ष के युवावर्ग की हिस्सेदारी सबसे अधिक है। व्यायाम में डांस थेरेपी का दखल एरोबिक एक्सरसाइज के साथ बढ़ा, जिसमें केवल वेस्टर्न ध्वनि पर शरीर की अतिरिक्त कैलोरी बर्न करने को ही डांस थेरेपी का हिस्सा माना जाता था, लेकिन संगठित जिम संचालन की तरह ही अब डांस थेरेपी का क्षेत्र भी व्यापक हो गया है।

कुछ प्रचलित डांस विधियां

रूंबा मांसपेशियों का बेहतर सामंजस्य और मस्तिष्क की एकाग्रता के लिए रूंबा डांस कारगर माना गया है। साधारण व्यायाम से डांस थेरेपी की शुरुआत करने के बाद रूंबा की नियमित 20 से 30 मिनट की ट्रेनिंग फुर्तिला बनाती है, जिसे बैन बोन और कॉलर बोन के दर्द के लिए भी कारगर माना गया है।

क्या हैं डांस के सीधे फायदे

कार्डियोवस्कुलर समस्याओं को दूर रखने के लिए डांस को बेहतर माना गया है, जिससे न सिर्फ कैलोरी बर्न होती है, बल्कि रक्तप्रवाह सही रहने से हार्ट अटैक की संभावना को दूर किया जा सकता है। बैले व सालसा डांस आत्मविश्वास बढ़ाता है, मस्तिष्क की एकाग्रता को बढ़ाने के लिए भी डांस थेरेपी को सबसे सटीक माना गया है। विशेषज्ञों का कहना है कि नियमित डांस अभ्यास से नकारात्मक विचारों को दूर किया जा सकता है। डांस के साथ योग व आसान का प्रयोग स्वस्थ रहने का सबसे कारगर तरीका है। नियमित व्यायाम की अपेक्षा डांस को वजन कम करने का अधिक बेहतर उपाय माना गया है। डांस थेरेपी व्यायाम का अधिक रुचिकर विकल्प बनकर उभरा है, जिससे वजन को नियंत्रित रखा जा सकता है।

स्वास्थ्य संस्थानों में भी बढ़ा दखल

जाने माने स्वास्थ्य संस्थानों के पुनर्निवास केन्द्र में डांस मूवमेंट थेरेपी डीएमटी का प्रयोग शुरू कर दिया गया है। इंडियन स्पाइनल इंजरी सेंटर में वैकल्पिक चिकित्सा विधि के तहत मरीजों की डांस क्लास लगाई जाती है। फिजियोथेरेपिस्ट के सान्निध्य में मरीजों को शुरु में मामूली स्टेप सिखाए जाते हैं, जिसके बाद मांसपेशियों में खिंचाव व दोबारा मूवमेंट शुरू करने के लिए तीन से चार सप्ताह की क्लास लगाई जाती है। पार्किन्सन व सीएचडी बीमारियों के लिए डांस थेरेपी का चिकित्सीय प्रयोग शुरू किया जा चुका है।

जीवा: बोन डेन्सिटी को मजबूत करने के लिए जीवा की अहम भूमिका है। कार्डियोवस्कुलर समस्या को भी जीवा के जरिए ही दूर किया जाता है। देखा गया है कि श्वसन तंत्र संबंधी परेशानियां भी जीवा के नियमित अभ्यास से ठीक हो जाती हैं।

सांबा: कूल्हे की समस्याओं के निजात के लिए सांबा को किसी एक पार्टनर के साथ किया जाता है। पेलविस और पैरों की मांसपेशियों की दिक्कतों के लिए भी सांबा का प्रयोग बेहतर माना गया है।

पास्को डोबल: पास्को सिंगापुर का सबसे प्रसिद्ध डांस स्टेप है, जिसे रशियन संगीत के साथ किया जाता है। पास्को के लिए वजन का नियंत्रित होना जरूरी है। कैलोरी बर्न करने और शरीर की टोनिंग के लिए पास्को से बेहतर और कोई डांस स्टेप नहीं हो सकता।

सालसा: तनाव मुक्ति के लिए सालसा को सबसे सटीक माना गया है। डांस विशेषज्ञ की मानें तो 70 फीसदी युवा सालसा को तनाव दूर करने व आत्मविश्वास करने के लिए करते हैं, जिसके सफल परिणाम भी देखे गए हैं।

नोट इसके अलावा, वाल्ट्ज, फॉक्स ट्रॉट, क्विक, टैंगो, वाइनेक्स और बैल्बो जैसे पश्चिमी नृत्य स्वस्थ रहने की कुंजी माने जाने लगे हैं।

कॉरपोरेट दुनिया हो या स्कूल कॉलेज की, पार्टी या फिर रैंप पर चलने की बात हो, पहनावे में हाई हील के जूते या सैंडल पहनना आम बात है। इन्हें पहन कर लगता है कि उनका आत्मविश्वास बढ़ गया है। चाल तो बदलेगी ही, लेकिन उन्हें पहन कर लटक-मटक के साथ चलने के लिए उन्हें क्या-क्या दांव पर लगाना पड़ता है, इसका अंदाजा पहले नहीं हो पाता। बाद में जब पैरों से लेकर रीढ़ की हड्डी तक में दर्द की शिकायत होने लगती है तो पता चलता है कि यह फैशन बड़ा ही दुखदायी है। चाल व शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है।

आजकल की किशोरियों में यह खतरा अधिक माना जाता है क्योंकि वे छोटी आयु से ही ऊंची एड़ी के जूते पहनने लगती हैं। बड़े होने पर उन्हें कूल्हों का दर्द से लेकर कमर दर्द का जोखिम अधिक रहता है क्योंकि किशोरावास्था में उनकी मेरुदंड पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

इससे मोच की समस्या आम तौर पर हो जाती है क्योंकि एड़ी उठा कर चलना कोई आसान काम नहीं है। परिणामस्वरूप स्प्रेन ऑफ द फुट यानी पैर में मोच। यह एक आम समस्या है जो अक्सर हाई हील के कारण ही होती है। यह समस्या 20 से लेकर 35 वर्ष तक की युवतियों को ज्यादा होती है क्योंकि आजकल ज्यादातर युवतियां फैशन परस्त हैं और अपने आप को मॉडर्न दिखाने के लिए हाई हील पहनना उनका शौक बनता जा रहा है।

शुरुआत में तो इसका प्रभाव सिर्फ पैरों में सूजन के रूप में देखने को ही मिलता है, लेकिन साल दो साल बाद लगातार हील पहनने की वजह से पांव में लगातार दर्द, नसों में खिंचाव, पीठ दर्द और घुटनों में दर्द के रूप में दिक्कतें सामने आती हैं। शुरुआत में बार-बार पांव में मोच आती है और गंभीर रूप से दर्द होता रहता है। इलाज के रूप में जो भी पहनते हैं, उसमें मैट्रोसॉल बार लगानी पड़ती है।

कदम-कदम पर परेशानी

हाल के अनुसंधान से पता चलता है कि लंबे समय तक 'किलर हील्स' पहनने वाली एक-तिहाई महिलाओं की पैरों की अंगुलियों के फूलने (हैमरटोज) से लेकर टांग की नसों में गोखरू (बनियोन) जैसी दर्दनाक स्थायी बीमारियां होने लगती हैं। ऊंची एड़ी के जूतों से पूरे पैर में परेशानी शुरू हो जाती है। जब पैर का बड़ा अंगूठा ठीक से घूम नहीं सकता तो उसकी भरपाई करने के लिए घुटने को घुमाना पड़ता है। परिणामस्वरूप घुटने पर दबाव आने से स्थाई नुकसान हो सकता है। कुछ महिलाएं इस परेशानी से बचने के लिए अपनी चाल को बदल लेती हैं, लेकिन इससे कमर के निचले हिस्से में दर्द होने लगता है।

पांव की शेप का सत्यानाश

हील किसी भी रूप में पहनी जाए तो वह पैर के अगले हिस्से को चौड़ा कर देती है। हाई हील पहनना किसी भी स्त्री के लिए कितना खतरनाक हो सकता है, यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि वो कितना चलती है और कितने समय तक खड़ी रहती है।

अस्पताल ले जाती हैं हाई हील

हाई हील पहनने की वजह से पैरों में सूजन भी रहने लगती है और सबसे ज्यादा असर तो रीढ़ की हड्डी पर पड़ता है। हील पहनने से उस पर प्रेशर पड़ता है जिस कारण हड्डी के एक हिस्से में लगातार दर्द रहने लगता है। एक सर्वे के अनुसार देश की बीस लाख औरतें किसी न किसी रूप में हाई हील के कारण दुर्घटनावश अस्पताल पहुंचती हैं। चिकित्सकों के मुताबिक लंबे समय तक ऊंची एड़ी के जूते या सैंडिल पहनना खतरे से खाली नहीं है। लंबे समय तक ऊंची एड़ी के जूते पहनने से होने वाले नुकसान को लेकर विशेषज्ञों की चिंता बढ़ रही है।

हाई हील से सेहत का कचूमर

दिक्कत है, दर्द है, मगर फैशन है

दस में से एक महिला सप्ताह में कम-से-कम तीन दिन ऊंची एड़ी के जूते पहनती हैं और हाल के सर्वे से पता चला है कि उनमें से एक-तिहाई महिलाएं ऊंची एड़ी के जूतों की वजह से गिर जाती हैं। ऊंची एड़ी के जूते पहनने से आपकी एड़ी ऊंची हो जाती है और ऐसे जूते पहनते ही आपके शरीर का झुकाव आगे की ओर हो जाता है।

कौन करेगा पैरोकारी

ऊंची एड़ी के जूतों की पैरवी में कुछ नहीं कहा जा सकता। औसत महिलाएं ऊंची एड़ी के जूते नहीं पहनतीं, यह उनके लिए बेशक अच्छी बात है। जब आपकी कमर का निचला हिस्सा आगे की ओर झुकता है तो इसका संतुलन बनाए रखने के लिए आपको मेरुदंड की स्थिति में बदलाव करना पड़ता है। इससे पीठ की नसों पर दबाव पड़ता है और इसकी वजह से स्थिति और बदतर हो जाती है। इसकी वजह से साइटिका नामक बीमारी हो सकती है जिसमें नसें खिंच जाती हैं और पैर के नीचे की ओर दर्द रहता है और वह सुन्न हो जाता है।

कभी-कभी पहनें हील

जो महिलाएं अधिकतर ऊंची एड़ी के जूते पहनती हैं, उन्हें नस खिंचने की बीमारी हो जाती है क्योंकि जैसे ही एड़ी ऊपर की ओर उठती है, वैसे ही नस खिंचने लगती है। इसे पुनः खींचकर फैलाना बहुत पीड़ाजनक हो सकता है। तीन या अधिक महिलाओं का एचिली टेंडन खिंच सकता है। यह स्थिति तब की है जब वे प्रतिदिन ऊंची एड़ी नहीं पहनतीं या सप्ताह में एक या दो बार पहनती हैं। कई महिलाओं को हैमरटोज भी हो जाता है क्योंकि टाइट फिटिंग वाले जूते पैर की अंगुलियों को मोड़ देते हैं, अंदर की मांसपेशियां छोटी होने से अंगुलियां हमेशा के लिए मुड़ जाती हैं। अन्य आम शिकायतों में गोखरू, गलत फिटिंग वाले जूतों से अंगूठे के नीचे की हड्डी का बढ़ना, तथाकथित पम्प-बम्प शामिल है जिसमें बम्प स्टाइल के जूतों के फीतों तथा कठोर बैक से एड़ी की हड्डी बढ़ती है।

समस्या होने पर क्या करें

- हाई हील के बजाए फुटवियर के रूप में प्लेन चप्पल पहनें, जिसमें एक समान बोझ पैर पर पड़े।
- अगर दर्द बढ़ने लगे तो डॉक्टर की सलाह लें।
- पैरों, घुटनों, रीढ़ की हड्डी में दर्द होने पर सिकाई करें। चाहें तो गर्म पानी में नमक डालकर सेंक सकते हैं।
- डॉक्टर का सलाह से एक्सरसाइज भी की जा सकती है।
- ज्यादा दर्द रहने पर सलाह से ही दर्द निवारक दवाएं लें।

ऊंची एड़ी के जूतों से होने वाले जोखिम को कम करने के लिए थोड़ी-सी मोटी एड़ी वाले जूते पहनें क्योंकि इससे भार अधिक समानता से फैलेगा। अंदर नरम इंसोल्स पहनने से घुटनों पर पड़ने वाले प्रभाव में कमी आती है। ध्यान रखें आपके जूते की फिटिंग सही हो ताकि वह आगे की ओर न फिसलें। ऐसा होने से उंगलियों पर अधिक दबाव पड़ता है।

नियमित रूप से ऊंची एड़ी के जूते पहनना स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं होता। औपचारिक अवसरों पर थोड़ी देर के लिए उनका उपयोग करना ठीक हो सकता है। यदि आप कुछ घंटे के लिए ऊंची एड़ी के जूते पहनें तो कोई नुकसान नहीं होगा।

कुछ चर्चित केस

- विक्टोरिया बैकहम को भला कौन नहीं जानता। ऊंची एड़ी के जूते पहनना उनका ट्रेडमार्क है, लेकिन ऊंची एड़ी के जूते के प्रति उनके इस प्रेम ने उन्हें अस्पताल पहुंचा दिया था। छह इंच की स्टिलैटो पहनने की वजह उनके पैर में गोखरू हो गया और उनका चलना-फिरना मुश्किल हो गया। लेकिन उनका हाई हील प्रेम इतना जबर्दस्त है कि वे इसे छोड़ना नहीं चाहतीं, बेशक इसकी वजह से उनके पैरों में दर्द रहता है। उनकी पहचान ही यही है।
- रैम्प पर चलते हुए एक मॉडल लड़खड़ा कर गिर गई। हाई हिल की वजह से उसके पैर में सूजन और नस खिंचाव की समस्या हो गई है।
- कई लड़कियां ऑफिस जाने के लिए हाई हील को प्राथमिकता देती थीं। उन्हें क्या पता था कि हाई हील का यह शौक उन्हें रीढ़ की हड्डी की बीमारी दे देगा।

राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय
प्रमुख समाचार

भाजपा ने महापौर, उप-महापौर के लिए प्रत्याशियों की घोषणा की

नई दिल्ली। भाजपा के वरिष्ठ पार्षद प्रवेश वाही दिल्ली के नए महापौर होंगे। भाजपा ने गुरुवार को नामांकन दाखिल करने के अंतिम दिन उनके नाम का एलान किया। एमसीडी में दलीय स्थिति को देखते हुए उनका दिल्ली का अगला महापौर बनना लगभग तय है। क्योंकि सदन में भाजपा को पूर्ण बहुमत प्राप्त है इसके अलावा आम आदमी पार्टी ने महापौर और उपमहापौर का चुनाव नहीं लड़ने का निर्णय लिया है। 29 अप्रैल को निगम सदन की बैठक में महापौर, उपमहापौर और स्थाई समिति के तीन सदस्यों का चुनाव होगा। आम आदमी पार्टी ने अपने कोटे के स्थाई समिति के एक सदस्य के अन्य पदों के लिए अपने उम्मीदवार नहीं उतारे हैं। ऐसे में चुनाव औपचारिकता बनकर रह जाएगा और प्रवेश वाही के नाम पर मुहर लगना तय है। तीन बार पार्षद रह चुके प्रवेश वाही को संगठन में अनुभवी और प्रभावशाली चेहरा माना जाता है। वे पूर्ववर्ती उत्तरी दिल्ली नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

बंगाल में वोटिंग के बीच सुवेंदु की टीएमसी को सीधी चेतावनी

कोलकाता। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेता सुवेंदु अधिकारी ने गुरुवार को पश्चिम बंगाल में चुनाव नियमों का उल्लंघन करने और कानून-व्यवस्था बिगाड़ने के खिलाफ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) को कड़ी चेतावनी जारी की। पश्चिम बंगाल में पहले चरण के 152 विधानसभा क्षेत्रों के लिए मतदान हुआ। नंदीग्राम और भाबनीपुर से भाजपा के उम्मीदवार अधिकारी ने नंदीग्राम विधानसभा क्षेत्र के कई मतदान केंद्रों का दौरा करने के बाद पत्रकारों से बातचीत के दौरान ये टिप्पणियां कीं। भाजपा नेता के अनुसार, सत्ताधारी टीएमसी मतदाताओं को डराने-धमकाने की कोशिश कर रही है, खासकर हिंदुओं को। उन्होंने दोहराया कि वे हिंदू-मुस्लिम ध्रुवीकरण नहीं कर रहे हैं और कहा कि अपराधी टीएमसी के लोग हैं, जो एक विशेष समुदाय से आते हैं। अधिकारी ने कहा आम आदमी, चाहे वह हिंदू हो या मुसलमान, शांति चाहता है। गुंडे लोगों को लूट रहे हैं। जो शांति तोड़ेगा हम उसे तोड़ने का काम करेंगे।

एआईएडीएमके-भाजपा की हार तय है : मणिकम टैगोर

चेन्नई। कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने गुरुवार को तमिलनाडु विधानसभा चुनाव के दौरान तिरुपरनकुंड्रा निर्वाचन क्षेत्र के एक मतदान केंद्र पर अपना वोट डाला। मीडिया से बात करते हुए, टैगोर ने एआईएडीएमके-भाजपा गठबंधन की आलोचना करते हुए उस पर क्षेत्र का राजनीतिकरण करने का आरोप लगाया और उसकी हार की कामना व्यक्त की। उन्होंने तिरुपरनकुंड्रा निर्वाचन क्षेत्र के विकास के लिए एक कुशल विधायक की आवश्यकता पर भी बल दिया। टैगोर ने कहा कि मैंने तिरुपरनकुंड्रा निर्वाचन क्षेत्र में मतदान किया, जहाँ आरएसएस और भाजपा इस समय राजनीति करने की कोशिश कर रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि इस बार भाजपा-एआईएडीएमके उम्मीदवार यहाँ हार जाएँगे। तिरुपरनकुंड्रा का विकास पिछले पाँच वर्षों से रुका हुआ है, इसलिए हमें एक ऐसे विधायक की आवश्यकता है जो स्थानीय निकायों के साथ समन्वय स्थापित कर सके और इस निर्वाचन क्षेत्र की आवाज़ बन सके।

बंगाल को तमिलनाडु की तरह भाजपा से लड़ना होगा : डी राजा

चेन्नई। तमिलनाडु विधानसभा चुनाव के लिए जारी मतदान के बीच, सीपीआई नेता डी राजा ने गुरुवार को डीएमके के नेतृत्व वाले गठबंधन की जीत और भाजपा की हार का विश्वास जताया। अपना वोट डालने के बाद मीडिया से बात करते हुए राजा ने मतदाताओं से बड़ी संख्या में मतदान करने का आग्रह किया। इसके अलावा, पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के संदर्भ में, उन्होंने भाजपा की कड़ी आलोचना की और जोर देकर कहा कि भाजपा को हराने के लिए बंगाल को कड़ी लड़ाई लड़नी होगी। उन्होंने कहा कि हमें इंतजार करना होगा और देखना होगा क्योंकि पश्चिम बंगाल में दो चरणों में चुनाव हो रहे हैं। मेरी राय में, और मेरी पार्टी की भी यही राय है, भाजपा को बंगाल में फायदा उठाने नहीं दिया जाना चाहिए। भाजपा को हराना होगा। जिस तरह तमिलनाडु भाजपा की विनाशकारी विचारधारा के खिलाफ लड़ रहा है, उसी तरह बंगाल की जनता को भी भाजपा से लड़ना होगा और उसे हराना होगा।

उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार ने डाला अपना वोट

मुंबई। पूर्व उपमुख्यमंत्री अजीत पवार के विमान दुर्घटना में निधन के बाद खाली पड़ी सीट बारामती में गुरुवार को मतदान हुआ। बारामती उपचुनाव में अजित पवार की पत्नी और महाराष्ट्र की उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार ने गंगूबाई कांटे जिला परिषद प्राथमिक विद्यालय के एक मतदान केंद्र पर अपना वोट डाला। वोट डालने के बाद उन्होंने लोगों से मतदान केंद्र पहुंच वोटिंग की अपील की। उपमुख्यमंत्री सुनेत्रा पवार ने कहा, बारामती के लोग पिछले 60 वर्षों से पवार साहब के साथ रहे हैं और उनका समर्थन किया है, और यह चुनाव उनके बिना हो रहा है, इसलिए बारामती के लोगों ने इस चुनाव को अपने हाथों में ले लिया है, और यहाँ के लोग उन्हें श्रद्धांजलि के रूप में अपना वोट देना चाहते हैं, और इसी के लिए, आज हर कोई बाहर निकल रहा है। बारामती के लोग जानते हैं कि दादा ने इतने वर्षों में उनके लिए जो काम किया है, आज उसे चुकाने का दिन है, इसलिए लोग उनके लिए अपना कीमती वोट डालना चाहते हैं।

पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी पर गरजे प्रधानमंत्री

झालमुरी मैंने खाई, मिर्ची टीएमसी को लगी : मोदी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में चुनाव के दूसरे चरण से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की आलोचना करते हुए कहा कि उनके द्वारा हाल ही में झालमुरी के सेवन से सत्तारूढ़ पार्टी को जबरदस्त झटका लगा है। 23 अप्रैल, 2026 को कृष्णानगर में एक रैली को संबोधित करते हुए मोदी ने टीएमसी पर घुसपैठियों को पनाह देने और महाजंगल राज को बढ़ावा देने का आरोप लगाया और मतुआ और नामाशूद्र समुदायों को सुरक्षा का आश्वासन दिया। उन्होंने अपनी सरकार बनने के बाद नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) के तहत नागरिकता प्रदान करने की प्रक्रिया में तेजी लाने का भी वादा किया।

रैली में मोदी ने कहा कि आपको भाजपा-एनडीए की जीत का झंडा पूरी ताकत से लहराना चाहिए। 4 मई को बंगाल में भी भाजपा की जीत का जश्न मनाया जाएगा, मिठाइयाँ बाँटी जाएँगी और झालमुरी भी बांटी जाएगी। झालमुरी ने कुछ लोगों को करारा झटका भी दिया है। मैंने झालमुरी खाई, लेकिन उसका तीखापन टीएमसी को लगा। यह टिप्पणी 19 अप्रैल को झाड़ग्राम में उनके द्वारा साझा किए गए एक हल्के-फुल्के पल की ओर इशारा करती है, जहाँ उन्होंने चुनावी रैलियों की एक श्रृंखला के बाद झालमुरी खाई थी।

पीएम मोदी ने कहा, मैं कह सकता हूं कि पिछले 50 वर्षों में यह पहला ऐसा चुनाव है जिसमें हिंसा बिल्कुल न्यूनतम स्तर पर है। उन्होंने कहा कि पहले तो हर हफ्ते किसी को फांसी पर लटका देना और उसे आत्महत्या बता देना आम बात थी। यहां अराजकता और गुंडागर्दी का राज था। मैं चुनाव आयोग को हार्दिक बधाई देता हूं, उन्होंने एक बार फिर बंगाल की धरती पर लोकतंत्र की गरिमा स्थापित की है। पीएम मोदी ने आगे कहा, मैं यहां के सरकारी कर्मचारियों की भी सराहना करता हूं। मुझे अब तक मिली जानकारी के आधार पर, मतदान पिछले सभी रिकार्ड तोड़ रहा है। उन्होंने कहा कि कृष्णानगर में आज भय पर भरोसे की विजय का विश्वास दिख रहा है। बरसों से जिनकी आवाज को दबाकर रखा गया था, वो अब एक सुर में बोल रहे हैं।

पीएम मोदी ने कहा कि यह चुनाव हम नहीं लड़ रहे हैं,

इस बार बंगाल में चुनाव खुद यहां की जनता लड़ रही है। उन्होंने कहा, %यह उत्साह, यह उमंग, यह जोश भरोसे का है। भय जा रहा है, भरोसा आगे बढ़ रहा है।% उन्होंने कहा कि गांव-गांव, गली-गली, स्त्री-पुरुष, युवा-बुजुर्ग सब एक साथ बोल रहे हैं और बदलाव चाहते हैं।

मोदी ने पश्चिम बंगाल में वामपंथ के पतन पर टिप्पणी करते हुए टीएमसी के मौजूदा विरोध का जिक्र करते हुए कहा कि पंद्रह साल पहले लोग कम्युनिस्टों के खिलाफ थे। आज वे टीएमसी के जंगल राज के खिलाफ खड़े हैं। उत्पीड़कों और भ्रष्ट लोगों को जवाबदेह ठहराया जाएगा। आप हमारा नारा जानते हैं, 'सबका साथ, सबका विकास'। लेकिन टीएमसी 'घुसपैठियों का साथ, घुसपैठियों का विकास' में विश्वास करती है। वे उन्हें पनाह देते हैं। 4 मई के बाद पश्चिम बंगाल में सुशासन की एक नई गारंटी शुरू होगी।

उन्होंने आगे आश्वासन देते हुए कहा कि मैं यह आश्वासन देने आया हूं कि मतुआ समुदाय, नामाशूद्र समुदाय और शरणार्थी परिवारों को टीएमसी से डरने की जरूरत नहीं है। कोई भी आपको नुकसान नहीं पहुंचा पाएगा। जो भी भारत में शरण और सम्मान की तलाश में आया है, मोदी उनके साथ खड़े हैं। सरकार बनने के बाद, सीएए के तहत नागरिकता देने की प्रक्रिया में तेजी लाई जाएगी। आपको वे सभी अधिकार और लाभ मिलेंगे जिनके प्रत्येक भारतीय नागरिक हकदार हैं। यह मोदी का आश्वासन है।

महिला आरक्षण बिल पर भाजपा का बड़ा बयान

पीएम मोदी का विरोध कर विपक्ष बना महिला विरोधी

नईदिल्ली। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने गुरुवार को विपक्षी दलों पर तीखा राजनीतिक हमला करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति उनका प्रतिरोध तेजी से महिलाओं के विरोध के रूप में देखा जा रहा है, या जिसे उन्होंने आधी आबादी कहा। नितिन नबीन ने कहा कि मोदी जी ने आधी आबादी को, देश की माताओं-बहनों को सुरक्षा, सम्मान, स्वाभिमान देने का काम किया, और अब महिला आरक्षण संशोधन विधेयक के जरिए उनकी हिस्सेदारी की बात की। महिला आरक्षण एक बड़ा मौका था- हमारी माताओं-बहनों को हिस्सेदारी देने का।

नबीन ने आगे कहा कि लेकिन हमें दुख है कि विपक्ष के विरोध के कारण ये हिस्सेदारी उन्हें नहीं मिल सकी। लेकिन ये तय है कि भाजपा ने जब भी संकल्प किया है और मोदी जी की यूएसपी भी रही है कि उन्होंने हमेशा अपने संकल्प को पूरा किया है। हम सब की इच्छा थी कि 2029 लोकसभा चुनाव के पहले महिलाओं को एक बड़ी हिस्सेदारी में जोड़ पाए। लेकिन दुर्भाग्य है कि मोदी जी का विरोध करते करते विपक्षी दल देश की आधी आबादी, माताओं-बहनों के विरोध में खड़े हो गए।

नितिन नबीन ने कहा कि जहां तक साउथ की बात है तो वहां के लोगों के हक मारने का काम भी कांग्रेस-डीएमके ने किया। पूरे साउथ को परेशानी में डालने का काम अगर किसी ने किया है तो राहुल गांधी ने किया है। उन्होंने कहा कि बांग्लादेशी घुसपैठियों को मतदाता सूची में शामिल नहीं किया जाएगा। हम भारत के नागरिकों के साथ खड़े हैं, विदेशी घुसपैठियों के साथ नहीं। चुनाव आयोग ने एसआईआर के लिए चार महीने का पर्याप्त समय दिया था। यदि कोई गड़बड़ी थी, तो उसे तब उठाया जाना चाहिए था, लेकिन वे केवल प्रक्रिया को बाधित करना चाहते थे।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि सभी राज्यों में भाजपा की स्थिति काफी अच्छी है। असम, पुडुचेरी में निश्चित रूप से हमारी सरकारें रिपीट करने जा रही है। पश्चिम बंगाल में आश्चर्यजनक रिजल्ट सामने आएंगे। इस बार यहां पूर्ण रूप से भाजपा सरकार बनाने जा रही है। उन्होंने कहा कि आज देशभर में महिला वोटर्स भाजपा के साथ आ रही हैं। बंगाल में ममता बनर्जी मां, माटी, मानुष के नारों के साथ आई, लेकिन इन तीनों के साथ ममता ने सौतेला व्यवहार किया। बंगाल में महिलाओं के साथ टीएमसी के गुंडों ने जिस प्रकार व्यवहार किया, जिस प्रकार से शोषण किया, उससे यहां की सारी महिलाएं भयभीत हैं। इसलिए बंगाल में ममता दीदी के प्रति महिलाओं की कोई सहानुभूति नहीं है। बंगाल की महिलाएं भाजपा के साथ खड़ी हैं।

अमित जोगी को सुप्रीम कोर्ट से मिली राहत

- एनसीपी नेता की हत्या के मामले में सजा और दोषसिद्धि पर लगी रोक

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को पूर्व मुख्यमंत्री अजीत जोगी के बेटे अमित जोगी को बड़ी राहत देते हुए उनकी सजा पर रोक लगा दी। छत्तीसगढ़ हाई कोर्ट ने अमित जोगी को एनसीपी नेता रामअवतार जग्गी की 2003 में हुई हत्या के मामले में आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी, जिस पर अब सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी है।

न्यायमूर्ति विक्रम नाथ, संदीप मेहता और विजय बिश्नोई की पीठ ने अमित जोगी की विशेष अनुमति याचिका पर सुनवाई करते हुए यह आदेश दिया। अमित जोगी ने छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट के फैसले को चुनौती दी थी, जिसमें उन्हें बरी करने वाले ट्रायल कोर्ट के फैसले को पलटते हुए दोषी करार दिया गया था और आत्मसमर्पण करने का निर्देश दिया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मामले की आगे की सुनवाई पूरी होने तक अमित जोगी की सजा पर रोक रहेगी।

यह मामला 4 जून 2003 को रायपुर में हुए एनसीपी नेता और कारोबारी राम अवतार जग्गी की हत्या से जुड़ा है। उस समय छत्तीसगढ़ में अजीत जोगी मुख्यमंत्री थे। राम अवतार जग्गी की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी, जिसे एक बड़ी साजिश का हिस्सा बताया गया। छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट ने हाल ही में अपने फैसले में अमित जोगी को आपराधिक साजिश और हत्या का दोषी ठहराया था। इससे पहले 2007 में ट्रायल कोर्ट ने सबूतों के अभाव में उन्हें बरी कर दिया था, जबकि 28 अन्य आरोपियों को दोषी ठहराते हुए उम्रकैद की सजा सुनाई गई थी।

हाईकोर्ट ने सीबीआई और पीड़ित परिवार की अपीलों पर सुनवाई करते हुए कहा था कि सह-आरोपियों के खिलाफ मौजूद सबूतों को अमित जोगी के मामले में नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। इस मामले की जांच 2004 में सरकार बदलने के बाद केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) को सौंप दी गई थी। गौरतलब है कि नवंबर 2025 में सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई की देरी को माफ करते हुए हाईकोर्ट को मामले की दोबारा सुनवाई करने का निर्देश दिया था। अब इस मामले में आगे की सुनवाई जारी रहेगी।

खेल
प्रमुख समाचार

दिल्ली कैपिटल्स से जल्द जुड़ेंगे मिचेल स्टार्क

नई दिल्ली। तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क को क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) ने प्रतियोगी क्रिकेट खेलने की मंजूरी दे दी है। सीए से मंजूरी मिलने के बाद मिचेल स्टार्क आईपीएल 2026 के लिए दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) का हिस्सा बनने को तैयार हैं। कोहनी और कंधे की दिक्कतों की वजह से अब तक आईपीएल से बाहर रहे स्टार्क जल्द दिल्ली कैपिटल्स से जुड़ सकते हैं। स्टार्क के एक मई को राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ दिल्ली के मैच में खेलने की संभावना है।

स्टार्क को कंधे और कोहनी की दिक्कत एशेज सीरीज के पांच टेस्ट और फिर बिग बैश लीग खेलने के दौरान हुई थी। स्टार्क ने एशेज सीरीज के सभी पांच टेस्ट खेले थे और प्लेयर ऑफ द सीरीज का खिताब जीता था।स्टार्क के आईपीएल से बाहर रहने की आलोचना सोशल मीडिया पर हो रही थी। इसको लेकर कुछ समय पहले उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए अपना पक्ष रखा था।

स्टार्क ने लिखा था, भारतीय मीडिया में और उसके जरिए कुछ लोगों की राय और विचारों के बावजूद, मैं अभी अपने कंधे और कोहनी की चोट का रिहैब और प्रबंधन कर रहा हूं, जिसके बारे में मुझे ऑस्ट्रेलियाई गर्मियों के दौरान पता नहीं था कि वह कितनी गंभीर है। इन लोगों ने आईपीएल में शामिल होने को लेकर कुछ कड़े बयान दिए हैं और खिलाड़ियों के बारे में बहुत गलत राय दी है, उन्हें सच बताकर पेश किया है, और दावा किया है कि वे मेरे शरीर को मुझसे बेहतर जानते हैं।

स्टार्क ने आगे कहा था, मैं मानता हूं कि यह चोट और टाइमिंग दिल्ली टीम के लिए परेशानी वाली है, और मैं इसके लिए और इस सीजन के शुरुआती हिस्से के लिए उपलब्ध नहीं होने के लिए फैंस से माफी मांगता हूं। मैं डीसी से जुड़ने के लिए प्रतिबद्ध हूं, टीम को लगातार अपडेट कर रहा हूं।

आर्थिक/वाणिज्य/विज्ञान/
प्रमुख समाचार

सेंसेक्स 852 अंक लुढ़का निफ्टी 24173 पर बंद

नईदिल्ली। वैश्विक बाजारों से मिलेजुले रुख के बीच भारतीय शेयर बाजार गुरुवार (23 अप्रैल) को लगभग 1 प्रतिशत की गिरावट लेकर बंद हुए। होरमुज़ स्ट्रेट में समुद्री यातायात बाधित होने की खबरों का निवेशकों के सेंटीमेंट्स पर नेगेटिव असर पड़ा। तीस शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 77,983 अंक पर खुला। बुधवार को यह 78,516 पर बंद हुआ था। कारोबार के दौरान यह 77,574 अंक तक फिसल गया था। अंत में 852.49 अंक या 1.09 फीसदी की गिरावट लेकर 77,664 पर बंद हुए। इसी तरह, नैशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी-50 करीब 150 अंक की गिरावट लेकर 24,202 पर खुला। बुधवार को यह 24,378 अंक पर बंद हुआ था। कारोबार के दौरान यह 24,134 अंक के इंट्रा-डे लो तक गया। अंत में 205.05 अंक या 0.84 प्रतिशत गिरकर 24,173 पर बंद हुआ।

अप्रैल में कॉम्पोजिट पीएमआई बढ़कर 58.3 पर

नईदिल्ली। नए वित्त वर्ष की शुरुआत में भारत के प्राइवेट सेक्टर की गतिविधियों में तेजी देखी गई है। एचएसबीसी फ्लैश इंडिया कॉम्पोजिट पीएमआई आउटपुट इंडेक्स अप्रैल में बढ़कर 58.3 पर पहुंच गया, जो मार्च में 57.0 था। यह आंकड़ा एसएंडपी ग्लोबल के डेटा पर आधारित है। यह आंकड़ा बिजनेस गतिविधियों में मजबूत बढ़त को दिखाता है और लंबे समय के औसत से काफी ऊपर बना हुआ है। मार्च में पश्चिम एशिया संघर्ष के कारण आई रुकावट के बाद अब फिर से ग्रोथ में तेजी आई है। आउटपुट और नए ऑर्डर दोनों में बढ़त देखी गई, जिसे क्षमता विस्तार, बेहतर मांग, नए काम के ऑर्डर और टेक्नोलॉजी में निवेश से सपोर्ट मिला। इस तेजी में मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर ने अहम भूमिका निभाई। मैन्युफैक्चरिंग पीएमआई अप्रैल में 55.9 रहा, जो मार्च में 53.9 था।

पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी पर सरकार का बयान

नईदिल्ली। ईरान से जुड़े युद्ध के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतों में तेज उछाल देखने को मिल रहा है। इसी बीच कुछ रिपोर्ट्स में दावा किया गया कि पश्चिम बंगाल समेत कई राज्यों में विधानसभा चुनाव खत्म होने के बाद सरकार पेट्रोल और डीजल की कीमतों में 25 से 28 रुपए प्रति लीटर तक बढ़ोतरी कर सकती है। हालांकि, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने इन दावों को सिरे से खारिज कर दिया है। मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि पेट्रोल और डीजल की कीमत बढ़ाने का कोई प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन नहीं है। मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि इस तरह की खबरें भ्रामक और शरारतपूर्ण हैं, जिनका उद्देश्य लोगों के बीच डर और घबराहट फैलाना है। सरकार के अनुसार, पिछले चार वर्षों में भारत में पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई वृद्धि नहीं की गई है।

एलपीजी पर बड़ा अपडेट, नए कनेक्शन पर लगी ब्रेक!

नईदिल्ली। मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव और गैस सप्लाई में कमी के कारण एक बड़ी खबर सामने आई है। सप्लाई में कमी के चलते देश की सरकारी तेल कंपनियों ने फिलहाल नए एलपीजी (रसोई गैस) कनेक्शन देना फिलहाल रोक दिया है। सूत्रों के मुताबिक यह फैसला पिछले करीब एक महीने से लागू है और इसे दोबारा शुरू करने की कोई तय तारीख अभी घोषित नहीं की गई है। दरअसल, ये फैसला गैस की सप्लाई में कमी के कारण लिया गया है। भारत में हर साल करीब 3.3 करोड़ टन एलपीजी की खपत होती है, जिसमें लगभग 65% गैस आयात की जाती है। इस आयात का बड़ा हिस्सा पश्चिम एशिया से आता है। तेल कंपनियों का कहना है कि उनकी प्राथमिकता फिलहाल मौजूदा उपभोक्ताओं को नियमित रूप से गैस सिलेंडर उपलब्ध कराना है।

तेल की दोहरी मार का सामना करता देश

अजित रानाडे

मार्च में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा परिवारों के बीच किये गये द्विमासिक 'मुद्रास्फीति प्रत्याशा सर्वेक्षण' से पता चलता है कि आम जनता के बीच महंगाई 7.2 प्रतिशत है। यह फरवरी में 3.2 प्रतिशत की आधिकारिक सीपीआइ (उपभोक्ता मूल्य सूचकांक) रीडिंग के दोगुने से भी अधिक है। रिजर्व बैंक का सर्वेक्षण यह भी दिखाता है कि परिवारों को अगले तीन महीनों में कीमतों में 8.5 प्रतिशत और साल भर में 8.8 फीसदी की वृद्धि की उम्मीद है। यह कोई सांख्यिकीय विसंगति नहीं, जिया हुआ अनुभव है। आधिकारिक आंकड़ों और धरातल पर व्याप्त वास्तविकता के बीच का यह अंतर शायद ही कभी राजनीतिक रूप से इतना संवेदनशील रहा हो।

इस बीच भारत तेल की दोहरी मार में फंसा हुआ है। पहला है ईंधन। पश्चिम एशिया संघर्ष के कारण मार्च में कच्चे तेल की कीमत 115 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंचने से परिवहन और बिजली की लागत, तथा लगभग सभी निर्मित वस्तुओं की कीमत बढ़ रही है। रिजर्व बैंक खुद स्वीकार करता है कि यदि पश्चिम एशिया में हमले फिर से शुरू होते हैं, तो इस वर्ष के लिए उसका 85 डॉलर प्रति बैरल का आधारभूत अनुमान आसानी से ध्वस्त हो जायेगा। अमेरिका और ईरान के बीच युद्ध विराम जारी है। पहले दौर की शांति वार्ता सफल नहीं रही और संघर्ष की बहाली तेल की कीमत और मुद्रास्फीति को ऊपर ले जायेगी। दूसरा तेल खाद्य तेल है।

भारत अपने खाद्य तेलों का लगभग 90 प्रतिशत आयात करता है- इंडोनेशिया और मलेशिया से पाम ऑयल, अर्जेंटीना और ब्राजील से सोयाबीन तथा रूस और यूक्रेन से सूरजमुखी तेल। पश्चिम एशिया संकट ने वैश्विक कमोडिटी बाजारों को हिला दिया है

और कच्चे तेल के साथ वनस्पति तेल की कीमतों में भी उछाल ला दिया है। खुदरा खाद्य तेल की कीमत एक सप्ताह में एक से चार रुपये प्रति किलोग्राम तक बढ़ गयी है। मार्च में भारत का पाम ऑयल आयात 19 फीसदी गिरकर तीन महीने के निचले स्तर पर आ गया। इससे आने वाले महीनों में घरेलू उपलब्धता और कम होगी।

व्यापक आर्थिक मोर्चे पर पिछले वित्त वर्ष में डॉलर के मुकाबले रुपया 10 प्रतिशत गिर गया। मार्च में गिरावट तेज थी और विनिमय दर 95 के पार चली गयी। रिजर्व बैंक ने एक नाटकीय कार्रवाई के साथ हस्तक्षेप किया। इसने घरेलू बैंकों की रुपया-डॉलर दर में 'ऑफशोर सट्टेबाजी' में भागीदारी पर लगभग प्रतिबंध लगा दिया है। इसे नॉन-डिलीवरेबल फॉरवर्ड मार्केट कहा जाता है, जो तकनीकी रूप से रिजर्व बैंक के नियामक दायरे से बाहर है और सिंगापुर, लंदन या न्यूयॉर्क में संचालित होता है। करीब 149 बिलियन डॉलर प्रतिदिन का यह ऑफशोर मार्केट गिरते रुपये के खिलाफ हेजिंग का अवसर देता है। ऑनशोर (घरेलू) लोगों के लिए यह भांपने का संकेत भी है कि रुपया किस ओर जायेगा।

रिजर्व बैंक की इस अचानक कार्रवाई से रुपया उछला, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि ईरान में युद्ध जारी रहने पर क्या यह टिक पायेगा। रुपये को संभालने के हस्तक्षेप में मार्च में ही भारत को 30.5 अरब डॉलर के कीमती विदेशी मुद्रा भंडार का नुकसान हुआ है। रिजर्व बैंक ने रुपये की कमजोरी से लाभ कमाने के लिए ऑफशोर-ऑनशोर अंतर का उपयोग करने वाले बैंकों पर गहरी नाराजगी व्यक्त की है। लेकिन कोई भी सतर्क पर्यवेक्षक यह पायेगा कि ऑफशोर एनडीएफ मार्केट केवल एक लक्षण है, बीमारी नहीं। देश की बीमारी तो चालू खाते का वह घाटा है, जो उच्च तेल आयात बिलों के कारण बढ़ गया है। यह दो वर्षों में 26 अरब डॉलर के बाहर जाने और शुद्ध एफडीआइ के शून्य या नकारात्मक होने का नतीजा है। ये हमारी अर्थव्यवस्था की कमजोरियां हैं।

आइएमएफ और विश्व बैंक ने अपनी वसंतकालीन बैठक में वैश्विक विकास अनुमान घटाये हैं। दूसरी तरफ, हमारे यहां रिजर्व बैंक ने रेपो दर को 5.25 प्रतिशत पर रखा है और 2026-27 में मुद्रास्फीति को औसतन 4.6 फीसदी रहने का अनुमान लगाया है। ये सावधानीपूर्वक की गयी गणना से जुड़े अनुमान हैं।

रमेन डेका ने ली रायपुर जिले में विकासखंड स्तरीय समीक्षा बैठक

अधिकारी जनता के बीच जाएं और करें संवाद : राज्यपाल

रायपुर। राज्यपाल श्री रमेन डेका ने रायपुर जिले की विकासखण्ड स्तरीय समीक्षा बैठक ली। राज्यपाल ने कहा कि सभी अधिकारी जनता बीच जाएं और उनसे मिलें। उनके तथा हितग्राहियों से मुलाकात करें एवं उनकी समस्याओं की जानकारी लेकर योजनाओं का फीडबैक लें। उन्होंने कहा कि जमीनी हकीकत जानने का सबसे बेहतर तरीका लोगों से लगातार संवाद है। राज्यपाल ने जिला प्रशासन द्वारा चलाए जा रहे प्रोजेक्ट अजा, प्रोजेक्ट ग्रीन पालना और प्रोजेक्ट रचना की सराहना की।

श्री डेका ने जिले के विभिन्न विकासखण्डों में हो रहे डबरी निर्माण की भी सराहना करते हुए कहा कि हमें बड़े किसानों को इसके लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, इससे रायपुर के जलस्तर में सुधार आएगा और भविष्य में होने वाले संभावित पेयजल की समस्या का सामना करने में सहयोग मिलेगा। उन्होंने अन्य राज्यों के सफल मॉडलों का उल्लेख करते हुए अधिकारियों को व्यवहारिक और प्रभावी उपाय अपनाने की सलाह दी। राज्यपाल ने कहा कि प्रदेश में धान की खेती अधिक होती है, जो पानी की खपत बढ़ाती है, इसलिए बड़े किसानों को अन्य फसलों की ओर भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि रायपुर तेजी से विकसित हो रहा है और आने वाले वर्षों में जल संरक्षण सबसे बड़ी आवश्यकता बन जाएगा। उन्होंने जल जागरूकता, संसाधनों के संरक्षण और उनके सही उपयोग पर विशेष जोर दिया। साथ ही निर्देश दिए कि प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर जल स्रोतों का पूरा रिकॉर्ड रखा जाए, ताकि उसी आधार पर बेहतर योजना और रणनीति बनाई जा सके।

श्री डेका ने कहा कि हमें ग्राम पंचायत स्तर पर छोटी-छोटी डबरी बनानी चाहिए। इस कार्य में समुदाय की भागीदारी अवश्य सुनिश्चित करें और जनप्रतिनिधियों को भी ऐसे कार्यों के

लिए शामिल करें। सभी शासकीय कार्यालयों में रेन वॉटर हार्वेस्टिंग का निर्माण करें और अन्य लोगों को भी प्रोत्साहित करें। उन्होंने जल जागरूकता, संसाधनों के संरक्षण और उनके सही उपयोग पर विशेष जोर दिया। राज्यपाल ने कहा कि वृक्षारोपण को अधिक से अधिक बढ़ावा दें। एम्स, डॉ. भीमराव अंबेडकर हॉस्पिटल एवं स्कूलों में वृक्षारोपण करें। सड़कों के किनारे भी वृक्षारोपण किया जा सकता है, इससे प्रदूषण की रोकथाम में भी मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि विकास की निशानी अधिक से अधिक पेड़ लगाना और हरियाली है।

प्रोजेक्ट हर घर मुनगा की समीक्षा करते हुए राज्यपाल ने कहा कि जैविक और प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों को प्रोत्साहित किया जाए। उन्होंने कहा कि जैविक खेती को बढ़ावा दें, नेचुरल फार्मिंग में वैल्यू एडिशन जरूरी है। हमें विशेष रूप से हाइड्रोपोनिक्स को बढ़ावा देना चाहिए। आने वाला समय में इसकी अच्छी संभावना है। उन्होंने नर्सरी हाइड्रोपोनिक्स विकसित करने का सुझाव दिया। ग्रीन पालना परियोजना की चर्चा के दौरान राज्यपाल ने जानकारी ली कि नवप्रसूता महिलाओं को दिए गए पौधों की निगरानी कैसे होती है। वे जीवित हैं या नहीं। राज्यपाल ने कहा कि पेड़ लगाना हम सभी की जिम्मेदारी है और हर व्यक्ति को कम से कम एक पौधा जरूर लगाना चाहिए। राज्यपाल ने योग के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से आम जनता से कहा कि योग की कक्षाओं तक ही सीमित न रहें बल्कि योग सीखने के बाद नियमित रूप से घर में भी इसका अभ्यास करें।

यातायात व्यवस्था पर राज्यपाल ने कहा कि जिले में भारी वाहनों को नियंत्रित करने की आवश्यकता है। तीव्र गति से ड्राइविंग और हेलमेट के मामले में पहले जागरूकता बढ़ाने और फिर आवश्यक होने पर कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने नशे की बढ़ती समस्या पर चिंता जताते हुए कहा कि सख्ती और जागरूकता के जरिए इसे रोकना जरूरी है। इस अवसर पर राज्यपाल की उपसचिव सुश्री निधि साहू, जिले के प्रशासनिक अधिकारियों सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

रायपुर में जीएसटी अपीलीय अधिकरण की शुरुआत

रायपुर। राजधानी रायपुर में वस्तु एवं सेवा कर अपीलीय अधिकरण (जीएसटीएटी) की रायपुर पीठ ने आधिकारिक रूप से कार्य करना शुरू कर दिया है। इस संबंध में सार्वजनिक सूचना जारी करते हुए सभी हितधारकों, करदाताओं, विभागीय अधिकारियों और अधिकृत प्रतिनिधियों को इसकी जानकारी दी गई है।

जारी सूचना के अनुसार, रायपुर पीठ का अस्थायी कार्यालय नवा रायपुर के अटल नगर स्थित वाणिज्यिक कर-जीएसटी भवन (पूर्व वैट अधिकरण भवन) में संचालित होगा। अब छत्तीसगढ़ राज्य से जुड़े सभी जीएसटी मामलों की अपीलें इसी पीठ में सुनी जाएंगी। बताया जा रहा कि यह पीठ केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अधिनियम 2017 और राज्य जीएसटी कानूनों के तहत आने वाले मामलों की सुनवाई करेगी। साथ ही अब सभी अपील, आवेदन और संबंधित प्रक्रियाएं जीएसटी अपीलीय अधिकरण (प्रक्रिया) नियम, 2025 के तहत रायपुर पीठ में ही दायर की जाएंगी। सुविधा के लिए ई-फाइलिंग की व्यवस्था भी उपलब्ध कराई गई है। संबंधित नियम, एडवाइजरी और आदेश जीएसटीएटी के आधिकारिक पोर्टल पर नोटिस सेक्शन में देखे जा सकते हैं। अपील दाखिल करने में किसी प्रकार की परेशानी होने पर आवेदक टोल-फ्री नंबर 1800-103-4782 पर संपर्क कर सकते हैं या ऑनलाइन शिकायत भी दर्ज कर सकते हैं। सार्वजनिक सूचना के माध्यम से व्यापारियों, करदाताओं और विभागीय अधिकारियों को नई व्यवस्था की जानकारी दी गई है।

सरकार के दो आदेशों से साफ, सरकार अफीम के नशे में चल रही: बैज

आरएसएस के दबाव में 21 अप्रैल के आदेश पर रोक लगाई गई

रायपुर। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि सरकार का बेहद आश्चर्यचकित करने वाला आदेश आया है, पहले सरकार ने 21 अप्रैल को आदेश निकाला था कि शासकीय कर्मचारियों को किसी भी राजनैतिक दल एवं सामाजिक संगठन में भाग लेने पर प्रतिबंध है। लेकिन उसके बाद आदेश 22 अप्रैल को आदेश आया कि 21 अप्रैल का आदेश था उसमें आगामी आदेश तक रोक लगाया जाता है। नये आदेश के बाद आज की तारीख में छत्तीसगढ़ में कोई भी कर्मचारी राजनैतिक दल का सदस्य बन सकता है, सामाजिक संगठन का सदस्य बन सकता है। सरकार का आदेश अपने ही नियम को धता बताने वाला है। इस आदेश से पता चलता है कि या तो सरकार अफीम खाकर चल रही या फिर अनाड़ी लोगों के दबाव में चल रही है।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि सरकार ने 21 अप्रैल के आदेश को क्यों निकाला था, जबकि यह तो स्थापित नियम है शासकीय कर्मचारी

अपने सर्विस रूल के अनुसार किसी भी राजनैतिक एवं गैर राजनीतिक संगठन के कार्यक्रमों में शामिल नहीं हो सकता, इस आदेश को देखकर लग रहा था भाजपा सरकार का एक वर्ग आरएसएस को टारगेट करना चाह रहा था, यह वर्ग सरकार में आरएसएस के हस्तक्षेप से नाराज है, इसीलिए यह आदेश निकाला गया।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि सरकार का नया आदेश आरएसएस के नाराज होने के बाद यह आदेश निकाला गया है कि इस आदेश में पुराने नियमों की धज्जियां उड़ाई गई है क्योंकि प्रतिबंध लगायेंगे तो आरएसएस गतिविधियों में शासकीय कर्मचारी नहीं जा पायेंगे। 21 तारीख को जो आदेश था उसमें सबसे ज्यादा प्रभावित तो आरएसएस होने वाली थी। भाजपा की सरकार दबाव डालकर लालच देकर कर्मचारियों को आरएसएस के कार्यक्रमों में भेजती थी, 21 अप्रैल के आदेश से इसमें स्वमेव रोक लग गयी थी।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि आरएसएस विध्वंसक गतिविधियों के लिए पहले भी अनेकों बार प्रतिबंध लगाया जा चुका है। देश के पहले गृहमंत्री सरदार पटेल ने आरएसएस पर प्रतिबंध लगाया था, अनेकों राज्य सरकार ने आरएसएस की गतिविधियों को देश के लिए घातक माना था, ऐसे में आरएसएस में शासकीय कर्मचारियों को छूट तो कदापि भी नहीं देना चाहिए।

31 मई तक पूरी हो नाला-नालियों और ड्रेनेज की सफाई : अरुण साव

■ बरसात से पहले नगरीय प्रशासन विभाग अलर्ट: जलभराव रोकने और बाढ़ प्रबंधन की व्यापक तैयारी के निर्देश

रायपुर। नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग ने बरसात से पहले नगरीय निकायों में नाले-नालियों की सफाई तथा बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। विभाग ने संचालनालय से परिपत्र जारी कर सभी निकायों को जलभराव रोकने, बाढ़ की स्थिति में आपदा प्रबंधन की तैयारी और बरसात में संक्रामक बीमारियों से बचाव के लिए जरूरी कार्रवाई करने को कहा है।

उप मुख्यमंत्री व नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री अरुण साव ने विगत 20-21 अप्रैल को नगर निगमों, नगर पालिकाओं एवं नगर पंचायतों के कार्यों की समीक्षा के दौरान आगामी 31 मई तक बड़े नाला-नालियों और ड्रेनेज की सफाई के काम पूर्ण करने के साथ ही बरसात में जल भराव रोकने जरूरी उपाय करने के निर्देश दिए थे। बैठक में उन्होंने कहा कि जून के पहले सप्ताह में राज्य स्तरीय टीम निकायों में इसका भौतिक निरीक्षण करेंगी। कार्य संतोषजनक नहीं मिलने पर स्वास्थ्य अधिकारी और इंजीनियर पर कार्रवाई की जाएगी।

नगरीय प्रशासन विभाग ने सभी नगर निगमों के आयुक्तों तथा नगर पालिकाओं एवं नगर पंचायतों के

मुख्य नगर पालिका अधिकारियों को जारी परिपत्र में कहा है कि वर्षा ऋतु में बारिश के पानी के निकासी के लिए निर्मित नालियों की समय पूर्व समुचित सफाई न होने तथा पानी निकासी के रास्तों के अवरोधों को दूर नहीं करने के कारण आकस्मिक वर्षा से बाढ़ की स्थिति निर्मित हो जाती है। इन स्थितियों से बचाव के लिए वर्षा ऋतु के पहले सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कर लेवें।

विभाग ने इसके लिए शहरों के मुख्य मार्गों के साथ-साथ गलियों व चौराहों की अच्छी साफ-सफाई कराने के निर्देश दिए हैं। विभाग ने सभी नाले व नालियों की पूर्ण एवं नियमित रूप से अंतिम छोर तक गहराई से साफ-सफाई कराने के साथ ही यह भी सुनिश्चित करने को कहा कि नदी या अन्य जलस्रोत किसी भी प्रकार से प्रदूषित न हों। पानी के बहाव में निरंतरता के लिए निर्माणाधीन नाले व नालियों में पानी बहाव के रास्ते में से निर्माण सामग्रियों को हटाने तथा नाले-नालियों में निर्मित कच्चे एवं पक्के अतिक्रमित अवरोधों को हटाने के भी निर्देश दिए गए हैं।

नगरीय प्रशासन विभाग ने बरसात के पहले बाढ़ नियंत्रण कक्ष स्थापित कर आवश्यक अमले, टूल, मशीन आदि के साथ नोडल अधिकारी की नियुक्ति करने को कहा है। विभाग ने बाढ़ नियंत्रण कक्षों के 24 घंटे कार्यरत रहना सुनिश्चित करने के साथ ही इसके दूरभाष नम्बर आदि का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के भी निर्देश दिए हैं। निचली बस्तियों, बाढ़ संभावित क्षेत्रों व प्रभावितों का चिन्हांकन कर प्रभावितों के लिए सुरक्षित स्थलों को भी चिन्हित करने के निर्देश दिए गए हैं।

विभाग ने बाढ़ की स्थिति में प्रभावित क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करने को कहा है। अन्य क्षेत्रों में भी बाढ़ के दौरान एवं बाढ़ के प्रभाव के समाप्त होने पर संक्रामक बीमारियों की आशंका बनी रहती है। इन स्थितियों में संबंधित विभागों को तत्परता से इसकी सूचना देने को कहा गया है। विभाग ने वर्षा ऋतु के पहले पेड़ों में लगे सभी साइन-बोर्डों, विज्ञापनों, किसी भी प्रकार के अन्य बोर्ड या साइनेज, बिजली वायर, हाईटेंशन लाइन या अन्य सामग्रियों को हटाने के निर्देश सभी निकायों को दिए हैं।

छत्तीसगढ़/राजधानी

प्रमुख समाचार

धनेशपुर में दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष शिविर

रायपुर। राज्यपाल श्री रमेन डेका ने बलरामपुर जिले के कुसमी विकासखंड अंतर्गत ग्राम धनेशपुर में दिव्यांग बच्चों के लिए स्वास्थ्य शिविर लगाने के निर्देश दिए हैं। शिविर समाज कल्याण विभाग एवं स्वास्थ्य विभाग संयुक्त रूप से आयोजित कर जरूरतमंद दिव्यांगजनों का उपचार कर आवश्यक उपकरण प्रदान करें। राज्यपाल ने कहा है कि दोनों विभाग आपसी समन्वय से ग्राम धनेशपुर में विशेष शिविर आयोजित करें, जहां दिव्यांग बच्चों की स्वास्थ्य जांच, आवश्यक परीक्षण तथा उनकी स्थिति का आंकलन किया जाए। साथ ही दिव्यांगता के संभावित कारणों का पता लगाने के लिए विस्तृत सर्वे एवं चिकित्सकीय अध्ययन भी कराया जाए। निर्देशानुसार समाज कल्याण विभाग और स्वास्थ्य विभाग की संयुक्त टीम गांव पहुंचकर घर-घर सर्वे करेगी तथा पात्र बच्चों और नागरिकों को दिव्यांगता प्रमाण पत्र एवं दिव्यांग कार्ड बनाने की प्रक्रिया भी सुनिश्चित करेगी। शिविर के माध्यम से जरूरतमंद बच्चों को सहायक उपकरणों का वितरण भी किया जाएगा, ताकि उन्हें दैनिक जीवन, शिक्षा और आवागमन में सुविधा मिल सके।

घर में काम करने वाली नौकरानी निकली चोर

रायपुर। राजधानी रायपुर के न्यू राजेन्द्र नगर इलाके में घर में काम करने वाली नौकरानी द्वारा लाखों रुपये की चोरी का मामला सामने आया है। पुलिस ने आरोपी नौकरानी प्रिया ढीढी (19) को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से 2.50 लाख रुपये नगद और चोरी किया गया लॉकर बरामद कर लिया है। मामला देवपुरी स्थित डॉल्फिन ज्वेल क्षेत्र का है, जहां प्रार्थी देवाशीष गुरु के घर में प्रिया ढीढी फरवरी 2026 से काम कर रही थी। 21 अप्रैल की शाम घर के सदस्य बाहर गए हुए थे और उस दौरान नौकरानी घर में अकेली थी। इसी बीच उसने बेडरूम की अलमारी से लॉकर सहित 2.50 लाख रुपये चोरी कर फरार हो गई। घटना की जानकारी मिलने पर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट और न्यू राजेन्द्र नगर पुलिस की संयुक्त टीम ने सीसीटीवी फुटेज खंगाले, जिसमें आरोपी लॉकर ले जाते हुए दिखाई दी। तकनीकी विश्लेषण और मुखबिर की सूचना के आधार पर पुलिस ने आरोपी को दबोच लिया। पूछताछ में उसने चोरी की वारदात कबूल कर ली। आरोपी ने बताया कि वह लॉकर खोल नहीं पाई थी। फिलहाल पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

ऑनलाइन रिफंड के नाम पर साइबर ठगी, आरोपी गिरफ्तार

रायपुर। मोबाइल कवर के रिफंड के नाम पर ऑनलाइन ठगी करने वाले एक आरोपी को खमतराई पुलिस ने साइबर सेल की मदद से पश्चिम बंगाल से गिरफ्तार किया है। आरोपी ने झांसा देकर प्रार्थी से अलग-अलग खातों में कुल 1,35,825 रुपये ट्रांसफर करा लिए थे। पुलिस के अनुसार, रामेश्वर नगर भनपुरी निवासी ज्ञानप्रकाश श्रीवास्तव ने शिकायत दर्ज कराई थी कि 2 फरवरी 2026 को उन्हें एक कॉल आया, जिसमें मोबाइल कवर का रिफंड दिलाने का झांसा दिया गया। इसके बाद आरोपी ने यूपीआई के जरिए अलग-अलग बैंक खातों में रकम ट्रांसफर कराकर ठगी को अंजाम दिया। मामले की जांच के दौरान पुलिस ने बैंक ट्रांजेक्शन डिटेल्स और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर आरोपी की पहचान की। आरोपी शशांक बैद्य (29) पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले का निवासी है। खमतराई पुलिस और एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट की संयुक्त टीम ने स्थानीय पुलिस की मदद से आरोपी के ठिकाने पर दबिश देकर उसे गिरफ्तार किया। उसके खिलाफ भारतीय न्याय संहिता और आईटी एक्ट की संबंधित धाराओं में मामला दर्ज किया गया है।

शातिर चोर निकला बीटेक डिग्रीधारी, 13 बाइक बरामद

रायपुर। राजधानी में दोपहिया वाहन चोरी की घटनाओं पर बड़ी कार्रवाई करते हुए पुलिस ने एक शातिर चोर को गिरफ्तार किया है। खास बात यह है कि आरोपी बीटेक डिग्रीधारी है और शहर के अलग-अलग इलाकों से एक दर्जन से अधिक बाइक चोरी कर चुका था। पुलिस के मुताबिक आरोपी राहुल वर्मा (33) को एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट की विशेष टीम ने गिरफ्तार किया है। उसके कब्जे से चोरी की कुल 13 दोपहिया वाहन बरामद किए गए हैं, जिनकी कीमत करीब 5.50 लाख रुपये बताई जा रही है। जांच में सामने आया है कि आरोपी के खिलाफ सिविल लाइन, पंडरी, सरस्वती नगर, कोतवाली, डीडी नगर, देवेंद्र नगर, मौदहापारा और पुरानी बस्ती थानों में पहले से ही 11 मामलों में अपराध दर्ज हैं। पूछताछ में आरोपी ने शहर के अलग-अलग स्थानों से वाहन चोरी करना स्वीकार किया है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार, आरोपी पहले भी वर्ष 2023 में 40 से अधिक वाहन चोरी के मामलों में जेल जा चुका है। उसकी गतिविधियों पर नजर रखते हुए विशेष टीम ने तकनीकी साक्ष्य और मुखबिर की सूचना के आधार पर उसे पकड़ा। फिलहाल पुलिस आरोपी से पूछताछ कर अन्य मामलों की जानकारी जुटा रही है और यह पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है कि इस गिरोह में और कौन-कौन शामिल हैं।

मिडनाइट एक्शन में रायपुर पुलिस का शिकंजा

रायपुर। राजधानी में अपराधियों के खिलाफ पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए देर रात सघन कॉम्बिंग गश्त अभियान चलाया। रायपुर पुलिस कमिश्नरेट के मध्य ज़ोन में हुए इस मिडनाइट ऑपरेशन से बदमाशों में हड़कंप मच गया। 22-23 अप्रैल की दरम्यानी रात चलाए गए इस अभियान का नेतृत्व डीसीपी सेंट्रल ज़ोन उमेश प्रसाद गुप्ता ने किया। उनके साथ एडिशनल डीसीपी तारकेश्वर पटेल, एसीपी दीपक मिश्रा और एसीपी रमाकांत सहित बड़ी संख्या में पुलिस बल मौजूद रहा। करीब 150 जवानों की 10 टीमों ने मिलकर पूरे मध्य ज़ोन में कार्रवाई को अंजाम दिया। अभियान के दौरान पुलिस ने 11 स्थायी वारंट और 9 गिरफ्तारी वारंट तामील करते हुए कुल 20 वारंटियों को गिरफ्तार किया। इसके अलावा 32 संदिग्धों पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई की गई। मादक पदार्थों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए एनडीपीएस एक्ट के तहत 2 मामले दर्ज किए गए, जबकि एक आरोपी पर आर्म्स एक्ट के तहत केस दर्ज हुआ। पुलिस ने अभियान के दौरान 70 हिस्ट्रीशीटर और करीब 85 पुराने चोरों व चाकूबाजों के घरों पर एक साथ दबिश देकर सरप्राइज चेकिंग की। इससे अपराधियों में खौफ का माहौल बन गया। संवेदनशील इलाकों को चिन्हित कर पुलिस ने कॉर्डन एंड सर्च ऑपरेशन चलाया। ड्रोन कैमरों की मदद से निगरानी रखी गई, जबकि संभावित रास्तों पर नाके लगाकर वाहनों की सघन जांच की गई।

मनी लॉन्ड्रिंग केस में ईडी ने अटैच की है करोड़ों की संपत्ति

आईएएस रानू साहू के रिश्तेदारों की सभी याचिकाएं खारिज

बिलासपुर। हाईकोर्ट ने कोरबा के पूर्व व निलंबित कलेक्टर आईएएस रानू साहू के रिश्तेदारों की करोड़ों की संपत्ति अटैच किए जाने के खिलाफ पेश सभी याचिका को खारिज कर दिया है। मामले में चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा एवं जस्टिस रविन्द्र कुमार अग्रवाल की डीबी में सुनवाई हुई।

बता दें कि कोल लेवी वसूली व मनी लांड्रिंग के मामले में ईडी ने रानू साहू के रिश्तेदार तुषार साहू, रानू साहू, कजिन पंकज कुमार साहू, पीयूष कुमार साहू, रानू साहू के भाई पूनम साहू, रानू साहू की बहन, अरुण कुमार साहू रानू साहू के पिता और लक्ष्मी साहू रानू साहू

की मां, सहलिनी साहू पीयूष कुमार साहू की पत्नी और रेवती साहू रानू साहू की आंटी की सम्पत्ति अटैच किया है। इस कार्रवाई के खिलाफ सभी ने अलग-अलग याचिका पेश की थी। याचिका में कहा गया है कि ईडी ने रानू साहू के कोरबा कलेक्टर रहने से पूर्व में खरीदी गई संपत्ति को अटैच किया है। अपीलेट ट्रिब्यूनल से अपील खारिज किया गया है, जो गलत है। इसके अलावा एफआईआर में उनका नाम नहीं है। अटैच प्रॉपर्टी को मुक्त कराने की मांग की गई।

मामले में चीफ जस्टिस की डीबी ने सुनवाई के बाद अपने आदेश में कहा, जुर्म से पहले खरीदी गई प्रॉपर्टी पीएमएलए के तहत अपने आप अटैचमेंट से सुरक्षित नहीं होती है। सेक्शन 2(1)(u) के तहत जुर्म से हुई कमाई की परिभाषा में न सिर्फ़ खराब प्रॉपर्टी शामिल है, बल्कि उसकी बराबर कीमत भी शामिल है, जो एक बड़े कानूनी इरादे को दिखाता है। जहां असली कमाई मौजूद नहीं है या उसका पता नहीं चल पा रहा है, वहां अधिकारी उतनी ही कीमत की दूसरी प्रॉपर्टी अटैच कर सकते हैं, भले ही वे पहले कानूनी तौर पर खरीदी या हासिल की गई हों।

ऐसी अटैचमेंट का मकसद अपराधियों को जुर्म से होने वाले आर्थिक फ़ायदों को अपने पास रखने से रोकना है। एनफोर्समेंट अथॉरिटी के लिए यह जरूरी नहीं है कि वह सीधे सबूतों से यह साबित करे कि जिस प्रॉपर्टी की बात हो रही है, वह क्राइम से हुई कमाई है। मनी लॉन्ड्रिंग के मामले में काम करने का तरीका अक्सर घुमावदार और साफ न दिखने वाले फाइनेंशियल ट्रांजैक्शन से जुड़ा होता है, जिससे सीधे सबूत मिलना मुश्किल हो जाता है। इसके साथ कोर्ट ने सभी याचिका को खारिज कर दिया है।

छत्तीसगढ़ से दौड़ेंगी 18 समर स्पेशल ट्रेन

रायपुर। भारतीय रेलवे ने गर्मी की छुट्टियों में यात्रियों की बढ़ती संख्या और मांग को देखते हुए देशभर में विशेष ट्रेनें दौड़ा रहा है। इस क्रम में 15 अप्रैल 2026 से 15 जुलाई 2026 तक कुल 908 समर स्पेशल ट्रेनों को मंजूरी दी है। इस अवधि में ये ट्रेनें कुल 18,262 फेरे चलेंगी। यह पहल गर्मियों के चरम समय में यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को नियंत्रित करने और प्रतीक्षा सूची को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है ।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे से कुल 18 ग्रीष्मकालीन विशेष ट्रेनों को मंजूरी दी गई है, जो यात्रियों की बढ़ी हुई मांग को पूरा करने के लिए 88 ट्रिप संचालित करेंगी । इनमें से 13 विशेष ट्रेनों का परिचालन प्रारंभ किया जा चुका है, जबकि शेष 75 ट्रिप आगामी दिनों में चरणबद्ध तरीके से संचालित किए जाएंगे । इन विशेष ट्रेनों का संचालन विभिन्न प्रमुख गंतव्यों के बीच किया जाएगा, जिससे लंबी दूरी के यात्रियों को विशेष लाभ मिलेगा ।

इसी कड़ी में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा भी यात्रियों की सुविधा हेतु विशेष प्रबंध किए गए हैं । क्षेत्र के प्रमुख एवं व्यस्त स्टेशनों जैसे बिलासपुर, रायपुर, दुर्ग, गोंदिया, इतवारी, रायगढ़ एवं शहडोल सहित अन्य महत्वपूर्ण स्टेशनों पर यात्री सुविधाओं को सुदृढ़ किया गया है। इनमें प्लेटफॉर्म प्रबंधन, अतिरिक्त टिकट काउंटर, पेयजल व्यवस्था, प्रतीक्षालयों में सुधार, स्वच्छता व्यवस्था एवं सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक मजबूत किया गया है, ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

ग्रीष्मकालीन विशेष ट्रेनों की बढ़ी हुई उपलब्धता से यात्रियों को कई प्रकार की सुविधाएं प्राप्त होंगी। इससे न केवल ट्रेनों में भीड़भाड़ कम होगी, बल्कि प्रतीक्षा सूची में भी उल्लेखनीय कमी आएगी। साथ ही, यात्रियों को समय पर आरक्षण मिलने से उनकी यात्रा अधिक सुविधाजनक एवं तनावमुक्त होगी। यह व्यवस्था विशेष रूप से उन लाखों यात्रियों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी, जो गर्मी के मौसम में अपने गंतव्य तक यात्रा करते हैं ।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे यात्रियों से अपील करता है कि वे यात्रा के दौरान रेलवे द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करें तथा अधिकृत माध्यमों से ही टिकट आरक्षित करें। रेलवे प्रशासन यात्रियों को बेहतर, सुरक्षित एवं आरामदायक यात्रा अनुभव प्रदान करने हेतु निरंतर प्रयासरत है।

आर.एन.आई.रजि. क्र. CHHHIN/2021/80529, स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक- शशांक शर्मा द्वारा मिशन मीडिया प्रा. लि., प्रेस कॉम्प्लेक्स, रजबंधा मैदान, रायपुर (छ.ग.) 492001 से मुद्रित एवं 29/1110, सेवती स्मृति, आजाद चौक, रायपुर (छ.ग.) 492001 से प्रकाशित। संपादक-शशांक शर्मा, मो. 94255-20531.